अक्तूबर - दिसंबर 2018 भाग XXIX संख्या 3 ISSN 0971 - 1856

भारतीय नारियल पत्रिका

स्थायी आमदनी के लिए नारियल आधारित खेती प्रणाली

जैविक नारियल की संभावनाएं

नारियल प्रौद्योगिकी मिशन नारियल के मूल्य वर्धन में गति लाने के लिए

खुशहाल और समृद्ध नव वर्ष की शुभकामनाएं

भारतीय
नारियल
पत्रिका

भाग XXIX संख्या : 3

अक्तूबर - दिसंबर 2018 कोची-11

परामर्श मंडल :

अध्यक्ष

डा.राजु नारायणा स्वामी भा.प्र.से.

सदस्य

डा.बी.एन.एस.मूर्ति

संजीव कुमार सिंह

डा.वेंकटेश एन.हुब्बल्ली

संपादक मंडल

सदस्य

आर. मधु

डा.अल्का गुप्ता

मुख्य संपादक

सरदिंदु दास

संपादक

एस. बीना

उप संपादक

संगीता टी.एस.

संपादन सहयोगी

बिन्दु रानी एन.

डा. सूर्या प्रत्यूष

प्रकाशक :

नारियल विकास बोर्ड

(कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय, कृषि, सहकारिता एवं किसान कल्याण विभाग, भारत सरकार)

केरा भवन, कोची - 682 011, भारत

दू. भा. : 0484-2376265, 2377266, 2377267, 2376553.

फैक्स : 91-484-2377902 ग्राम्स : KERABOARD

ई-मेल : kochi.cdb@gov.in, cdbkochi@gmail.com

वेबसाइट : www.coconutboard.gov.in

नारियल कृषि एवं उद्योग के विभिन्न पहलुओं पर आधारित लेख, शोध निबन्ध और पत्र इस पत्रिका में प्रकाशन हेतु आमंत्रित किये जाते हैं। सभी स्वीकृत सामग्रियों को मानदेय दिया जाएगा। इस पत्रिका में प्रकाशित लेखों में प्रकट किए गए विचार लेखकों के अपने हैं और बोर्ड उनके लिए उत्तरदायी नहीं है। शुल्क और पत्र अध्यक्ष, नारियल विकास बोर्ड, केरा भवन, कोची - 682 011 के नाम पर भेज दें।

नारियल विकास बोर्ड

भारत सरकार ने देश में नारियल खेती एवं उद्योग के समन्वित विकास के लिए स्वायत्त निकाय के रूप में नारियल विकास बोर्ड की स्थापना की। बोर्ड, जो 1981 जनवरी 12 को अस्तित्व में आया, भारत सरकार के कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के प्रशासनिक नियंत्रण में कार्यरत है। इसका मुख्यालय केरल के कोची में है और क्षेत्रीय कार्यालय कर्नाटक के बेंगलूर, तमिलनाडु के चेन्नई, असम के गुवाहटी और बिहार के पटना में हैं। बोर्ड के पाँच: राज्य केन्द्र भी हैं और ये ओड़िशा के भुबनेश्वर, पश्चिम बंगाल के कोलकात्ता, आँध्र प्रदेश के विजयवाड़ा, महाराष्ट्र के ठाणे एवं संघशासित क्षेत्र अंडमान व निकोबार द्वीप समूह के पोर्ट ब्लेयर में स्थित हैं। बोर्ड के प्रदर्शन सह बीज उत्पादन फार्म नेर्यमंगलम (केरल), वेगिवाड़ा (आँध्र प्रदेश), कोंडागाँव (छत्तीसगढ़), मधेपुरा (बिहार), अभयपुरी (असम), पित्तापल्ली (ओड़िशा), मंड्या (कर्नाटक), पालघर (महाराष्ट्र) धली (तमिलनाडु) तथा साउथ हिच्चाचेरा (त्रिपुरा) में हैं। केरल के आलुवा के पास वाष़क्कुलम में बोर्ड ने प्रौद्योगिकी विकास केन्द्र की स्थापना की है।

बोर्ड के मुख्य प्रकार्य

❑ नारियल उद्योग के विकास हेतु उपाय अपनाना। ❑ नारियल एवं उसके उत्पादों का विपणन सुधारने हेतु उपायों की सिफारिश करना। ❑ नारियल खेती एवं उद्योग में लगे लोगों को तकनीकी सलाह देना। ❑ नारियल खेती के अधीन क्षेत्र विस्तार के लिए वित्तीय एवं अन्य सहायता देना। ❑ नारियल एवं उसके उत्पादों के संसाधन के लिए आधुनिक प्रौद्योगिकियाँ अपनाने को प्रोत्साहित करना। ❑ नारियल एवं उसके उत्पादों को प्रोत्साहन मूलक भाव मिलने हेतु उपाय अपनाना। ❑ नारियल एवं उसके उत्पादों के आयात और निर्यात नियंत्रित करने हेतु उपायों की सिफारिश करना। ❑ नारियल एवं उसके उत्पादों के लिए श्रेणी, विनिर्देश एवं मानक निर्धारित करना। ❑ नारियल का उत्पादन बढ़ाने के लिए उपयुक्त योजनाओं को आर्थिक सहायता देना। ❑ नारियल एवं उसके उत्पादों के कृषि, प्रौद्योगिकीय, औद्योगिक या आर्थिक अनुसंधानों को सहायता देना, प्रोत्साहन देना, बढ़ावा देना एवं आर्थिक सहायता देना। ❑ केन्द्रीय सरकार तथा बड़े पैमाने में नारियल की खेती वाले राज्यों की सरकारों से विचार विमर्श करके नारियल का उत्पादन बढ़ाने, प्रजातीय गुणवत्ता और उपज सुधारने के लिए उपयुक्त योजनाओं को वित्तीय सहायता देना तथा इसी उद्देश्य के लिए नारियल कृषकों और नारियल उत्पादों के विनिर्माताओं को पुरस्कार और प्रोत्साहन राशि प्रदान करने के लिए योजनाएं बनाना और नारियल एवं नारियल उत्पादों के विपणन के लिए सुविधाएं उपलब्ध कराना। ❑ नारियल एवं उसके उत्पादों के उत्पादन, प्रसंस्करण और विपणन संबंधी आँकड़े एकत्रित करना एवं उन्हें प्रकाशित करना। ❑ नारियल एवं उसके उत्पादों से संबंधित प्रचार कार्य करना एवं पुस्तकें व पत्रिकाएं प्रकाशित करना।

बोर्ड द्वारा 'भारत में नारियल उद्योग के एकीकृत विकास' परियोजना के अधीन कार्यान्वित विकास कार्यक्रम हैं: रोपण सामग्रियों का उत्पादन व विपणन, नारियल के अधीन क्षेत्र विस्तार, उत्पादकता सुधारने के लिए एकीकृत खेती, प्रौद्योगिकी निदर्शन, बाज़ार संवर्धन और सूचना व सूचना प्रौद्योगिकी।

नारियल प्रौद्योगिकी मिशन के अधीन बोर्ड द्वारा कार्यान्वित कार्यक्रम हैं प्राणी कीटों व रोगों से ग्रस्त नारियल बागानों के प्रबंधन के लिए प्रौद्योगिकियों का विकास, निदर्शन तथा अंगीकरण, प्रसंस्करण, उत्पाद विविधीकरण, बाज़ार अनुसंधान व संवर्धन के लिए प्रौद्योगिकियों का विकास और अंगीकरण।

शुल्क

वार्षिक	40 रु.
एक प्रति	10 रु.
आजीवन (30 वर्ष)	1000 रु.

नारियल विकास बोर्ड द्वारा प्रकाशित तथा सर्वश्री पाइको प्रिंटिंग प्रेस, कोची-18 में मुद्रित

इस अंक में

स्थायी आमदनी के लिए नारियल आधारित खेती प्रणाली 4

एच.पी.महेश्वरप्पा, पी.सुब्रमणियन और पी.चौडप्पा

नारियल तेल के स्वास्थ्य लाभ 8

के.बी.हेब्बार और एम.अरिवलगन

जैविक नारियल की संभावनाएं 14

पी.सुब्रमणियन, वी.कृष्णकुमार, अल्का गुप्ता, मुरली गोपाल, आर.सुरेखा और पी.चौडप्पा

नारियल प्रौद्योगिकी मिशन नारियल के मूल्य वर्धन में गति लाने के लिए 23

सरदार सिंह चोयल

नारियल बागों में मासिक कार्य 30

समाचार 39

बाज़ार समीक्षा 60

बाज़ार रिपोर्ट....................................... 63

अध्यक्ष की कलम से.........

प्रिय मित्रों,

हम इस साल के आखिरी महीने तक पहुँच गए हैं और वर्ष 2018 अलविदा हो रहा है। नव वर्ष हमारी दहलीज़ों पर दस्तक दे रहा है। जैसे ही मैं ने कागज़ पर कलम रखा तो सागर किनारे लहराते नाव जैसा महसूस हुआ जो आनंदमय सफर के नृत्य-संगीत में मुग्ध खड़ा है और मुझे वह उक्ति याद आ रही थी कि 'नव वर्ष एक कोरी पुस्तक समान है और कलम आपके हाथों में है। अब आप की बारी है कि इस पर खुद एक खूबसूरत कहानी रचें'। यह हरेक व्यक्ति के लिए बीते हुए पलों को या जिसे पीछे छोड़ा गया है उसे एक बार फिर याद करने का अवसर है और जो आने वाला है उसकी कल्पना करने का, नए संकल्प लेने का और परास्त करने के लिए नए क्षितिज की तलाश करने का वक्त है। दिसंबर एक ऐसा महीना भी है जो जश्न और त्योहार से भरा है, प्यार और इंसानियत से भरा हुआ महीना। यह ऐसा अनूठा अवसर है कि दो त्योहार-क्रिसमस और नव वर्ष-एक के बाद एक करके साथ आता है और विश्व भर समस्त जनता इसे एकदिल होकर धूमधाम से मनाते हैं।

धर्म और अधर्म के बीच संघर्ष के जो अफसाने हैं, उन्हीं के रूप में ही विश्व का इतिहास रचा गया है। जब भी बुराई की शक्ति अच्छाई पर हावी होती है, इतिहास यह याद दिलाता है कि अंत में जीत हमेशा अच्छाई की होती है। दिसंबर महीना भी हमें यह स्मरणा दिलाती है कि आखिर में जीत धर्म की ही होती है- ईसा मसीह का जन्म इसका उदाहरण है। जाड़े के मौसम में कड़ाके की सर्दी की एक रात में घनघोर अंधेरे में, हमारे प्रभु का जन्म हुआ। स्वर्ग में मंगलगान मुखरित होने लगा, इसका उत्साह धरती तक भी पहुँच गया और अंधेरे ने उजाले के लिए रास्ता दे दिया। अस्तबल में ईसा मसीह का जन्म इस संदेश के साथ हुआ था कि पृथ्वी पर अच्छे दिल वालों को शांति मिलेगी। जब ईसा मसीह का जन्म हुआ, तब बेथलहम के गहरे काले आसमान में एक चमकीला तारा जगमगाने लगा और प्रेम की किरण हम पर टिमटिमाने लगी। यह क्रिसमस जिसे हम उसके जन्म पर्व के रूप में मनाता है, हमारे अंधकारमय जीवन में प्रकाश का उजियाला लाएं और प्रेम की किरणें हम पर टिमटिमाते रहें। वैश्विक तापन और जलवायु परिवर्तन जैसे

मानव निर्मित खतरों से निपटने के लिए संपूर्ण विश्व को एकजुट होकर रहना चाहिए। ज़मीन पर ही नहीं बल्कि समुद्र पर भी प्रादेशिक अधिग्रहण के इस समय पर शांति का संदेश और मानव राशि में अखंडता का एहसास ही संसार को समृद्धि की ओर ले जाएगा।

शाँति के इस त्योहार के बाद नव वर्ष का समारोह आता है। हरेक अंत से नई शुरुआत होती है। आपका उत्साह और दृढ़संकल्प अचल बनाए रखें और धीरज और विश्वास के साथ वैभवपूर्ण राह पर आगे बढ़ें और प्रयास को अपना हथियार बनाएं, सफलता ज़रूर आपके कदमों को छूमेगी। नव वर्ष नयी उम्मीदों, सपनों और तमन्नाओं को साथ लाता है। यह लोगों में एकता का भाव जगाता है और इस अवसर पर परिवारजन, रिश्तेदार और दोस्त एक दूसरे से मिलते हैं और आपस में तोह्फा बाँटते हैं। खाने की महक, खेलते बच्चों की चहलपहल और संगीत वातावरण को जीवंत और जोशपूर्ण बनाता है।

क्रिसमस और नव वर्ष अपने पाक कौशल दर्शाने का अवसर भी है। क्रिसमस मनाते समय, क्यों न हम नारियल और नारियल उत्पादों को इस त्योहार का हिस्सा बना लें। क्यों न हम अपने दावत टेबुल को नारियल, नारियल तेल और विविध नारियल आधारित उत्पादों की खूबियों से समृद्ध बनाएं। कई अन्य देशों में, जहाँ कल्पवृक्ष की खेती तक नहीं होती है, क्रिसमस के व्यंजनों का मुख्य संघटक नारियल है। युनाइटेड स्टेट्स जैसे देशों में क्रिसमस के अवसर पर नारियल दूध से बनी मिठाइयों की माँग काफी अधिक होती है। सो डेलीशियस, जो कि एक अमरीकी कंपनी है, नारियल दूध से लगभग 52 तरह के उत्पाद बनाते हैं जो ग्लूटन मुक्त, वसा रहित और सोय रहित होते हैं। उन्होंने इस उद्यम की शुरुआत इस एहसास से की थी कि युनाइटेड स्टेट्स और यूरोप के लोग ग्लूटन समृद्ध आहार पदार्थों को छोड़ रहे हैं।

दिसंबर की खासियत यह भी है कि इस महीने सर्दी बहुत अधिक होती है और बर्फ बारी हो जाती हैं। इस समय नारियल उत्पादों की माँग काफी अधिक होती है। नारियल तेल, विर्जिन नारियल तेल और खोपरा जैसे नारियल उत्पाद त्वचा को नरम और मुलायम बनाए रखते हैं। विर्जिन नारियल तेल आधारित लिप बाम फटे और खुश्क होंठों को राहत प्रदान करता है और विर्जिन नारियल तेल रूखे बालों में जान डालता है। नाव आकार में काटे खाद्य खोपरे की बिक्री उत्तर भारत में जाड़े के मौसम का आम नज़ारा है। इस मौसम में विर्जिन नारियल तेल युक्त मोइस्चराइज़र, हैंड क्रीम, फेस क्रीम आदि की बाज़ार में काफी अच्छी माँग होती है। दिसंबर में शबरीमला जैसे प्रमुख तीर्थयात्रा केन्द्रों में भी नारियल और नारियल तेल की बड़ी माँग होती है।

ये सारी बातें हमें नारियल के गुणों और खूबियों की याद दिलाती है जिन्हें हम अक्सर भूल जाते हैं। इस अवसर पर हम यह दृढ संकल्प लें कि नारियल की खोई हुई गरिमा को हम वापस लाएंगे और इस प्रयास की शुरुआत हम अपनी रसोइयों से करेंगे।

हमें वह मशहूर उक्ति नहीं भूलनी चाहिए कि 'मन की संस्कृति अवश्य ही हृदय के अधीन होनी चाहिए'। राजवंशों का उत्थान और पतन होगा, शासक आएंगे और गायब हो जाएंगे। परंतु ईश्वर की ममता सदैव विश्व पर बनी रहेगी और यह कभी न फीकी पड़ जाएगी या कम हो जाएगी।

आप सभी को क्रिसमस और नववर्ष की हार्दिक शुभकामनाएं।

डा.राजु नारायणा स्वामी भा.प्र.से.

अध्यक्ष

स्थायी आमदनी के लिए नारियल आधारित खेती प्रणाली

एच.पी.महेश्वरप्पा, पी.सुब्रमणियन और पी.चौडप्पा
केन्द्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान, कासरगोड

नारियल बाग प्रति इकाई क्षेत्र से अधिकतम आय प्राप्त करने हेतु पेड़ों के बीच की जगह का फायदा उठाने के लिए पर्याप्त अवसर प्रदान करता है। नारियल आधारित फसलन/खेती प्रणाली नारियल के बीच की जगहों में अनुकूल फसलों की खेती करने और पशुपालन जैसे अन्य उद्यमों के समेकन के साथ प्रति इकाई क्षेत्र से उत्पादन और उत्पादकता बढ़ाने, सूर्यप्रकाश, मिट्‌टी, पानी और खेतीगत श्रम जैसे संसाधनों के प्रभावी उपयोगीकरण द्वारा समय और कृषि आदान सामग्रियों के किफायतमंद उपयोग के लिए पर्याप्त अवसर प्रदान करता है। आर्द्र उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में सघन फसल प्रणाली अपनाकर फसल उत्पादन के मूल संसाधनों जैसे भूमि, सौर विकिरण और पानी का अत्यंत प्रभावी उपयोगीकरण सुनिश्चित किया जा सकता है। फसल/खेती प्रणाली का लक्ष्य फसल विविधीकरण और नारियल के बीच उपलब्ध जगहों में सघन फसल प्रणाली अपनाकर व्यवस्थित तरीके से प्रति ताड़ और प्रति इकाई जोत की उत्पादकता बढ़ाना है, जिसके अंतर्गत मिट्‌टी और पानी/बारिश, खेतीगत श्रम, कृषि आदान सामग्रियाँ(बीज, उर्वरक, कृषि रासायनिक) आदि जैसे बाग में उपलब्ध संसाधनों का प्रयोग करके बाग से नारियल, खाद्य और खाद्येतर उत्पादों का उत्पादन व्यावसायिक और लाभदायक तरीके से किया जाता है। इस प्रकार की फसल/खेती प्रणाली में प्रयुक्त सभी प्रबंधन विधियाँ और सह उत्पादन प्रणालियाँ मौजूदा नारियल पेड़ों से उच्च उत्पादकता, लाभदायिता और टिकाऊ उत्पादन बनाए रखने में सक्षम होनी चाहिए ताकि बाग से अधिकतम आमदनी सुनिश्चित की जा सके। खेती प्रणाली का प्रमुख उद्देश्य टिकाऊपन है जिसमें पर्यावरण को सुरक्षित रखते हुए सभी कृषि आदान सामग्रियों का प्रभावी उपयोग करके उत्पादन प्रक्रिया सबसे बढ़िया बनायी जाती है।

भारत में, 98 प्रतिशत नारियल बाग 2.0 हेक्टर से कम क्षेत्र के हैं और इनमें से 90 प्रतिशत से भी अधिक बाग 1.0 हेक्टर से कम आकार के हैं। ऐसे छोटे छोटे बागों में नारियल की खेती मुख्यतः एकल फसल के रूप में की जाती है जो लगभग एक सदी तक ज़मीन पर टिका रहता है। इस प्रकार के अधिकांश बाग न तो सालभर परिवार के लिए पर्याप्त रोज़गार के अवसर प्रदान करते हैं और न ही परिवार की अपेक्षाओं की आपूर्ति के लिए पर्याप्त आय प्रदान करते हैं। मौजूदा परिस्थितियों में भाव में निरंतर उतार-चढ़ाव होने से नारियल किसानों को लगातार आर्थिक खतरे का और अनिश्चितताओं का सामना करना पड़ता है। अतः समय की माँग यह है कि नारियल बागों में फसल विविधीकरण की अहमियत पर अधिक ज़ोर दिया जाए।

नारियल आधारित फसल प्रणाली

7.5 X 7.5 मीटर की दूरी पर नारियल की रोपण विधि और नारियल पेड़ की बढ़वार की प्रवृत्ति की वजह से ज़मीन के मात्र 22.3 प्रतिशत क्षेत्र का ही प्रभावी उपयोग होता

है, जबकि नारियल पेड़ के शिखर का वितान औसतन मात्र 30 प्रतिशत हवाई क्षेत्र का ही उपयोग करता है और सौर विकिरण का अवरोधन 45-50 प्रतिशत है। तथापि, वयस्क नारियल पेड़ का सक्रिय जड़ क्षेत्र ताड़ के मूल भाग से चारों ओर 2 मीटर की दूरी तक सीमित रहता है और लगभग 95 प्रतिशत से अधिक जड़ें 0-120 सें.मी.तक गहराई में पायी

नारियल बाग में सब्जी फसलों की खेती

जाती हैं और इनमें से 18.9 और 63 प्रतिशत जड़ें ज़मीन से क्रमश: 0-30 सें.मी. और 31-90 सें.मी. गहराई में केन्द्रित हैं। नारियल बाग में मिट्टी की अनुपयोगित जगह और सौर विकिरण का उपयोग करने के लिए भिन्न भिन्न कद, वितान और आकार तथा विभिन्न जड़ प्रणाली वाली उपयुक्त संयोजन की तरह तरह की फसलों की खेती की जा सकती है। इस प्रकार अंतर फसल लगाए गए नारियल बागों में विभिन्न तलों पर प्रकाश का अवरोधन होता है और उपयोग होता है और प्रति इकाई क्षेत्र से अधिकतम जैवभार उत्पादन के साथ मिट्टी की विभिन्न परतों, समय और आदान सामग्रियों का लाभ उठाया जाता है।

नारियल की बढ़वार और विकास

रोपण(5-8 वर्ष): प्रारंभ में नारियल पत्तों द्वारा सौर ऊर्जा के अधिकांश हिस्से का अवरोधन नहीं होता है जिससे ऊर्जा का बेहतर प्रसारण होता है, आयु के साथ जैसे जैसे शिखर का

नारियल के साथ केले की खेती

वितान बढ़ जाता है, फलनपूर्व अवधि के दौरान उपयोग की प्रतिशतता उत्तरोत्तर बढ़ जाती है, तदनुसार प्रकाश के प्रसारण में कमी हो जाती है। इस दौरान बाग के लिए उचित अंतर फसलें हैं, अनाज, धान फलियाँ, सब्जियाँ, मसाला फसलें, पुष्प फसलें, केला, अनन्नास आदि जैसी फल वाली फसलें।

नारियल बाग में अनन्नास की खेती

छोटे ताड़(8-25 वर्ष): ज़मीन पर अधिकतम फैलाव और शिखर का वितान ज़मीन से कम ऊँचाई पर होता है, प्रकाश की उपलब्धता मध्यम से कम रहता है- बहु फसल प्रणाली के लिए अनुकूल समय नहीं होता है। उपयुक्त अंतर फसलें हैं कालीमिर्च, मिर्च, कोको, कॉफी जैसी पेय फसलें, पुष्प फसलें और रंबूटान, मैंगोस्टीन, नींबु आदि जैसी फलदार फसलें।

वयस्क ताड़(25 वर्ष से अधिक): तने की ऊँचाई अधिक होती है, शिखर का आकार कम हो जाता है-आयु बढ़ने के साथ साथ प्रकाश का प्रसारण बढ़ जाता है-सूरज की तिरछी किरणें ज़मीन पर अधिक से अधिक पड़ता है और इसके परिणामस्वरूप ज़मीन पर शिखर के वितान की व्याप्ति उत्तरोत्तर कम हो जाती है। बहु एवं बहु मंजिली फसल प्रणाली के रूप में वार्षिक और/या बहुवर्षी फसलों की खेती के लिए उपयुक्त समय है।

तटीय बलुई मिट्टी में उत्पादकता

नारियल की खेती किए जाने वाले अधिकांश क्षेत्रों में तटीय बलुई मिट्टी होती है। तटीय बलुई मिट्टी के नारियल बागों

नारियल के साथ अंतर फसल के रूप में कोको

में अंतर फसलों के रूप में चारा घास(प्रति वर्ष प्रति हेक्टर 96 टन), सब्जी फसलों (लोबिया(प्रति हेक्टर 6 टन), तुरई(प्रति हेक्टर 9 टन), चिचिण्डा(प्रति हेक्टर 8 टन), कद्दु(प्रति हेक्टर 10.12 टन) और पेठा(प्रति हेक्टर 9.2 टन)), कंदमूल वाली फसलों (जिमीकंद(प्रति हेक्टर 20 टन))और फलदार फसलों (केला और अनन्नास(प्रति हेक्टर 15 टन)) की खेती सफलतापूर्वक की जा सकती है। नारियल की उपचार पूर्व पैदावार प्रति वर्ष प्रति ताड़ 40 नारियल थी जो कि बढ़कर नारियल + सब्जी की अंतर खेती प्रणाली में प्रति ताड़ 120 नारियल हो गयी। इसके बाद नारियल + अनन्नास(प्रति ताड़ 107 नारियल), नारियल + चारा घास(प्रति ताड़ 102 नारियल) और नारियल की एकल फसल खेती(प्रति ताड़ 98 नारियल) आते हैं। तटीय बलुई मिट्टी में विभिन्न नारियल आधारित अंतर फसल प्रणाली पर किए गए आर्थिक विश्लेषण से यह ज्ञात हुआ है कि एकल फसल के रूप में नारियल की खेती करने की तुलना में सभी फसल प्रणालियों से उच्चतर आय प्राप्त हुई है। कुल आय एकल फसल के रूप में नारियल की खेती करने से प्रति वर्ष प्रति हेक्टर 45,771 रुपए से नारियल + अनन्नास की अंतर फसल प्रणाली में प्रति वर्ष प्रति हेक्टर 1,03,010 रुपए के बीच रहा।

नारियल आधारित उच्च सघन बहु प्रजातीय फसल प्रणाली

उच्च सघन बहु प्रजातीय फसल प्रणाली में प्रति इकाई क्षेत्र में कई प्रकार की अनुकूल फसलों की खेती की जाती है जिससे कि आहार, ईंधन, लकड़ी, चारा और नकद जैसी किसानों की अपेक्षाओं की पूर्ति हो सके। इस प्रणाली का लक्ष्य प्रति इकाई क्षेत्र से अधिकतम उत्पादन हासिल करना है और यह छोटे जोतों के लिए एकदम उपयुक्त खेती प्रणाली है। इस प्रणाली में प्राकृतिक संसाधनों का प्रभावी उपयोग और जैवभार के प्रभावी पुनर्चक्रण के ज़रिए टिकाऊ उत्पादन पर अत्यधिक ध्यान दिया जाता है।

उच्च सघन बहु प्रजातीय फसल प्रणाली में उत्पादकता:

फसल विविधीकरण और सघन फसल प्रणाली के कारण उच्च सघन बहु प्रजातीय फसल प्रणाली में भूमि की उत्पादकता बढ़ जाती है। कासरगोड़ में नारियल + काली मिर्च + जायफल + केला + अनन्नास + हल्दी और अदरक जैसी वार्षिक फसलों के साथ उच्च सघन बहु प्रजातीय फसल प्रणाली अपनाए जाने के परिणामस्वरूप उच्चतर आय और उत्पादकता हासिल हुई। विभिन्न पोषण प्रबंधन प्रणालियों में नारियल की उपज प्रति वर्ष प्रति ताड़ 177 से 188 नारियल के बीच रही जबकि परीक्षणपूर्व अवधि(2005-07) में यह प्रति वर्ष प्रति ताड़ 142 से 152 नारियल था। जैवभार का पुनर्चक्रण(वर्मी कंपोस्ट) + जैव उर्वरक + हरी खाद + वर्मीवैश + छिलका गाड़ना + पलेवा लगाना जैसी संपूर्ण जैविक गतिविधियाँ अपनाकर खेती करने से निवल आय प्रति वर्ष 3,54,500 रुपए था और इसके बाद अन्य पोषण प्रबंधन उपचार(3,30,000 रुपए) आते हैं।

अलियारनगर केन्द्र में नारियल + कोको + केला + अनन्नास की फसल प्रणाली में अनुशंसित नत्रजन, फोसफरस और पोटेशियम की 75 प्रतिशत मात्रा का प्रयोग और वर्मीकंपोस्ट के रूप में जैव पुनर्चक्रण करके एकीकृत पोषण प्रबंधन प्रणाली अपनाने से प्रति हेक्टर 3.77 लाख रुपए की सबसे अधिक आय प्राप्त हुई। इसके बाद संपूर्ण जैव उपचार (3.46 लाख रुपए/हे.) प्रणाली आती है, जबकि नारियल की एकल फसल खेती से सबसे कम आय(1.24 लाख रुपए/हे.) प्राप्त हुई। अरसिकेरे(कर्नाटक) केन्द्र में नारियल + कोको + नींबू और सहजन की फसल प्रणाली में पूरी तरह जैव पोषण प्रबंधन विधि अपनाने से सबसे अधिक आय(2.95 लाख रुपए/हे.) प्राप्त हुई और इसके बाद नत्रजन, फोसफरस और पोटेशियम की अनुशंसित मात्रा के 50 प्रतिशत + वर्मीकंपोस्ट के रूप में जैव पुनर्चक्रण + वर्मीवैश प्रयोग + जैव उर्वरक प्रयोग और बाग में ही हरी खाद उगाकर उसके प्रयोग की फसल प्रणाली(प्रति हेक्टर 2,84,410 रुपए) आती है जबकि एकल फसल के रूप में नारियल की खेती करने से सबसे कम आय(प्रति हेक्टर 1,104,410 रुपए) प्राप्त हुई।

नारियल आधारित एकीकृत खेती प्रणाली

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद-केन्द्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान, कासरगोड़ की बलुई दुमट मिट्टी में नारियल, नारियल पेड़ के तने पर बढ़ती काली मिर्च, खेत की सीमा पर चारों ओर लगाए गए केले, नारियल पेड़ के बीच की जगह में चारा घास(संकर बाजरा नेपियर सीओ3) की खेती, डेरी इकाई(हॉलस्टीन फ्रीशियन की सात गायें और जर्सी संकर प्रजाति की एक गाय), कुक्कुट पालन(प्रति बैच 100 ब्रॉइलर मुर्गियाँ), 100 जापानी बटेर और मत्स्यपालन(1000 मछली के बच्चे) शामिल 40 वर्ष आयु के नारियल बाग में नारियल आधारित एकीकृत खेती प्रणाली की सुस्थिरता और लाभदायिता का मूल्यांकन किया गया। नारियल आधारित एकीकृत खेती

मिश्रित खेती प्रणाली में पशुपालन

नारियल बाग में चारा घास

प्रणाली के अंतर्गत नारियल पेड़ों को एकीकृत पोषण प्रबंधन प्रणाली के फायदे मिल जाते हैं यानी, जैव पुनर्चक्रण और अनुशंसित रासायनिक उर्वरक का 50 प्रतिशत प्राप्त होने से नारियल से उच्च पैदावार(प्रति ताड़ 140 नारियल) रिकार्ड की गई जो किसी भी दूसरी पोषण प्रबंधन प्रणालियों और नारियल की एकल फसल प्रणाली(प्रति ताड़ 114 नारियल) की तुलना में अधिक था। एकीकृत खेती प्रणाली से मृदा की उर्वरता, मिट्टी की भौतिक विशेषताएं जैसे थोक घनत्व(बल्क डेन्सिटी), जल धारण क्षमता और हाइड्रोलिक चालकता में सुधार हुआ जो कि प्रणाली के टिकाऊपन के लिए अपेक्षित है। नारियल के बीच अंतर फसल के रूप में संकर बाजरा नेपियर सीओ3 और सीओ 4 घास की खेती करने से प्रति वर्ष प्रति हेक्टर से क्रमशः 117 टन और 114 टन हरा चारा घास प्राप्त हुआ। इसप्रकार अनुरक्षित नारियल आधारित खेती प्रणाली से वर्ष 2014-15 के दौरान प्रति हेक्टर से 5.18 लाख रुपए की आमदनी प्राप्त हुई, जो इस प्रणाली की लाभदायिता सूचित करती है।

नारियल आधारित खेती प्रणाली:

नारियल आधारित फसल/खेती प्रणाली अपनाने के निम्नलिखित फायदे होते हैं:

- पर्याप्त मात्रा में आहार का उत्पादन होने के कारण खाद्य सुरक्षा
- विटामिनों और खनिजों(पौष्टिक तत्व) से समृद्ध पौष्टिक आहार प्राप्त होता है।
- फसल विविधीकरण से रोजगार सृजन
- पारिस्थितिक स्थिरता(पर्यावरण संरक्षण)

सामाजिक लाभ से तात्पर्य ताज़ा नारियल एवं नारियल उत्पादों तथा नारियल आधारित फसल/खेती प्रणाली में उत्पादित फसलों के खाद्य एवं पोषण संबंधी प्रकार्यों से है जिनमें 1) अनाज (कार्बोहाइड्रेट, प्रोटीन, वसा और तेलों के स्रोत के रूप में); 2) कंदमूल फसलें(कार्बोहाइड्रेट और खनिजों के स्रोत के रूप में); 3) फलियाँ(प्रोटीन और वानस्पतिक वसा एवं तेलों के स्रोत के रूप में); 4) फलदायी फसलें(विटामिनों, खनिजों और कार्बोहाइड्रेटों के समृद्ध स्रोत के रूप में); 5) पत्तेदार एवं फलदायी सब्जियाँ(विटामिनों, खनिजों और आहारीय रेशों के समृद्ध स्रोत के रूप में); 6) मसाला फसलें(खाद्य पदार्थों के स्वादवर्धक, विटामिन एवं खनिज); 7) कॉफी और कोको(पेय और उत्तेजक); 8) कुदरती रेशा फसलें(कपड़ा बनाने की सामग्री और कागज़ तथा पैकेजिंग के स्रोत के रूप में); 9) काष्ठ एवं इमारती लकड़ी(घर बनाने की सामग्रियाँ, पल्प और कागज़ के स्रोत के रूप में) शामिल हैं।

नारियल आधरित उच्च सघन बहु प्रजातीय फसल प्रणाली

संक्षेप

यह प्रणाली प्रति इकाई क्षेत्र से अधिकतम उत्पादन सुनिश्चित करता है। यह छोटे बागों के लिए एकदम उपयुक्त है। यह खाद्य, पोषण सुरक्षा, कृषक परिवार के लिए रोजगार के अवसर और पर्यावरणीय सुरक्षा प्रदान करता है। इस प्रणाली में प्राकृतिक संसाधनों के प्रभावी उपयोगीकरण और जैवभार के पुनर्चक्रण के ज़रिए टिकाऊ उत्पादन पर पूरा ध्यान दिया जाता है।

साभार: इंडियन होर्टिकल्चर जनवरी - फरवरी 2017

नारियल तेल के स्वास्थ्य लाभ

के.बी.हेब्बार और एम.अरिवलगन
प्रभाग अध्यक्ष और वैज्ञानिक, पादप कायकी, बयोकेमिस्ट्री और फसलोत्तर प्रौद्योगिकी,
केन्द्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान, कासरगोड

नारियल तेल एक खाद्य तेल है और परिपक्व नारियल की गरी से निकाला जाता है। इसमें तकरीबन 90 प्रतिशत संतृप्त वसा निहित है। यह तेल मध्यम श्रृंखला वसा अम्लों से संपुष्ट है और कुछ अनन्य विशेषताएं दर्शाता है। हाल में, फंक्शनल खाद्य तेल के रूप में विर्जिन नारियल तेल की लोकप्रियता बढ़ती जा रही है। खाद्य और औद्योगिक प्रयोजनों के लिए नारियल तेल का व्यापक उपयोग होता आ रहा है। कई पीढ़ियों से उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में लाखों लोगों के आहार में वसा का प्राथमिक स्रोत नारियल तेल ही है। खाद्य पदार्थों, औषधियों और उद्योग के क्षेत्र में इसके कई उपयोग होते हैं। नारियल तेल अत्यधिक ताप स्थिरता रखने के कारण तलना या भूनना जैसे उच्च तापमान पर खाना बनाने वाली प्रक्रियाओं में उपयुक्त होता है। इसकी स्थायी प्रकृति के कारण यह धीमी गति से ऑक्सीकृत होता है और इसलिए यह तेल जल्दी बासी नहीं होता है तथा संतृप्त वसा संघटक उच्च मात्रा में निहित रहने के कारण दो साल तक खराब नहीं होता है। उत्पादन विधियों के आधार पर नारियल तेल को परंपरागत, परिष्कृत और विर्जिन नारियल तेल जैसे तीन प्रकार से वर्गीकृत किया जाता है।

परंपरागत नारियल तेल

नारियल तेल खोपरे से बनाया जाता है। नारियल की सूखी गरी को खोपरा कहा जाता है। यह धुआँ, धूप या भट्ठी में सुखाकर या एक साथ इन तीनों विधियों का प्रयोग करके तैयार किया जाता है। एक्स्पेलर से ज्यों का त्यों निकाला जाने वाला कच्चा, बिना फिल्टर किया गया और बिना कोई अतिरिक्त पदार्थ मिलाए गए तेल को परंपरागत नारियल तेल कहा जाता है। कभी-कभी इसे परिशुद्ध नारियल तेल कहा जाता है ताकि परिष्कृत, ब्लीच किया गया, निर्गन्धीकृत नारियल तेल जिसे सामान्यतया परिष्कृत नारियल तेल कहा जाता है, से अंतर स्पष्ट हो। खोपरे से निकाला गया अपरिष्कृत नारियल तेल खपत के लिए उपयुक्त नहीं होता है और इसे परिशुद्ध बनाना अनिवार्य है। यह इसलिए है कि खोपरा सुखाने का तरीका ज्यादातर साफ और स्वच्छ नहीं होता है।

परिष्कृत नारियल तेल

आरबीडी नारियल तेल खोपरे से वाणिज्यिक प्रयोजनों के लिए उत्पादित अंतिम मानक उत्पाद है। आरबीडी का

मतलब है परिष्कृत, ब्लीच किया गया और निर्गन्धीकृत। परंपरागत नारियल तेल को अच्छी गुणवत्ता के बनाने के लिए और अधिक प्रसंस्करण की ज़रूरत है। उच्च ताप में तेल निर्गन्धीकृत किया जाता है और इसमें निहित गंदगी को निकालने के लिए चिकनी मिट्टी के माध्यम से छाना (ब्लीचिंग) जाता है। लंबे समय तक सुरक्षित रखने के लिए आमतौर पर सोडियम हाइड्रोक्साइड का प्रयोग किया जाता है।

विर्जिन नारियल तेल

विर्जिन नारियल तेल नारियल की कच्ची गरी से बनाया जाता है न कि खोपरे से। इसे परिष्कृत बनाने के लिए रासायनिकों और उच्च तापमान का प्रयोग नहीं किया जाता है। विर्जिन नारियल तेल के उत्पादन के लिए फिलहाल दो प्रमुख प्रक्रियाएं अपनाई जाती हैं:

1. नारियल की कच्ची गरी को शीघ्र सुखाने के बाद निचोड़कर तेल निकाला जाता है। इस विधि में नारियल गरी को शीघ्र सुखाया जाता है और यांत्रिक साधनों के सहारे तेल निकाला जाता है।
2. नम पेषण: इस विधि में कच्ची नारियल गरी को बिना सुखाए तेल निकाला जाता है। गरी निचोड़कर पहले नारियल दूध निकाला जाता है। बाद में दूध से तेल अलग किया जाता है। दूध से तेल निकालने के लिए दूध उबालना, किण्वन, प्रशीतन, एनज़ाइमों का प्रयोग, यांत्रिक सेंट्रिफ्यूग जैसी विधियाँ अपनायी जाती हैं।

नारियल तेल का संघटन, भौतिक और रासायनिक विशेषताएं

नारियल तेल में नब्बे प्रतिशत से अधिक संतृप्त वसा अम्ल है, साथ साथ बहुत कम मात्रा में एकल असंतृप्त वसा अम्ल (6 प्रतिशत)और बहु असंतृप्त वसा अम्ल जैसे कुछ असंतृप्त वसा अम्ल (2 प्रतिशत) भी निहित हैं। नारियल तेल में मुख्यत: मध्यम श्रृंखला वाले ट्राइग्लिसेराइड निहित है। नारियल तेल में निहित संतृप्त वसा अम्लों में मुख्यत: 44.6 प्रतिशत लारिक अम्ल, 16.8 प्रतिशत मिरिस्टिक अम्ल, 8.2 प्रतिशत पामिटिक अम्ल और 8 प्रतिशत कैप्रिलिक अम्ल मौजूद हैं। यद्यपि इसमें सात विभिन्न संतृप्त वसा अम्ल निहित हैं, इसका एकमात्र एकल असंतृप्त वसा अम्ल ओलीक अम्ल और एकमात्र बहु असंतृप्त वसा अम्ल लिनोलीक अम्ल हैं।

संतृप्त वसा अम्ल

संतृप्त वसा अम्लों में 40 प्रतिशत से अधिक हिस्सा लारिक अम्ल का है और इसके बाद कैप्रिक अम्ल, कैप्रिलिक अम्ल, मिरिस्टिक अम्ल और पामिटिक अम्ल आते हैं। नारियल में गैलिक अम्ल मौजूद है जोकि एक फिनोलिक अम्ल है। नारियल तेल को महक और जायका प्रदान करने वाला घटक यह पोलीफिनोल माना जाता है और विर्जिन नारियल तेल में यह पोलीफेनोल भरपूर मात्रा में निहित होता है। *बीटेइन, एथनोलैमाइड, ईथोक्साइलेट, फैटी एस्टर, फैटी पोली सोरबेट, मोनोग्लिसेराइड और पोलियोल एस्टर, फैटी क्लोराइड, फैटी एल्कोहॉल सल्फेट और फैटी एल्कोहॉल ईथर सल्फेट* ये सभी फैटी अल्कोहल के संजात हैं।

उत्पाद विविधीकरण के ज़रिए नारियल तेल का मूल्यवर्धन

अपरिष्कृत (कच्चा) नारियल तेल 24-25^{0}सेल्शियस (76^{0}फैरनहीट) पर गल जाता है और 177^0 सेल्शियस (350^0 फैरनहीट) पर धुआँ बनने लगता है। जबकि परिष्कृत नारियल तेल की धूम्र बिंदु इससे उच्चतर 232^{0}सेल्शियस (450^{0}फैरनहीट) है। सभी तेलों में से नारियल तेल सबसे अधिक स्थिरता दर्शाता है। इसलिए इसका बहुत धीरे से ऑक्सीकरण होता है और यह बासीपन रोधी होता है। लंबे समय तक सुरक्षित रखने के लिए ठोस पदार्थ के रूप में इसका भंडारण करना सबसे उत्तम है (अर्थात 24.5^{0}सेल्शियस (76^0 फैरनहीट)पर)।

स्वास्थ्य लाभ

नारियल तेल के स्वास्थ्य लाभों में केश संरक्षण, त्वचा संरक्षण, तनाव से राहत, कोलेस्ट्रॉल स्तर बनाए रखना, वज़न कम करना, रोगप्रतिरोधिता बढ़ाना, पाचन शक्ति और चयापचय क्रिया ठीक रखना, गुर्दे की बीमारी, हृदय रोग, उच्च रक्तचाप और मधुमेह से राहत, दांतों का संरक्षण और हड्डियाँ मज़बूत बनाना आदि शामिल हैं। नारियल तेल में मौजूद लारिक अम्ल, कैप्रिक अम्ल और कैप्रिलिक अम्ल एवं इसके सूक्ष्मजीवरोधी, निरोक्सीकारक, फफूँदरोधी,

जीवाणुरोधी एवं प्रशमन विशेषताएं नारियल तेल के स्वास्थ्यवर्धक गुणों के स्रोत मानी जा सकती हैं। मनुष्य का शरीर लारिक अम्ल को मॉनोलॉरिन में बदलता है जो हेर्पिस, इंफ्लुएन्ज़ा, साइटोमेगलोवाइरस और यहाँ तक कि एचआईवी से निपटने में सहायक है। यह, *लिस्टेरिया मोनोसाइटोजीन्स* और *हेलिकोबैक्टर पाइलोरी* जैसे घातक जीवाणु और *जियार्डिया लैंब्लिया* जैसे घातक प्रोटोज़ोआ के खिलाफ लड़ने में मदद करता है। नारियल तेल के इन स्वास्थ्य लाभों के फलस्वरूप इसकी वास्तविक क्रिया विधि से अनजान होते हुए भी भारत की परंपरागत चिकित्सा विधि आयुर्वेद में इसका व्यापक उपयोग हो रहा है। नारियल अनुसंधान केन्द्र ने परंपरागत और आधुनिक चिकित्सा में इसके विविध लाभों का संकलन किया है।

हृदय के लिए स्वास्थ्यपूर्ण तेल

लोगों के बीच यह गलत अवधारणा फैली हुई है कि नारियल तेल हृदय के लिए अच्छा नहीं है। यह इसलिए कहा जाता है कि नारियल तेल में बड़ी मात्रा में संतृप्त वसा निहित हैं। संतृप्त वसा स्वास्थ्य के लिए अच्छा नहीं माना जाता है और कई स्वास्थ्य प्राधिकरण आहार के रूप में यह कम लेने की सलाह देते हैं। ये सिफारिश उच्च मात्रा में संतृप्त वसा अम्ल की खपत और हृदय रोग के संबंध में किए गए अध्ययन से उभर आया है। फिर भी, संतृप्त वसाएं स्वभाव से पूरी तरह भिन्न जातीय होती हैं और संभवतः स्वास्थ्य पर इसके असर में भी अंतर है। असल में इनकी संरचना के आधार पर संतृप्त वसाओं को ह्रस्व श्रृंखला, मध्यम श्रृंखला और दीर्घ श्रृंखला वसाओं में उप-वर्गीकृत किया जा सकता है, जबकि सारे एकल और बहु असंतृप्त वसा अम्ल दीर्घ श्रृंखला वाले होते हैं। ह्रस्व श्रृंखला वाले वसा अम्लों में छः या इससे कम कार्बन होते हैं, मध्यम श्रृंखला वसा अम्लों में 8-12 कार्बन होते हैं और दीर्घ श्रृंखला वसा अम्लों में सामान्यतः 14 या इससे अधिक कार्बन श्रृंखला होती हैं। संतृप्त वसा और असंतृप्त वसा के गुणों की तुलना करते हुए चलाए गए अधिकांश अध्ययनों में उन वसा अम्लों पर ध्यान केन्द्रित किया गया है जिनमें वसा अम्ल दीर्घ श्रृंखला वसा अम्लों के रूप में निहित हैं।

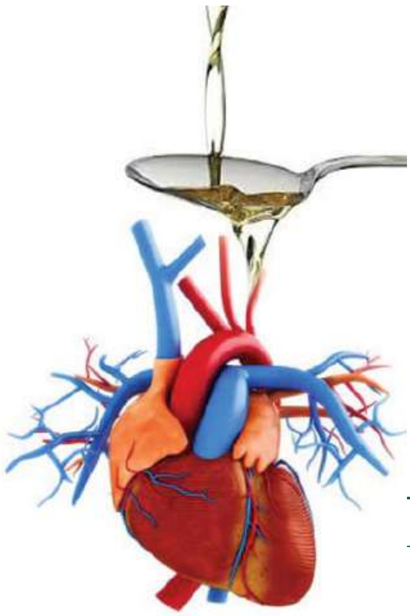

ह्रस्व श्रृंखला वसा अम्ल और मध्यम श्रृंखला वसा अम्ल दीर्घ श्रृंखला वसा अम्लों से अधिक विपरीत चार्ज के होते हैं और लसीका तंत्र में परिवहन हेतु कैलोमाइक्रोनों में बंद करने की ज़रूरत नहीं पड़ती है। इसलिए नारियल तेल और अन्य मध्यम श्रृंखला वसा अम्ल कोलेस्ट्रोल चक्र में प्रवेश नहीं करते हैं और कार्निटिन के बगैर भी इसका चयापचय किया जा सकता है, जो इनकी चयापचय क्रिया दर निर्धारित करने वाला सबसे धीमा चरण है और यह बीटाऑक्सीकरण के लिए माइटोकोंड्रिया में प्रवेश अत्यंत सुगम बनाता है।

उत्पाद विविधीकरण के ज़रिए नारियल के मूल्यवर्धन में कुदरती, बिना हाइड्रोजनीकृत नारियल तेल एचडीएल कोलेस्ट्रॉल बढ़ाता है और कोलेस्ट्रॉल प्रोफाइल बेहतर बनाता है। एचडीएल अच्छा कोलेस्ट्रॉल होता है जो दिल की बीमारी से सुरक्षित रखने में सहायता करता है। खून का कुल कोलेस्टॉल जिसमें एचडीएल (अच्छा) और एलडीएल(खराब) कोलेस्ट्रॉल शामिल हैं, दिल की बीमारी का खतरा सूचित करने में अपर्याप्त है। दिल की बीमारी का खतरा जानने का अधिक सटीक तरीका दोनों प्रकार के कोलेस्ट्रॉलों को पृथक करना है। अतः दिल की बीमारी का खतरा अधिक सटीक सूचित करने वाले सूचक के रूप में खराब और अच्छे कोलेस्ट्रॉल के बीच के अनुपात को वैश्विक तौर पर मान्यता दी गई है। एचडीएल बढ़ाने की नारियल तेल की प्रवृत्ति के कारण कोलेस्ट्रॉल अनुपात सुधरता है जिससे दिल की बीमारी का खतरा कम हो जाता है। उन लोगों में दिल की बीमारी का खतरा कम पाया गया है जो अपने दैनिक आहार में परंपरागत रूप से अधिक मात्रा में नारियल तेल की खपत करते हैं और इनके खून का कोलेस्ट्रॉल स्तर सामान्य रहता है। विभिन्न देशों के लोगों के बीच किए गए अध्ययन इस तथ्य का समर्थन करते हैं। अनुसंधान से पता चला है कि जो लोग बड़ी मात्रा में नारियल तेल की खपत करते हैं उनका हृदय काफी

स्वास्थ्यपूर्ण रहता है। नारियल तेल की खपत कम करते हुए इसके एक हिस्से के बदले बहु असंतृप्त वसा की खपत करने के परिणामस्वरूप खून के कोलेस्ट्रॉल स्तर पर बदलाव पाया गया जो दिल की बीमारी का खतरा कम करने में अहम था। बहु असंतृप्त वसा की तुलना में नारियल तेल खून का थक्का बनने की प्रवृत्ति कम करता है।

वज़न कम करना

नारियल तेल वज़न कम करने में काफी फायदेमंद है। इसमें हृस्व और मध्यम श्रृंखला वसा अम्ल निहित हैं जो वज़न बढ़ना कम करता है। यह आसानी से पच जाता है और थाइरोइड एवं एनज़ाइम तंत्र स्वस्थ तरीके से कार्य करने में मदद करता है। अग्नाशय पर अधिक दबाव डाले बिना ही शरीर की चयापचय क्रिया बढ़ाता है जिससे अधिक ऊर्जा जल जाती है और मोटापा एवं अधिभार से पीड़ित लोगों का वज़न घट जाता है। अतः उष्णकटिबंधीय तटीय क्षेत्रों में रहने वाले लोग जो खाना पकाने के तेल के रूप में रोज़ाना नारियल तेल का इस्तेमाल करते हैं, प्रायः मोटा या अधिभार वाले नहीं होते हैं। मध्यम श्रृंखला वसा अम्ल बनाम दीर्घ श्रृंखला वसा अम्ल की खपत के आधार पर चलाए गए दोनों अध्ययनों में मध्यम श्रृंखला वसा अम्ल की खपत से ऊर्जा का अधिक व्यय और वसा ऑक्सीकरण नोट किया गया, जिससे यह निष्कर्ष निकला कि वज़न बढ़ना और मोटापा रोकने के लिए मध्यम श्रृंखला वसा अम्ल सहायक हो सकता है। सेंट ओंगे और अन्य (2008) ने मध्यम श्रृंखला वसा अम्लों पर अनुसंधान चलाया और पाया कि चयापचयी खतरा कारकों पर विपरीत असर डालने के डर के बिना ही वज़न कम करने के कार्यक्रम में नारियल तेल का प्रयोग किया जा सकता है। उन्होंने यह भी सुझाव दिया कि चयापचयी खतरों पर संतृप्त वसा के प्रभाव पर चर्चा करते समय श्रृंखला की लंबाई के अनुसार उन्हें पहचानना ज़रूरी है।

पाचन प्रक्रिया

नारियल तेल की आंतरिक खपत मुख्यतः खाना बनाने के तेल के रूप में होती है। पाचन तंत्र को स्वस्थ बनाने में नारियल तेल मदद करता है और इसप्रकार यह आंत्र एवं पाचन संबंधी विविध समस्याओं से बचाता है। नारियल तेल में मौजूद संतृप्त वसा में सूक्ष्मजीवीय विशेषताएं निहित हैं और यह बदहज़मी के कारक विविध जीवाणु, फफूँद, परजीवी आदि से लड़ने में मदद करता है। मध्यम श्रृंखला वसा अम्ल की खपत का सबसे उत्कृष्ट लाभ यह है कि इसे पचाने के लिए जिगर की ज़रूरत नहीं पड़ती है। इसका मतलब है इससे शरीर को तत्काल ऊर्जा प्राप्त होती है और शरीर की चयापचय क्रिया दर में वृद्धि होती है जिससे अधिक ताप का उत्पादन एवं बेहतर रक्तसंचार संभव हो जाता है। व्रणीय बृहदांत्रशोथ (अल्सरेटिव कोलाइटिस) एक दीर्घकालीन रोग है जो पाचन प्रक्रिया में अस्वस्थता पैदा करके हम जो आहार खाते हैं उसके पचने में बाधा डालता है। अधिकांश तेलों और वसाओं से भिन्न नारियल तेल आंत की जगह पेट में ही विघटित होता है। दूसरे शब्दों में यह कह सकते हैं कि अल्सरेटिव कोलाइटिस के शिकार लोगों में संवेदनशील बृहदांत्र क्षेत्र तक पहुंचने से पहले ही यह पच जाता है। फाउंडेशन फॉर आल्टरनेटिव एंड इंटेग्रेटिव मेडिसिन (एफएआईएम) यह सिफारिश देता है कि पाचनसंबंधी बीमारियों जैसे आंत के सूजन से पीड़ित लोगों को इसका रोगलक्षण कम करने के लिए अन्य तेलों की जगह नारियल तेल का उपयोग करना चाहिए। जहाँ तक पाचन संबंधी रोगों की बात आती है, भोजन नाली के स्वास्थ्य के लिए उपयुक्त आहार संबंधी नए क्षेत्र पर और अधिक अनुसंधान चलाने की ज़रूरत है। अल्सरेटिव कोलाइटिस से पीड़ित लोग अपने आहार से सारे पोषकतत्वों का अवशोषण करने में असमर्थ हो सकते हैं। एफएआईएम के अनुसार नारियल तेल कुछ विटामिनों और खनिजों की अवशोषण दर सुधारने में मददगार रहा है, भले ही यह साबित करने के लिए उन्होंने अधिकांशतः शिशुओं पर हुए प्रभाव की रिपोर्ट की है।

निरोगण और रोग-संक्रमण

नारियल तेल अपनी फफूँदरोधी, वायरसरोधी और जीवाणुरोधी विशेषताओं के कारण कई प्रकार के रोगसंक्रमण में काफी फायदेमंद साबित हुआ है। संक्रमणयुक्त भागों पर लगाने से वहाँ पर एक रासायनिक परत बनती है जो संक्रमित शरीर भाग को बाहरी धूल, हवा, फफूँद, बैक्टीरिया और वायरस से सुरक्षित रखता है। चोट लगे भागों पर नारियल तेल

लगाना भी उचित है क्यों कि क्षतिग्रस्त ऊतकों की मरम्मत करके यह घाव भरने की प्रक्रिया त्वरित करता है। नारियल तेल कैंडिडा फफूँद की कतिपय प्रजातियों के खिलाफ प्रभावी पाया गया। बच्चों में सामूहिक मेलमिलाप से होनेवाले न्यूमोणिया के उपचार में मौखिक रूप से नारियल तेल लेना फायदेमंद साबित हुआ। नारियल अनुसंधान केन्द्र, यूएसए के अनुसार इन्फ्लुएन्ज़ा, खसरा, हेपाटाइटिस, हेर्पिस आदि रोगों के कारक वायरस को नारियल तेल मारता है। नारियल तेल मिश्रित IV आम्पिसिलिन लेने से अकेले IV आम्पिसिलिन लेने की अपेक्षा श्वसन दर और फेफड़ों की आवाज़ जल्दी सामान्य स्थिति में होती पायी गई। नारियल तेल में निहित मोनोलॉरिन 14 मानव आरएनए एवं डीएनए आवृत वायरस के खिलाफ कृत्रिम परिवेश में वायरस मारने की क्रिया निर्दर्शित की। छह आम एंटीबयोटिक दवाओं के साथ प्रयोगशाला में किए गए तुलनात्मक अध्ययन में प्राथमिक और द्वितीय स्तर की त्वचा संबंधी बीमारियों के खिलाफ मोनोलॉरिन का प्रभाव दर्शित हुआ। नारियल तेल कैंडिडियासिस, दाद, एथलीट फुट, मूँह के छाले, डायपर की फुन्सियाँ आदि के कारक फफूँद और खमीर के खिलाफ भी असरदार पाया गया।

बालों की देखभाल

नारियल तेल केश के लिए उत्तम कुदरती पोषकतत्व है। यह अच्छी तरह बाल बढ़ने में सहायक होने के साथ साथ बालों की चमक बढ़ाता है। यह क्षतिग्रस्त और स्वस्थ बालों का प्रोटीन नुकसान कम करता है। यह क्षतिग्रस्त बालों के पोषण के लिए अनिवार्य प्रोटीन प्रदान करता है। अनुसंधान अध्ययन सूचित करता है कि हाइग्रल फैटिग, माने बालों का सूजन और संकुचन, से बालों को होने वाले नुकसान से संरक्षण देने के लिए नारियल तेल फायदेमंद है। हाइग्रल फैटिग बालों को नुकसान पहुंचाने वाला एक घटक है, जिससे नारियल तेल बेहतर संरक्षण देता है क्योंकि मिनरल तेलों के मुकाबले नारियल तेल बेहतर तरीके से बालों के अंदर घुस जाता है। रेले और मोहाइल (2003) ने पाया कि क्षतिग्रस्त और स्वस्थ बालों में बाल धोने से पहले और बाद में नारियल तेल का इस्तेमाल करने पर अन्य तेलों की तुलना में प्रोटीन नुकसान कम हुआ है। नारियल तेल, लारिक अम्ल का ट्राइग्लिसेराइड (प्रधान वसा अम्ल) होने के नाते बालों की प्रोटीन के साथ अच्छा मेल खाता है और इसके कम अणु भार और सीधी रेखीय श्रृंखला के कारण अन्य तेलों की तुलना में बालों में आसानी से घुसता है।

त्वचा की देखभाल

नारियल तेल त्वचा के लिए बेहतरीन मालिश तेल है। यह शुष्क त्वचा सहित सभी प्रकार की त्वचाओं में फायदेमंद मोइस्चराइसर के रूप में काम करता है। त्वचा पर नारियल की खूबियों की तुलना हम मिनरल तेल से कर सकते हैं। त्वचा पर मिनरल तेल से भिन्न नारियल तेल लगाने से किसी भी प्रकार का विपरीत असर बिलकुल भी उत्पन्न नहीं होता है। इसलिए नारियल तेल त्वचा का रूखापन और शल्की त्वचा के उपचार में काफी सुरक्षित है। सेरोसिस (xerosis) त्वचा की एक आम बीमारी है जिसके लक्षण हैं शुष्क, रूखी, शल्की और खुजली वाली त्वचा जो त्वचा अवरोधक की क्रियाओं में होने वाली क्षति से उत्पन्न होती है और मोइस्चराइज़रों से उपचार किया जाता है। सदियों से उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों के लोग मोइस्चराइज़र के रूप में नारियल तेल का प्रयोग फायदेमंद तरीके से करते आ रहे हैं। हाल में, त्वचा पर रोगाणुरोधी प्रभाव के लिए भी नारियल तेल फायदेमंद पाया गया है। त्वचा की जलयोजन प्रक्रिया सुधारने और त्वचा की सतह पर लिपिड स्तर बढ़ाने में नारियल तेल प्रभावी पाया गया है। इसके प्रयोग से त्वचा पर झुर्रियाँ निकलना और त्वचा की झोल होना कम होता है जो उम्र बढ़ने के साथ पाया जाता है। नारियल तेल सोरायसिस, डेर्माटाइटिस, एक्ज़िमा और त्वचा की अन्य बीमारियों के उपचार में उपयोगी पाया गया है। इसलिए साबुन, लोशन, क्रीम आदि त्वचा की देखभाल के

लिए उपयोग किए जाने वाले उत्पादों के रूप में मूल्यवर्धन हेतु उत्पाद विविधीकरण के लिए नारियल तेल का इस्तेमाल होता है। नारियल तेल इसकी निरोक्सीकारी विशेषताओं की वजह से समयपूर्व बुढ़ापा और डिजनरेटिव रोग आदि रोकने में मददगार रहा है।

दांतों की देखभाल

अयरलैंड के एथलॉन इंस्टिट्यूट ऑफ टेकनलॉजी के अनुसंधानकर्ताओं ने पाया है कि पचते समय नारियल तेल दांतों की सड़न के कारक बैक्टीरिया से लड़ सकता है। उन्होंने पाया कि नारियल तेल दाँतों की सड़न के प्रमुख कारक बैक्टीरिया *स्ट्रेप्टोकोकस* (और खासतौर पर *स्ट्रेप्टोकोकस म्यूटेन्स*) से काफी प्रभावी तरीके से लड़ता है। इस परिणाम से दांतों के डॉक्टरों के बीच यह उम्मीद जागी है कि भविष्य में आम जनता के दाँतों की सड़न व्यापक रूप से रोकने में नारियल तेल का उपचार काफी फायदेमंद साबित होगा। इसके अतिरिक्त मूँह में छाला पड़ने के प्रमुख कारक खमीर *कैंडिडा एल्बिकन्स* के खिलाफ भी नारियल तेल काफी प्रभावी पाया गया। यह मूँह के स्वास्थ्य संबंधी दूसरी बड़ी समस्या है। कैल्शियम दाँतों में मौजूद प्रमुख तत्व है। चूँकि नारियल तेल शरीर में कैल्शियम का अवशोषण सुगम बनाता है, यह दांत मज़बूत बनाने में सहायक है।

विर्जिन नारियल तेल

विर्जिन नारियल तेल का वसा अम्लीय संघटन परंपरागत और परिष्कृत नारियल तेल के समान है, किंतु यह निरोक्सीकारकों जैसे पोली फेनोलिक यौगिक, टोकोफेरोल और फाइटोस्टेरोल से भरपूर है। विर्जिन नारियल तेल में पाए जाने वाले प्रमुख पोलीफेनोलिक यौगिक प्रोटोकैटेचूइक, वैनिलिक, कैफीक, सिरिंजिक, फेरुलिक और पी-कौमैरिक अम्ल हैं। कई अध्ययनों से सुझाव निकला है कि मनुष्य का स्वास्थ्य बढ़ाने में आहारीय फेनोलिक निहित खाद्य पदार्थ की खपत काफी फायदेमंद है। फेनोलिक निरोक्सीकारकों के लाभकारी प्रभावों के कारण फेनोलिक यौगिकों से संपुष्ट आहार ढूँढने का नया दौर शुरू हुआ है। परिष्कृत नारियल तेल की तुलना में विर्जिन नारियल तेल में उच्च मात्रा में फेनोलिक घटक निहित हैं।

यह सुझाव है कि शुष्क विधि से आरबीडी (परिष्कृत, ब्लीच किया गया और निर्गन्धीकृत) प्रक्रिया अपनाने पर नारियल तेल में निहित कुछ फेनोलिक यौगिक काफी अधिक मात्रा में नष्ट हो जाते हैं। परंपरागत नारियल तेल का कुल फेनोलिक संघटक वाणिज्यिक रूप से तैयार किए गए नारियल तेल से सात गुना अधिक है। विर्जिन नारियल तेल की निरोक्सीकारक क्रियाएं परिष्कृत नारियल तेल की तुलना में काफी उच्च पायी गयीं। उत्पादित विर्जिन नारियल तेल की गुणवत्ता 1,1-डाइफिनाइल-2-पाइक्रिलहाइड्राज़िल (डीपीपीएच) रेडियल अपमार्जन क्रिया, कैरोटीन-लिनोलीट ब्लीचिंग क्रिया और रेड्यूसिंग पवर आदि तीन अलग अलग निरोक्सीकारी कसौटियों पर तय की जाती है। उत्पाद विविधीकरण के ज़रिए मूल्यवर्धन करने पर कुल फेनोलिक संघटक में काफी अंतर पाया गया। किण्वन विधि से उत्पादित नारियल तेल में कुल फेनोलिक संघटक सबसे अधिक रहा और इसके बाद चिल्लिंग विधि और फिर आरबीड़ी विधि आती है। किण्वन विधि से उत्पादित विर्जिन नारियल तेल में डीपीपीएच पर ज़बरदस्त अपमार्जन प्रभाव देखा गया और कैरोटीन-लिनोलीट ब्लीचिंग विधि के आधार पर उच्चतम निरोक्सीकारी क्रिया पाई गई। तथापि उच्चतम रेड्यूसिंग पवर चिलिंग विधि से उत्पादित विर्जिन नारियल तेल में पाया गया। कुल फेनोलिक संघटक और अपमार्जन क्रिया एवं रेड्यूसिंग पवर के बीच आपस में काफी उच्च संबंध पाया गया।

नारियल तेल में कुछ खास प्रकार के वसा अम्ल निहित हैं जो आसानी से पचता है, तत्काल ऊर्जा प्रदान करता है, थाइरोइड क्रियाओं की सहायता करता है (जो रोगहर और रोगप्रतिरोधी तंत्र मज़बूत बनाता है) और पौष्टिक तत्वों का अवशोषण बेहतर बनाता है। इसके अतिरिक्त, चिकित्सा अनुसंधानों से सूचित हुआ है कि नारियल दिल की बीमारी, स्तन और कोलन कैंसर, जिगर की बीमारी, गुर्दे की बीमारी, क्रोन बीमारी, एपिलेप्सी, कैंडिडा, हेर्पिस, इन्फ्लुएंज़ा और कई संक्रामक रोगों से बचाता है।

जैविक नारियल की संभावनाएं

पी.सुब्रमणियन, वी.कृष्णकुमार, अल्का गुप्ता, मुरली गोपाल, आर.सुरेखा और पी.चौडप्पा
केन्द्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान, कुडलू डाक, कासरगोड

नारियल में, लगभग 74 प्रतिशत तक जड़ें धड़ क्षेत्र से चारों ओर 2 मीटर की दूरी में ही सीमित रहती हैं और अधिकांश जड़ें 30-120 सें.मी. गहराई तक ही बढ़ती हैं। अतः नारियल पेड़ अपनी बढ़वार के लिए ज़मीन के बहुत कम क्षेत्र का ही उपयोग करता है। शिखर पर पत्तों का वितान इस प्रकार होता है कि सूर्यप्रकाश ज़मीन पर आसानी से पहुँचता है जिससे ज़मीन और सौर ऊर्जा का भरपूर उपयोग करके अंतर/मिश्रित फसलों की खेती करने का अवसर मिल जाता है और इस प्रकार फसल विविधता सुनिश्चित हो जाती है जो कि जैविक खेती का अनिवार्य संघटक है। ऐसी प्रणाली अपनाने से भूमि में जैविक अपशिष्टों की मात्रा बढ़ जाती है और इस तंत्र के अंदर ही इसका पुनर्चक्रण होने से बाहरी आदान सामग्रियों के अभाव में भी मिट्टी की उर्वरता कायम रहती है। इसप्रकार नारियल की बढ़वार की विशेषताओं और पेड़ों के बीच अधिक दूरी छोड़ी जाने के कारण जैविक खेती आधारित उत्पादन तंत्र अपनाने के लिए अत्यंत अनुकूल वातावरण उपलब्ध होता है।

नारियल एक बहुवर्षी फसल है, जो दशकों तक जीवित रहता है और इसलिए ताड़ की बढ़वार और टिकाऊ पैदावार बनाए रखने के लिए बढ़वार हेतु अनुकूल परिस्थिति उपलब्ध कराना अनिवार्य होता है। पेड़ पर एक बार फलन शुरू होने के बाद, हरेक महीने औसतन एक पत्ता और एक पुष्पक्रम निकलता रहता है। इसप्रकार साल में 12-15 पुष्पक्रम विकसित होते हैं। एक पुष्पक्रम अंकुरित होने और बढ़के पूर्ण विकसित होकर परिपक्व फल उत्पादित करने में 44 महीने लग जाते हैं। पेड़ पर हर महीने एक पुष्पक्रम विकसित होता है, अतः पेड़ के शिखर पर विकास की विविध अवस्था वाले पुष्पक्रम सालभर मौजूद होते हैं। नारियल पेड़ पर सालभर पत्ते और पुष्पक्रम का लगातार उत्पादन होते रहने के कारण इसके लिए पानी और पौष्टिक अपेक्षाओं की कोई चरम अवधि नहीं होती है जैसा कि खेत के अन्य फसलों के लिए होती है। नारियल पेड़ अपनी बढ़वार के दौरान मिट्टी के सीमित क्षेत्र से ही लगातार पौष्टिक तत्वों का अवशोषण करके पेड़ के ऊपरी हिस्सों तक पहुँचाता रहता है। अतः किसी भी परिस्थिति में यदि पौष्टिक तत्वों की कमी होती है तो पादप वृद्धि पर इसका बुरा प्रभाव पड़ता है जिससे पैदावार कम होने लगती है। इससे यह पता चलता है कि उच्चतर उत्पादकता और पेड़ की अच्छी बढ़वार कायम रखने के लिए सालभर मिट्टी में अनुकूल नमी और पर्याप्त पौष्टिक तत्वों की उपलब्धता बनाए रखना कितना अनिवार्य होता है।

नारियल की जैविक खेती

मृदा स्वास्थ्य प्रबंधन

परंपरागत रूप से ही नारियल के लिए हरे पत्तों की खाद और पशु खाद का प्रयोग करते आ रहे हैं। यह मिट्टी की उर्वरता और उत्पादकता बनाए रखने में सहायक होता है। किंतु भूमि की उपलब्धता, विशेषकर हरी खाद फसलों की खेती के लिए, और अन्य जैविक खादों की आपूर्ति में कमी के कारण बड़े पैमाने पर जैविक खादों का प्रयोग अत्यंत मुश्किल हो गया है। पोषण और मृदा स्वास्थ्य प्रबंधन के लिए जैविक और जैव आदान सामग्रियों पर आधारित प्रौद्योगिकियाँ विकसित की गई हैं।

नारियल थाला प्रबंधन

किसी भी एक फलीदार हरी खाद फसल, जैसे *प्यूरेरिया फेसियोल्वायड्स*(उष्णकटिबंधीय कुडज़ू), *मिमोसा इनविसा*(छुई-मुई), कैलापगोणियम म्यूकनोइड(कैलोपो) और विग्ना अनगुइकुलैटा(लोबिया) उगाना पर्यावरण में नत्रजन यौगिकीकरण के लिए सहायक होता है और ये प्रति थाला औसतन लगभग 15-20 कि.ग्रा.हरी खाद का योगदान भी दे सकते हैं। इन्हें

थाला प्रबंधन

उष्णकटिबंधीय कुडजू

लोबिया

कुलथी

थाले में मिलाने से नत्रजन(प्रति ताड़ लगभग 100-150 ग्राम) और अन्य प्रमुख पौष्टिक तत्व उपलब्ध होने के साथ साथ लाभकारी सूक्ष्मजीवों की संख्या में और एंजाइमी क्रियाओं में बढ़ोत्तरी होती है और तद्वारा मिट्टी की उर्वरता बढ़ जाती है।

यह एक सस्ती विधि है जिसे लघु किसान भी अपना सकते हैं। मई-जून महीनों में नारियल पेड़ों के थालों में हरी खाद फसलों के बीज बो सकते हैं और जब एक या दो पौधों पर फूल निकलने लगें तो, पौधों को उखाड़कर थालों में मिलाया जा सकता है। यदि सिंचाई की व्यवस्था करें तो हरी खाद फसलें साल में दो या तीन बार भी उगाई जा सकती हैं। अगस्ति(सेस्बनिया), सनई, ढैंचा, मुंगन और ग्वार फली आदि भी कुछ प्रभावी और किफायती हरी खाद फसलें हैं। हरी खाद फसलें नारियल पेड़ों के बीच की जगह में और अंतर फसल लगाने के बाद बाग में बची जगह में भी लगायी जा सकती हैं। एक हेक्टर के नारियल बाग की अंतर जगह से 15-20 टन ताज़ा जैव भार मिट्टी में मिलाए जा सकते हैं।

ग्लिरिसिडिया से वीथि सस्यन

ग्लिरिसिडिया, जो कि तेज़ी से बढ़ने वाली बहुवर्षी फलीदार हरी खाद पेड़ फसल है, नारियल बागों में और बाग की सीमाओं में उगाने से बहुत बड़ी मात्रा में नत्रजन संपुष्ट जैवभार प्राप्त किए जा सकते हैं। इसकी खेती तटीय बलुई मिट्टी में भी की जा सकती है जहाँ किसी भी अन्य हरी खाद फसल बढ़ती नहीं है। पेड़ की कलमें लगाकर या बीज बोकर भी इसे उगाया जा सकता है। रोपण के लिए तने से काटी एक मीटर लंबाई की कलमों का या पोली बैग/ऊँची क्यारियों में पाले गए 3 से 4 महीने आयु के पौधों का इस्तेमाल किया जा सकता है।

नारियल बाग में ग्लिरिसिडिया से वीथि सस्यन

रोपण

दक्षिण पश्चिमी और उत्तरपूर्वी मानसून के दौरान 1 x 1 मीटर की दूरी पर इनका रोपण करें। नारियल बाग में और बाग की सीमाओं में चारों ओर तिरछी लकीरों में दो कतारों में ग्लिरिसिडिया के पौधे लगाए जा सकते हैं। तने की कलमें या पौध 30 x 30 x 30 सें.मी. आकार के गड्ढ़े में खड़ी स्थिति में लगायी जा सकती हैं। जल्दी जड़ पकड़ने के लिए प्रति गड्ढ़ा 50 ग्राम रॉक फोसफेट का प्रयोग करें। पौधों की ऊँचाई 1 मीटर तक बनाए रखने के लिए पौधों की छँटाई करती रहें। पौध लगाने के एक वर्ष के बाद छँटाई शुरू की जा सकती है और साल में तीन बार छँटाई की जा सकती है। भा.कृ.अनु.प.-केंद्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान में किए गए अध्ययनों से पता चलता है कि एक हेक्टर के नारियल बाग में नारियल पेड़ों की दो कतारों के बीच 1 x 1 मीटर की दूरी में ग्लिरिसिडिया के तीन कतारों का रोपण करके फरवरी, जून एवं अक्तूबर में छँटाई करने से 8 टन जैवभार का उत्पादन होता है, जिसे बाग में मिलाने से और इसका विघटन होने पर नत्रजन, फोसफरस और पोटेशियम की क्रमशः 90, 25 और 15 प्रतिशत अपेक्षाओं की आपूर्ति होती है।

नारियल के बीच हरी खाद फसल

ढैंचा

छुई-मुई

जैवभार का पुनर्चक्रण

175 नारियल पेड़ के साथ अच्छी तरह अनुरक्षित एक हेक्टर के नारियल बाग में पत्तों, शूकीछदों, गुच्छों के अपशिष्ट और छिलके के रूप में प्रति वर्ष 14-16 टन जैवभार मिल जाने का अनुमान है।

कयर रेशा निकालने के लिए अधिक मात्रा में नारियल छिलके का उपयोग किया जाता है, किंतु कयर गूदा, जो कि कयर प्रसंस्करण फैक्टरी का उपोत्पाद है, का कोई उपयोग नहीं किया जाता है और अक्सर इसे फेंका जाता है। यदि इसे जलाएं तो यह पर्यावरण प्रदूषण का कारण बन जाता है। इसमें निहित उच्च लिगनिन संघटक और नारियल अपशिष्टों के लिगनोसेलुलोस समूह की विशेषताओं के कारण स्वाभाविक रूप से इन अपशिष्टों का विघटन और पोषण निर्गमन अत्यंत धीमी गति से होता है। इस अपशिष्ट जैवभार का पुनर्चक्रण समुचित रूप में करने से बहुत बड़ी हद तक नत्रजन और अन्य पौष्टिक तत्वों की अपेक्षाओं की आपूर्ति हो सकती है। यह ताड़ से छोड़े गए पौष्टिक तत्वों को बाहरी स्रोतों पर निर्भर होकर बगैर आंतरिक रूप से फिर से प्रदान करने में भी सहायक होता है।

वर्मीकंपोस्टिंग

वर्मीकंपोस्ट बनाने की प्रक्रिया में यूड्रिलस प्रजाति के केंचुए की मदद से जैवभार को उपयोगी कंपोस्ट के रूप में परिवर्तित किया जाता है। नारियल बाग में ही उपलब्ध नारियल पत्तों और अन्य जैवभार जैसे अंतर फसलों के अपशिष्ट, अनन्नास के अपशिष्ट, केले का तना और पत्ते तथा ग्लिरिसिडिया हरी खाद आदि का प्रयोग करके वर्मीकंपोस्ट उत्पादित किया जा सकता है। नारियल पत्तों से वर्मी कंपोस्ट बनाने पर कुल सूक्ष्मजीवीय और लाभकारी सूक्ष्मजीवियों की संख्या बढ़ जाएगी। सिमेंट टंकियों में तथा नारियल थालों में बनाए गए गड्ढ़ों में भी वर्मीकंपोस्ट बनाने की प्रक्रिया अपनाई जा सकती है। यदि बड़े पैमाने पर कंपोस्ट बनाना हो तो स्थायी सिमेंट टंकी या ईंट की टंकी का निर्माण किया जा सकता है ताकि आहार पदार्थ की मात्रा, उचित नमी, तापमान और अन्य संघटक जो कि वर्मीकंपोस्ट के प्रभावी उत्पादन और गुणवत्ता के लिए अनिवार्य हैं, अनुकूलतम बनाए रख सके। यह चूहों, चींटियों, पक्षियों और जंगली सुअरों जैसे परभक्षियों से केंचुओं का समुचित संरक्षण भी करता है।

गड़ढ़े में वर्मीकंपोस्ट बनाने की विधि

वर्मीकंपोस्ट

केंचुए

जल में घुलनीय उर्वरक

वर्मी कंपोस्ट बनाने वाली क्यारियों में धीरे से पानी बहा देने से या पानी में वर्मी कंपोस्ट थोड़े समय के लिए डालकर रखने से वर्मी कंपोस्ट टंकी के जल में घुलनीय संघटक निक्षालक के रूप में एकत्रित किया जा सकता है। यह वर्मीवैश शहद के रंग का होता है और इसका पीच 8.5 होता है। इसमें मुख्य और गौण सभी पौष्टिक तत्व पर्याप्त मात्रा में निहित होते हैं। आईएए और जीए जैसे वृद्धि कारक होर्मोन भी वर्मीवैश में मौजूद होते हैं। समुचित रूप से पानी मिलाने के बाद पत्तों पर प्रयोग करने के लिए भी यह उपयुक्त है। वर्मीवैश का प्रयोग करने से सब्जियों और सजावटी पौधों की बेहतर बढ़वार पायी गयी है। इसप्रकार वर्मी कंपोस्ट बनाने की प्रक्रिया से नारियल अपशिष्टों का निपटारा सस्ते तथा पर्यावरण अनुकूल तरीके से होता है और साथ साथ नारियल बाग में ही उच्च गुणवत्ता की जैव खाद का उत्पादन भी हो जाता है। साल के अधिकांश समय पर यह प्रकिया चलायी जा सकती है, अतः किसान परिवार को और स्वयं सहायता समूहों को रोज़गार के अवसर सृजित होने के साथ साथ अतिरिक्त कमाई भी प्राप्त हो जाती है।

चार नारियल पेड़ों के बीच की जगह पर खोदे गए गड्ढ़ों में वर्मीकंपोस्ट बनाने से 90 दिनों की कंपोस्टिंग अवधि में 70 प्रतिशत की औसतन उपज प्राप्त होती है। थालों में ही कंपोस्ट बनाने से पत्तों के परिवहन की और वर्मीकंपोस्ट का प्रयोग करने की लागत कम होती है।

वर्मीकंपोस्ट का औसतन पौष्टिक संघटन है 1.2-1.8 प्रतिशत नत्रजन, 0.1-0.2 प्रतिशत फोसफरस और 0.2-0.4 प्रतिशत पोटेशियम के साथ जैविक कार्बन(17.84 प्रतिशत) और कार्बन/नत्रजन अनुपात(9.95:1.00)। ढींगरी खुंभी के उत्पादन के लिए प्रयुक्त नारियल अपशिष्ट भी वर्मी कंपोस्ट बनाने के लिए उपयोगी पाया गया है और इसमें उच्चतर मात्रा में पौष्टिक तत्व(1.0 से 1.3 प्रतिशत नत्रजन और 0.08 से 0.13 प्रतिशत फोसफरस) निहित होते हैं और इसका कार्बनःनत्रजन अनुपात कम होता है। इससे बनाए गए कंपोस्ट में भी आयरन, ज़िंक, कोपर और मैंगनीस जैसे सूक्ष्म पौष्टिकतत्व उच्चतर मात्रा में निहित होता है।

कयर गूदे का कंपोस्ट बनाना

कयर प्रसंस्करण इकाइयों से भारी मात्रा में उपलब्ध होने वाली जैव सामग्री है कयर गूदा। 1 कि.ग्रा. कयर रेशा निकालने पर 2 कि.ग्रा. कयर गूदा उत्पन्न होता है। एक नारियल के छिलके से लगभग 180 ग्राम कयर गूदा प्राप्त होता है। हालांकि कयर गूदे की कई लाभकारी विशेषताएं होती हैं जैसे कि यह मिट्टी की भौतिक विशेषताएं सुधारता है और इसकी जलधारण क्षमता भी काफी अधिक होती है, किंतु इसमें अधिक मात्रा में लिगनिन(75 प्रतिशत) और फाइटोटोक्सिक पोलिफेनोल निहित होने और नत्रजन की मात्रा कम होने के कारण खाद के रूप में इसका सीधा प्रयोग अनुशंसित नहीं है। अतः कंपोस्ट के रूप में परिवर्तित करने के बाद ही मिट्टी में इसका प्रयोग किया जा सकता है। भा.कृ.अनु.प.-केन्द्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान में बड़े पैमाने पर कयर गूदे के कंपोस्टीकरण के लिए प्रौद्योगिकियों का मानकीकरण किया गया है। हरेक 100 ग्राम कयर गूदे के लिए कुक्कुट खाद, चूना और रोक फोसफेट क्रमशः 10, 0.5 और 0.5 कि.ग्रा. की दर पर मिलाए जाते हैं और 0.2 प्रतिशत स्तर पर जैवपोलिमर को विघटित करने वाले सूक्ष्मजीवों को मिलाया जाता है। कच्चे कयर गूदे का कार्बनःनत्रजन अनुपात 100-112:1 है, जिसे 40-45 दिनों की छोटी अवधि में ही 17-24:1 अनुपात की उत्कृष्ट जैव खाद के रूप में परिवर्तित किया जा सकता है। प्लूरोटस प्रजाति के फफूँद में, सेलुलैसेस और लैक्टेसेस जैसे एंजाइमों को उत्पादित करके कयर गूदे में मौजूद सेलुलोस और लिगनिन को विघटित करने की क्षमता निहित है। इससे लिगनिन संघटक भी पर्याप्त मात्रा में कम हो जाता है।

जैव उर्वरकों का प्रयोग

नारियल की जड़ें *एज़ोस्पाइरिलम लिपोफेरम, एज़ोस्पिरिलम ब्रेज़िलेंस, हेर्बास्पाइरिलम फ्रिसिंजेंस, बैसिलेस* प्रजाति, *बरखोल्डेरिया* प्रजाति, *एज़ोरेल्स* प्रजाति, *आर्थ्रोबैक्टर* प्रजाति *और बेइजेरिंकिया इंडिका* जैसे नत्रजन यौगिकीरण बैक्टीरियाओं का ठिकाना होती हैं। *स्यूडोमोनास* प्रजाति और *बैसिलस* प्रजाति के बैक्टीरिया और *एस्पेर्जिलस* प्रजाति और *पेनिसिलम* प्रजाति के फफूँद

नारियल जड़ क्षेत्र के प्रमुख फोसफेट विलेयीकारक है। स्थानीय रूप से उपलब्ध सामग्रियों का प्रयोग करके इन सूक्ष्मजीवों का बड़ी संख्या में प्रवर्धन और उत्पादन किया जा सकता है और टिकाऊ जैविक नारियल खेती के लिए जैव उर्वरक के रूप में इसका इस्तेमाल किया जा सकता है। जैव नारियल खेती में नत्रजन यौगिकीकरण बैक्टीरिया का जैव उर्वरक सूत्रण *एज़ोस्पिरिलम बैसिलेंस* और फोसफेट विलेयीकरण बैक्टीरिया, *बैसिलस सबटिलीस* का प्रयोग आदान सामग्री के रूप में किया जाता है। मिट्टी में अन्य जैविक सुधार के साथ प्रति वर्ष प्रति ताड़ 100 ग्राम की दर पर इनका प्रयोग किया जाता है। नारियल पौधों की बढ़वार और तंदुरुस्ती बढ़ाने में जैव लेपन एजेंट के रूप में पौध की बढ़वार के लिए सहायक राइज़ोबैक्टीरिया(पीजीपीआर) *स्यूडोमोनस फ्लूरेसेंस* और *बैसिलस सबटिलीस* सूत्रण की अहमियत काफी अधिक है। नारियल आधारित मिश्रित फसल/खेती प्रणाली में जैव उर्वरकों की लाभकारी विशेषताएं अत्यंत महत्वपूर्ण होती हैं क्योंकि सह फसलें मिट्टी में निरंतर पौध अपशिष्ट मिला देती हैं जिनका जैव पुनर्चक्रण होता रहता है। यह मूल परिवेश(राइज़ोस्फियर) के संघटन में परिवर्तन लाता है, जो लाभकारी सूक्ष्मजीवियों की बढ़वार और इसकी संख्या बढ़ाने में सहायक है। इसके साथ पशुपालन उद्यम शुरू करने से लाभकारी सूक्ष्म पादपों के फैलाव हेतु अनुकूल वातावरण भी सृजित होता है। यही नहीं एकल फसल के रूप में नारियल की खेती की तुलना में नारियल आधारित बहु फसल प्रणाली में पादपरोगजन के रूप में मिट्टी के आवासी बैक्टीरिया की परिवर्तन क्षमता बहुत कम पायी गई है। जब कोको के साथ नारियल की खेती की जाती है, राइज़ोस्फियर क्रिया बढ़ जाती है और फोसफेट का बेहतर संघटन संपन्न होता है। यही नहीं नत्रजन के यौगिकीकरण के साथ साथ राइज़ोस्फियर में ऑक्सीन एवं जिबरेलिन जैसे वृद्धि तत्वों का उत्पादन होता है जो कि पैदावार बढ़ाने में सहायक पाया गया है।

मिट्टी का संशोधन और खेती प्रणालियाँ भी मूलपरिवेशी सूक्ष्म वनस्पतिजात में दीर्घ परिवर्तन लाता है, जो कि निर्दिष्ट सूक्ष्मजीवों की वृद्धि के लिए अनुकूल होता है। इससे पौध बेहतर तरीके से बढ़ती है और पैदावार भी अधिक प्राप्त होती है। गोबर से मिट्टी का जैव संशोधन करने से वेसिकुलार आर्बस्कुलर माइकोराइज़ल का बसाव और नारियल पेड़ के जड़ क्षेत्र में फोसफेट विलेयीकरण बैक्टीरिया की संख्या बढ़ जाती है। अन्य जैविक संशोधनों जैसे अहाता खाद, कयर गूदा, नीम खली और हरी खाद को *बेइजेरिंकिया इंडिका* जैसे सूक्ष्मजीव संरोपकों के साथ मिलाने से मिट्टी में डायाज़ोट्रोफ द्वारा नत्रजन यौगिकीकरण बेहतर हो जाता है।

मिट्टी और नमी संरक्षण

नारियल थालों में पलेवा लगाना

नारियल बागों में मिट्टी की नमी सुरक्षित रखने के लिए नारियल के पत्ते, छिलका और कयर गूदा जैसी जैव सामग्रियों से पलेवा लगाया जा सकता है जो मिट्टी का तापमान कम करने और मिट्टी की सतह से वाष्पन कम करने में सहायक होता है और जड़ की समुचित वृद्धि और मिट्टी के पादपों और जीवजंतुओं का फैलाव सुगम बनाता है। पलेवा लगाने की प्रक्रिया मानसून समाप्त होने के पहले और ऊपरी मिट्टी सूखने से पहले किया जाना चाहिए।

थालों में विविध सामग्रियों से पलेवा

नारियल पत्ता

नारियल छिलका

कयरगूदा

खरपतवार और बाग के अपशिष्ट

पलेवा लगाने के लिए नारियल पत्तों को दो या तीन टुकड़ों में काट लें और थालों में दो तीन परतों में फैला दें। नारियल पेड़ के चारों ओर 1.8 मीटर की दूरी तक थालों को ढकने के लिए 15 से 25 गिरे नारियल पत्तों की ज़रूरत पड़ती है। नारियल के थालों में 10 से.मी. मोटाई में (प्रति ताड़ लगभग 50 कि.ग्रा.) कंपोस्टीकृत कयर गूदे से पलेवा लगाना भी नमी बरकरार रखने के लिए उपयुक्त है। इसके रेशेदार और ढीली प्रकृति के कारण कयर गूदा डालने से मिट्टी की भौतिक विशेषताएं और जलधारण क्षमता बढ़ जाती है और तद्वारा नारियल की उत्पादकता भी बढ़ती है।

पलेवा लगाने के लिए नारियल के छिलके का भी उपयोग किया जा सकता है। एक थाले में पलेवा लगाने के लिए लगभग 250-300 छिलके की ज़रूरत पड़ती है। आम तौर पर पलेवा ताड़ से दो मीटर की दूरी तक लगायी जाती है। मिट्टी की नमी सुरक्षित रखने के अलावा नारियल छिलका महत्वपूर्ण जैविक सामग्री भी है और यह पौधों के लिए उपयुक्त पौष्टिक तत्वों का भी बेहतर स्रोत है। सूखा वज़न के आधार पर औसतन संयोजन 0.23 प्रतिशत नत्रजन, 0.04 प्रतिशत P_2O_5, 0.78 प्रतिशत K_2O, 0.08 प्रतिशत कैलशियम और 0.05 प्रतिशत MgO है।

अंतर जगहों में नारियल छिलका गाड़ना

गड्ढ़ों में छिलका गाड़ना

नारियल पेड़ों की दो कतारों के बीच 100 से.मी.चौडाई X 50 से.मी. गहराई और सुविधाजनक लंबाई के गड्ढ़े बनाने चाहिए और इसके अंदर निचली परत में नारियल छिलके का भीतरी भाग ऊपर की ओर करके और ऊपरी परत में छिलके का भीतरी भाग नीचे की ओर करके भरना चाहिए।

नारियल थालों के चारों ओर अर्ध चंद्र आकार में बाँध बनाना

हल्के ढलान वाले (15-20 प्रतिशत) क्षेत्रों में समतल थाला बनाते हुए यह उपाय अपनाया जाए कि ऊपरी भाग से मिट्टी खोदकर निचले भाग में भरें ताकि अंदर से ऊपरी भाग की ओर थोड़ा ढलान बनाया रख सके। थाला बनाने के बाद खोदकर निकाली गई मिट्टी से थाले के निम्नवर्ती पार्श्व में 30 सें.मी. ऊँचाई और 50 सें.मी. से कम चौड़ाई वाला बाँध बनाएं और बाँध पर हरेक कतार के बीच 20 सें.मी. दूरी और दो पौधों के बीच 20 सें.मी. दूरी छोड़ते हुए दो कतारों में अनन्नास के पौधे लगाएं। बाँध बह जाने वाले पानी को रोककर

नारियल पेड़ के चारों ओर अर्ध चंद्राकार में बाँध

रखता है और थाले के अंदर ही इसे इकट्ठा करता है और यह ज़मीन के नीचे की ओर रिस जाता है। अनन्नास बाँध को सुरक्षित और मज़बूत बनाया रखता है। इसका फायदा है कि फल प्राप्त होने के साथ साथ इससे अतिरिक्त आय भी प्राप्त होती है।

नारियल छिलके से भरी खाइयाँ

ऐसी जगह पर, जहाँ भूमि का ढलान अधिक होता है, नारियल पेड़ों की दो कतारों के बीच 50 सें.मी. चौडा X 50 सें.मी.गहरा और सुविधाजनक लंबाई के गड्ढ़े बनाएं और इन्हें नारियल छिलकों से भरें। छिलके इसप्रकार गाड़ दें कि निचली परत में नारियल छिलके का भीतरी भाग ऊपर की ओर करके और ऊपरी परत में छिलके का भीतरी भाग नीचे की ओर करके रखें। जैसा कि अर्ध चंद्र बाँध में किया था यहाँ भी निम्नवर्ती भाग पर बाँध बनाकर इसकी सुरक्षा के लिए अनन्नास के पौध लगाएं।

किनारों पर अनन्नास के साथ जलसंचयन गड्ढ़े

सभी ढलानों में मिट्टी और पानी का संरक्षण करने हेतु जलसंचयन गड्ढ़े (1.5 मी. लंबाई X 0.5 मी. चौडाई X 0.5 मी.गहराई) बनाएं। खोदी गई मिट्टी से गड्ढ़े के निचले हिस्से पर बाँध बनाएं और उस पर अनन्नास के पौध लगाएं। ये गड्ढ़े खाली भी रखे जा सकते हैं या इसमें छिलके भरे जा सकते हैं।

अनन्नास के पौधों के बगल में नारियल से भरे गड्ढे

जलसंचयन गड्ढे के किनारों पर अनन्नास के पौधे

मिट्टी का कटाव कम करने हेतु छादन फसलें

कैलोपो, कुडजू, लोबिया जैसी फसलें हल्के या तीव्र ढलान वाले नारियल बागों में उगाने से यह हरी खाद फसल के रूप में ही नहीं बल्कि मिट्टी का संरक्षण करने वाले छादन फसल के रूप में भी कार्य करता है जो बारिश का प्रभाव, विशेषकर बारिश की तीव्रता अधिक होने के अवसर पर, कम करके मिट्टी को सुरक्षित रखता है। जिससे बारिश का पानी मिट्टी में रिस जाता है। यह मिट्टी और पौष्टिक तत्वों का नष्ट रोकने में भी सहायता करता है।

पौधा स्वास्थ्य प्रबंधन

जैव खेती प्रणाली में कीटों एवं रोगों के प्रबंधन की नींव प्रकृति के स्वाभाविक संतुलन पर निर्भर है। इस पहलू के मद्देनज़र जैव नियंत्रण एजेंटों के प्रयोग की अहम भूमिका होती है। परभक्षी(वे कीट जो रोग कीटों को पूरा पूरा या आंशिक रूप से खा लेता है), परजीवी(वे कीट जो अपनी संतति को उत्पादित करने के लिए दूसरे कीटों का उपयोग करता है जिससे इस प्रक्रिया में रोग कीट मर जाता है) और रोगजनक(वे रोग जो रोग कीटों को मार देता है या इसकी वृद्धि दर कम करता है) आदि कुदरती शत्रु हैं। जैविक बागों के परभक्षी कीटों में लेडी बर्ड भृंग, लेसविंग्स और मकड़ी आते हैं। परजीवी कीटों में ततैया और मक्खी शामिल है जो रोग लार्वे या इल्ली जैसे कीटों पर अंडा डालते हैं। जैव बाग लगाते समय कीट एवं रोग रोधी किस्मों के प्रयोग पर विशेष रूप से ज़ोर देना चाहिए। कीटों को मार भगाने के लिए नीम गरी से उत्पादित नीम आधारित कीटनाशी का प्रयोग किया जा सकता है। छिड़काने के लिए गाय का मूत्र पानी मिलाकर उपयोग किया जा सकता है। नागदोना(आर्टिमिसिया वुलगारीस), कंडाली(उर्टिका डायोइका पोलिगोनम) और यूपाटोरियम ग्लैंडुलोसम जो कि बाग में काफी अधिक पाए जाते हैं का प्रयोग कुछ पत्ता भक्षी कीटों के खिलाफ प्रभावी पाया गया है। अंतर फसलों के रोपण का समय और जगह के ध्यानपूर्वक प्रबंधन से रोगकीटों की रोकथाम के साथ साथ इनके कुदरती परभक्षी जो कि इन कीटों, रोगों और खरपतवारों के नियंत्रण में कुदरती रूप से सक्षम है, की संख्या बढ़ाने में मदद मिलती है। साफ सुथरी खेती, मिट्टी के रोगजनकों का प्रतिरोध करने और पौध की वृद्धि बढ़ाने के लिए मिट्टी का स्वास्थ्य सुधारना और नियमित आवर्तन में विविध फसल लगाना, रोगों, कीटों और खरपतवारों के नियंत्रण हेतु कुद्‌रती जैविक एजेंटों को बढ़ावा देना, कीटों, पक्षियों और जानवरों से संरक्षण देने हेतु बाह्य घेरा लगाना, परागणकारियों और कीटों के कुदरती शत्रुओं को बढ़ावा देकर आवास व्यवस्था में बदलाव लाना और फेरोमोन आकर्षियों जैसे अर्ध रासायनिकों का उपयोग करना और कीटों को पकड़ने के लिए फँदा लगाना आदि आमतौर पर प्रयोग की जाने वाली दूसरी विधियाँ हैं।

सूक्ष्म जीवों, परजीवियों, परभक्षियों और अदरक एवं नीम से कुदरती पौधा आधारित कीटनाशियों का प्रयोग नारियल और अन्य अंतर फसलों के कीटों के प्रबंधन में प्रभावी पाया गया है। नारियल और अन्य सह फसलों के कीटों और रोगों के नियंत्रण हेतु जैवनियंत्रण एजेंटों के प्रयोग के कई उदाहरण हैं। प्रमुख कीटों और रोगों तथा उनकी प्रबंधन प्रणालियाँ जिनका अनुसरण जैव खेती प्रणाली में की जानी है, का विवरण सारणी 1 में दिया गया है। यह अत्यंत उपयुक्त होगा कि नारियल के विविध कीटों और रोगों के प्रबंधन में जो विधियाँ अपनायी जाती हैं वे सामूहिक आधार पर अपनायी जाएं। जैविक कीटनाशी के रूप में प्रयोग करने के लिए उपयुक्त कई पौधे हैं जिन्हें फसल प्रणाली में शामिल किया जा सकता है।

जैविक खेती

भा.कृ.अनु.प.-केन्द्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान, कासरगोड में विविध जैव खेती प्रणालियों के अंतर्गत नारियल पेड़ों के निष्पादन का तथा ये उपचार अपनाने से मिट्टी की

सारणी 1: नारियल की जैविक खेती के अंतर्गत कीटों और रोगों का प्रबंधन	
कीट प्रबंधन	
गैंडा भृंग	: बाग साफ-सुथरा रखें। : कीट प्रकोपित ताड़ों से भृगों को बीटल हुक से निकालें। : तर्कु पत्ते के चारों ओर तीन पर्ण कक्षों में तीन नैफ्थलीन गोलियाँ रखकर रेत से भरें। : खाद गड्ढों और अन्य संभावित प्रजनन स्थानों को भाँट के पत्ते और कोमल तने से या मेटाराइज़ियम एनिसोप्ली(हरी मसकार्डिन कवक) से उपचारित करें। : प्रति हेक्टर 10-15 की दर पर बैकुलोवायरस ओरिक्टस ग्रस्त वयस्क भृंगों को छोड़ दें।
लाल ताड़ घुन	: बाग साफ-सुथरा रखें। : जैसा कि गैंडा भृंग का प्रकोप होने पर किया जाता है, पर्ण कक्ष भरें। : कीटों को आकर्षित करने के लिए खमीर से सक्रियित किए गए किण्वित ताड़ी या अनन्नास या गन्ने का रस या शीरा के साथ नारियल लकड़ी फँदा लगाएं। : वयस्क घुनों को आकर्षित करने और मारने के लिए फेरोमोन जाल का प्रयोग करें(यह सामूहिक स्तर पर अपनाया जाए)।
पत्ता भक्षी इल्ली	: पहले कीट प्रकोपित पत्तों को काटकर जला दें। : बाग में सावधिक रूप से *गोनियोज़स नेफान्टिडिस*, *एलास्मस नेफान्टिडिस* और *ब्रेकाइमेरिया नोसटोइ* जैसे लार्वा/प्यूपा परजीवियों को छोड़ दें।
कोरिड बग	: नए खुले पुष्पक्रमों पर नीम आधारित जैव कीटनाशी का प्रयोग करें। : कीट प्रकोपित ताड़ से गिरे सभी बुतामों को एकत्रित करके नष्ट करें।
नारियल एरियोफिड माइट	: कीट प्रकोपित ताड़ से गिरे सभी बुतामों को एकत्रित करके नष्ट करें। : शिखर के अवयस्क गुच्छों पर 2 प्रतिशत नीम तेल + लहसुन मिश्रण या वाणिज्यिक नीम दवा एजाडिरेक्टिन 0.004 प्रतिशत(प्रति लीटर पानी में 4 मि.ली. की दर पर नीमाज़ाल टीआईएस 1 प्रतिशत) का प्रयोग करें।
रोग प्रबंधन	
कली सड़न	: पूरी तरह रोग प्रकोपित ताड़ों को हटाकर बागों को स्वच्छ रखें। : साफ किए गए शिखर पर 10 प्रतिशत बोर्डो पेस्ट लगाएं। रोग प्रकोपित ताड़ के तर्कु पत्ते और शिखर पर 1 प्रतिशत बोर्डो मिश्रण का छिड़काव करें। बाग में जल निकासी की पर्याप्त सुविधा प्रदान करें और अधिक सघनता में पौध न लगाएं।
जड़ मुर्झा	: निर्दिष्ट सभी रोगरोधी उपायों का सख्ती से अनुपालन करें। : थालों में हरी खाद फसल उगाएं और मिट्टी में मिलाएं और पर्याप्त मात्रा में जैव खाद का प्रयोग करें।
पत्ता सड़न	: अंकुर से तथा निकटस्थ दो पत्तों से सड़े हुए हिस्सों को हटाएं। : शिखर और पत्तों पर 1 प्रतिशत बोर्डो मिश्रण का छिड़काव करें। : स्यूडोमोनास फ्ल्यूरेसेंस या बैसिलस सब्टिलिस का टैल्क आधारित दवा अलग अलग से या एकसाथ प्रति ताड़ 500 मि.ली. में 50 ग्राम की दर पर प्रयोग करें।
तना स्रवण	: जल निकासी की समुचित व्यवस्था करें और ताड़ों को स्वस्थ बनाने के लिए अनुशंसित मात्रा में जैव उर्वरक का प्रयोग करें। : अन्य जैविक सामग्रियों के साथ थालों में प्रति ताड़ 5 कि.ग्रा.की दर पर नीम खली का प्रयोग करें।

नारियल बागों में मिश्रित खेती

नारियल बागों में फसलों और पशुपालन के एकीकरण (डेरी, कुक्कुट पालन, बतख पालन, मछली पालन जैसे उद्यम और अंतर जगहों में छाया सहनशील चारा घास फसलों की खेती) से जैविक खेती के लिए अपेक्षित विविधता सुनिश्चित हो जाती है। इससे अतिरिक्त आमदनी ही नहीं बल्कि रोज़गार के अधिक अवसर भी सृजित होते हैं। इसका फायदा यह भी है कि नारियल के भाव में होने वाले घट-बढ़ से भी किसानों को राहत मिलती है। जहाँ एक ओर फसल के अपशिष्ट और चारा जानवरों के लिए आहार प्रदान करता है, पशुओं की खाद और कूड़ा जैविक सामग्री और पादप पोषकतत्वों का नवीकरणीय स्रोत प्रदान करता है। फसलों और पशुओं के अपशिष्टों का पुनर्चक्रण करने से मिट्टी का स्वास्थ्य बरकरार रहता है जिससे उच्च स्तर का जैविक पुनर्चक्रण संभव हो जाता है। इस प्रकार के एकीकरण से मिट्टी की उर्वरता पर प्रजातियों की विविधता का लाभकारी प्रभाव भी अधिकतम होगा। हाइब्रिड नेपियर और गिनिया घास जैसे चारा घास नारियल की छाया में प्रति वर्ष प्रति हेक्टर से 80-120 टन चारा प्रदान करता है। यह संकर प्रजाति के 8 से 12 दुधारू गायों को पालने के लिए पर्याप्त होता है जिनसे पर्याप्त मात्रा में गोबर खाद प्राप्त होता है जो इस प्रणोली की जैविक खाद की अपेक्षाओं को पूरा करने के लिए सहायक होता है। बाग में पर्याप्त क्षमता के बयोगैस प्लैंट भी लगाया जा सकता है ताकि फार्म हाउस के लिए आवश्यक बयोगैस का उत्पादन किया जा सके और इससे निकलने वाली स्लरी का प्रयोग नारियल और अन्य सह फसलों के लिए खाद के रूप में किया जा सकता है।

रासायनिक और जैविक विशेषताओं के प्रभाव का मूल्यांकन करने के लिए वर्ष 2002-03 के दौरान बाग में दीर्घकालीन परीक्षण प्रारंभ किया गया। यह परीक्षण पश्चिम तटीय लंबा जो कि नारियल की लोकप्रिय किस्म है, और चंद्र संकरा संकर किस्म(चावक्काट ऑरंज बौना X पश्चिम तटीय लंबा) पर चलाया गया। ताड़ की आयु 35 वर्ष थी। नारियल के दस वर्ष की पैदावार का विश्लेषण करने पर यह ज्ञात हुआ है कि सभी जैविक खेती उपचारों से दोनों जीनप्ररूपों से उच्चतम पैदावार प्राप्त हुई है। पश्चिम तटीय लंबा की परीक्षणपूर्व अवधि की तुलना में जैविक खेती विधि से पैदावार में 149-162 प्रतिशत वृद्धि हुई। बौनी X लंबी संकर प्रजाति में पैदावार में 144-159 प्रतिशत वृद्धि हुई। जैविक खेती विधियों में गड्ढ़ों में वर्मी कंपोस्टिंग, जैव उर्वरकों का प्रयोग और थालों में छादन फसल लगाना और गड्ढ़ों में वर्मी कंपोस्टिंग, जैव उर्वरकों का प्रयोग और अंतर जगहों में वैनिला और कालीमिर्च लगाने की विधियों में दोनों जीनप्ररूपों में नारियल और खोपरे की उच्चतम उपज प्राप्त हुई। जैविक खेती अपनाने से मिट्टी की जैविक और रासायनिक विशेषताओं में सुधार स्पष्ट रूप से दर्शित हुआ। मिट्टी की जैविक स्थिति इसप्रकार थी कि जैविक उपचार से मिट्टी में बैक्टीरिया, फफूँद, एक्टिनोमाइसेस, नत्रजन यौगिकीरण करने वाले मुक्त जीव, सेलुलोस अपघटक, फोसफेट विलेयक और एज़ोस्पाइरिलम जैसे सूक्ष्मजीव अधिक मात्रा में पाए गए।

नारियल फसल प्रणाली में फसल विविधता

नारियल बाग में जैविक खेती प्रणाली अपनाए जाने पर अंतर/मिश्रित खेती के ज़रिए फसल विविधता बनायी रखनी चाहिए। किसानों को अपनी खेती प्रणाली में फसल विविधता रखते समय बाग का आकार, मौजूदा ताड़ों की संख्या और इनकी प्रकृति, पारिवारिक आवश्यकताएं, फसल के लिए श्रम की अपेक्षा, सालभर प्राप्त आय, विपणन की सुविधा आदि पर खास ध्यान देना चाहिए। नारियल आधारित फसल प्रणाली के अंतर्गत, एक ही ज़मीन का प्रयोग विविध फसलों की खेती के लिए किया जा सकता है ताकि भूमि की उत्पादकता बढ़ायी जा सके। समुचित दूरी रखकर स्थापित नारियल बाग में दो कतारों के बीच और कतारों पर पर्याप्त दूरी छोड़ी होती है जहाँ विविध तरह की मौसमीय और बहुवर्षी फसलों की खेती की जा सकती है। जब साल दर साल अंतर फसलों की खेती करना हो तो विविध फसलों की खेती नियमित रूप से और बारी बारी से करती रहनी चाहिए। फलीदार फसलों की खेती करने से मिट्टी की उर्वरता भी बढ़ जाती है।

साभार: इंडियन होर्टिकल्चर जनवरी-फरवरी 2017

नारियल प्रौद्योगिकी मिशन
नारियल के मूल्य वर्धन में गति लाने के लिए

सरदार सिंह चोयल, उप निदेशक, नाविबो, कोची-11

परंपरागत रूप से नारियल की खेती खोपरा और नारियल तेल के उत्पादन के लिए की जाती है और इसलिए नारियल का भाव इन दोनों उत्पादों के भाव पर निर्भर रहता है। जब खोपरा और नारियल तेल के भाव में गिरावट होती है, तब नारियल के भाव पर भी बुरा प्रभाव पड़ता है और सरकार के न्यूनतम समर्थन भाव योजना के बावजूद भी नारियल किसानों को भारी नुक्सान होता है। किसानों को अच्छा-खासा, स्थायी और किफायती दाम सुनिश्चित करने में मूल्य समर्थन योजना का भी कोई खास प्रभाव नहीं पड़ा है। इस संदर्भ में, यह एहसास हो गया था कि उत्पाद विविधीकरण और मूल्य वर्धन से ही किसानों को अपने उत्पादों के लिए बेहतर भाव प्राप्त हो सकते हैं। इसप्रकार उत्पाद विविधीकरण और मूल्य वर्धन के ज़रिए नए उत्पाद विकसित किए गए और इसका वाणिज्यीकरण किया गया। नारियल का भाव नियंत्रित करने में इन उत्पादों की भी अपनी भूमिका ज़रूर होगी।

नारियल फसल कई प्रकार के कीटों और पेड़ को कमज़ोर बनाने वाले जड़मुर्झा, गैनोडेर्मा मुर्झा, तंजाऊर मुर्झा और तटीपका आदि जैसे रोगों का शिकार हो जाती है। यह साफ ज़ाहिर हो चुका था कि नारियल का उत्पादन और उत्पादकता बढ़ाने के लिए इसके कीटों और रोगों पर नियंत्रण पाने और नारियल के विविध मूल्य वर्धित उत्पादों से बेहतर मूल्य हासिल करने के लिए उत्पाद विविधीकरण को बढ़ावा देने की पहल करना अनिवार्य है। यह लघु और सीमांत किसानों को बेहतर आय कमाने में सहायता करेगा जो अपनी जीविका चलाने के लिए नारियल पर निर्भर रहते हैं।

इस प्रसंग में, नारियल किसानों के हितों का संरक्षण करने के लिए वर्ष 2001-02 में तत्कालीन प्रधान मंत्री जी ने नारियल प्रौद्योगिकी मिशन योजना के लोकार्पण की घोषणा की थी। यह मिशन नारियल का उत्पादन और

उत्पादकता तथा उत्पाद विविधीकरण और मूल्यवर्धन बढ़ाने हेतु पर्याप्त, समुचित, सामयिक और समवर्ती कार्रवाई सुनिश्चित करने के लिए मिशन मोड में समुचित परियोजनाओं के ज़रिए सभी प्रयासों का समवाय और समन्वयन करता है तथा समस्याओं का निवारण करता है और कमियाँ पूरा करता है। इससे ऐसा एक तंत्र विकसित होता है जो नारियल खेती को प्रतिस्पर्धी बनाता हो और नारियल किसानों को अच्छा-खासा, किफायती और स्थायी भाव सुनिश्चित करता हो और नूतन नारियल उत्पादों के लिए मार्ग प्रशस्त करता हो।

लक्ष्य और उद्देश्य

नारियल प्रौद्योगिकी मिशन का लक्ष्य नारियल की खेती एवं उद्योग के समग्र विकास हेतु नारियल किसान समूह, उद्योग, विपणन एवं अनुसंधान संगठनों के साथ समन्वयन करना और उत्पाद विविधीकरण तथा मूल्य वर्धन, उत्पादन एवं उत्पादकता सुधार, बाज़ार अनुसंधान और बाज़ार संवर्धन के लिए मिशन मोड पर कार्य करना है। इस योजना का प्रमुख उद्देश्य नारियल के उत्पादन, तुड़ाई उपरांत क्रियाएं एवं खपत श्रृंखला की सभी कड़ियों की तरफ पर्याप्त, समुचित, सामयिक और समवर्ती ध्यान सुनिश्चित करने तथा नारियल उत्पादकों, उद्यमियों और विपणन की समस्याओं का हल करने के लिए अभिग्रहण हेतु प्रौद्योगिकियों का निदर्शन, अधिग्रहण और समर्थन करना है। इस योजना के ज़रिए कुशल रोज़गार सृजित करने के लिए आर्थिक रूप से वांछित विविधीकरण और मूल्यवर्धन को बढ़ावा देना तथा नारियल पर निवेश एवं अवसंरचना विकास से आर्थिक, पारिस्थितिक और सामाजिक लाभ अधिकतम बनाना भी लक्षित है।

मिशन प्रणाली

मिशन प्रणाली का लक्ष्य प्रौद्योगिकी समर्थन हेतु ऐसी विधि विकसित करना है जिसमें मौजूदा कमियाँ दूर करने के लिए सहक्रिया और समवाय शामिल हो। नारियल विकास बोर्ड और अन्य संस्थाओं की मौजूदा योजनाएं मौजूदा पैटर्न में जारी रहेगा और इसका समवाय उस तरीके से किया जाएगा कि समग्र रूप से इसका एकीकरण संभव हो सके। मौजूदा योजनाओं में कीट एवं रोगग्रस्त नारियल बागों का प्रबंधन, उत्पाद विविधीकरण और बाज़ार संवर्धन हेतु प्रौद्योगिकियों का विकास, इसका निदर्शन और अभिग्रहण हेतु बढ़ाव से संबंधित चुनौतियों और मुद्दों के निवारण हेतु जिन समस्याओं का समाधान नहीं हुआ है, उन्हें भी योजना के अंतर्गत शामिल किया गया है। मिशन का उद्देश्य हासिल करने पर विशेष ध्यान देते हुए मौजूदा कार्यक्रमों की छूटी कड़ियों पर भी इस कार्यक्रम के अंतर्गत विचार किया जाएगा।

राष्ट्रीय परिचालन समिति(एन एस सी)

नारियल प्रौद्योगिकी मिशन की गतिविधियों का मार्गदर्शन और अनुवीक्षण करने के लिए तथा योजनाओं में सुधार लाने और इसके प्रभावी कार्यान्वयन हेतु भारत सरकार को उचित उपायों की सिफारिश करने के लिए राष्ट्रीय स्तर पर प्रौद्योगिकी मिशन की एक राष्ट्रीय परिचालन समिति कार्यरत है।

परियोजना अनुमोदन समिति(पी ए सी)

नारियल प्रौद्योगिकी मिशन के अंतर्गत विचार करने हेतु जो परियोजनाएं बोर्ड को प्राप्त होती हैं, इनकी जाँच और समीक्षा राज्य सरकार, अनुसंधान संगठन, बैंक, खाद्य प्रसंस्करण और विपणन क्षेत्र के प्रतिनिधियों को शामिल करके गठित परियोजना अनुमोदन समिति द्वारा की जाएगी और कार्यान्वयन हेतु अनुमोदित की जाएगी।

ध्यानाकर्षण क्षेत्र

1. उत्पाद विविधीकरण, उपोत्पाद उपयोगीकरण और मूल्य वर्धन, उत्पादन और उत्पादकता सुधार एवं बाज़ार विकास पर अनुसंधान और विकास
2. क्षमता संवर्धन और सहभागी योजना एवं कार्यान्वयन
3. अवसंरचना विकास
4. एकीकृत कीट एवं रोग प्रबंधन
5. गुणवत्ता, मात्रा और उत्पादकता सुधार
6. ऋण उपलब्धता और प्रबंधन सुगम बनाना
7. सामूहिक रूप से स्वीकृत और पारिस्थितिक रूप से टिकाऊ योजनाएं जो बड़े पैमाने पर अभिग्रहण योग्य और लंबे समय तक प्रभावी हो।
8. मौजूदा भूमि उपयोग के विवेकपूर्ण प्रबंधन के ज़रिए टिकाऊ कुदरती संसाधन प्रबंधन के साथ गरीबी उन्मूलन
9. तुड़ाई उपरांत प्रसंस्करण, उत्पाद विविधीकरण और मूल्य वर्धन
10. नारियल का कृषि-व्यवसाय

11. परियोजना कार्यान्वयन के दौरान सभी स्तरों पर लोगों को प्रत्यक्ष रूप से शामिल करते हुए लोगों तक न्यायोचित रूप से लाभ पहुँचाना एवं उन्हें न्यायोचित रूप से हिस्सेदार बनाना है, जिसके ज़रिए उनके लिए समुचित भोगाधिकार हिस्सेदारी तंत्र का विकास सुनिश्चित करना

संघटक और कार्यक्रम

कार्यक्रम 1- कीट एवं रोग ग्रस्त नारियल बागों के प्रबंधन हेतु प्रौद्योगिकियों का विकास, निदर्शन और अभिग्रहण

कार्यक्रम 2 - प्रसंस्करण और उत्पाद विविधीकरण हेतु प्रौद्योगिकियों का विकास, अधिग्रहण, निदर्शन, प्रशिक्षण और अभिग्रहण

कार्यक्रम 3 - बाज़ार अनुसंधान और संवर्धन

कार्यक्रम 4 - तकनीकी समर्थन, बाह्य मूल्यांकन और आपातिक अपेक्षाएं

कार्यक्रम 1:कीट एवं रोगग्रस्त नारियल बागों के प्रबंधन हेतु प्रौद्योगिकियों का विकास, निदर्शन और अभिग्रहण

क. प्रौद्योगिकियों का विकास

(i) ध्यानाकर्षण क्षेत्र

- दक्षिण केरल के 8 जिलों में सीरमीय/एलिसा जाँच करके जड़मुर्झा रोगग्रस्त ताड़ों में से रोग मुक्त ताड़ों की पहचान और गुणवत्तापूर्ण रोपण सामग्रियों के उत्पादन के लिए बीज उत्पादन हेतु इन ताड़ों का उपयोग
- एरियोफिड माइट के खिलाफ कुदरती सूक्ष्मजीवीय प्रतिरोधी एजेंट की पहचान
- तमिलनाडु, कर्नाटक, आँध्र प्रदेश और अन्य क्षेत्रों में गैनोडेर्मा/तटीपका/तनास्रवण रोगों के प्रबंधन हेतु जैव एजेंटों का मूल्याँकन
- कीटों और रोगों का प्रकोप कम करने और उत्पादन बढ़ाने के लिए जैव एजेंटों का प्रयोग करके जैव अपशिष्टों के पुनर्चक्रण पर अध्ययन
- लाल ताड़ घुन को फँसाने के लिए बड़े पैमाने पर फेरोमोन का संश्लेषण और बड़ी संख्या में फेरोमोन का प्रवर्धन
- कीटों और रोगों के प्रबंधन की अन्य पहलुएं
- नारियल उत्पादन के लिए खतरनाक कीट और रोग प्रबंधन हेतु प्रौद्योगिकी का विकास
- देश के बाहर उपलब्ध प्रौद्योगिकियों का लागत देकर आयात किया जा सकता है
- बेहतर फसल/खेती प्रणालियों के जरिए कीटों एवं रोगों का नियंत्रण, पोषण एवं जल प्रबंधन सहित उन्नत खेती विधियाँ

(ii) पात्र संस्थान:

- भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद(आई सी ए आर)
- राज्य कृषि विश्वविद्यालय
- गैर सरकारी संगठन
- कोई भी संस्थान जो अनुसंधान चलाने में सक्षम हो

ख. प्रौद्योगिकियों का निदर्शन

कीटों एवं रोगों के प्रबंधन में सफल सभी प्रौद्योगिकियों का निदर्शन

पात्र संस्थान:

- भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद
- राज्य कृषि विश्वविद्यालय
- राज्य कृषि/बागवानी विभाग
- सार्वजनिक क्षेत्र/गैर सरकारी संगठन
- पंजीकृत सहकारी समितियाँ/निजी व्यक्ति/किसान समूह
- कोई भी संस्थान जो प्रौद्योगिकियों का निदर्शन करने में समर्थ हो

ग. प्रौद्योगिकियों का अभिग्रहण

कीटों एवं रोगों के प्रबंधन तथा उन्नत खेती विधियों की सफल सभी प्रौद्योगिकियों का अभिग्रहण

पात्र संस्थान:

- भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद
- राज्य कृषि विश्वविद्यालय
- राज्य कृषि/बागवानी विभाग
- सार्वजनिक क्षेत्र/गैर सरकारी संगठन
- पंजीकृत सहकारी समितियाँ/निजी व्यक्ति/किसान समूह
- कोई भी संस्थान जो प्रौद्योगिकियों के अभिग्रहण में समर्थ हो

कार्यक्रम 2: प्रसंस्करण और उत्पाद विविधीकरण हेतु प्रौद्योगिकियों के विकास, अधिग्रहण, निदर्शन, प्रशिक्षण और अभिग्रहण

क. प्रौद्योगिकियों का विकास

(i) ध्यानाकर्षण क्षेत्र

- नारियल के सुविधाजनक खाद्य पदार्थ, नारियल तेल आधारित चिकित्सीय दवा

- जैव ईंधन और ओलियो रसायनिक
- नारियल खोपड़ी आधारित रसायनिक और नारियल पानी तथा स्किम दूध आधारित पेय
- नारियल लकड़ी का प्रसंस्करण
- प्रयोगशाला स्तर पर विकसित प्रौद्योगिकियों की तकनीकी और आर्थिक व्यवहार्यता परखने के लिए पायलट संयंत्र स्तर पर क्षेत्र परीक्षण करना होगा।
- समुचित क्षेत्रों में उद्यमियों को निदर्शन और प्रशिक्षण देकर प्रौद्योगिकी अंतरित की जानी होगी।
- देश के बाहर उपलब्ध किसी भी प्रौद्योगिकी का आयात किया जा सकता है।

(ii) पात्र संस्थान:

- वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान परिषद् (सी एस आई आर)
- रक्षा खाद्य अनुसंधान प्रयोगशाला(डी एफ आर एल)
- केंद्रीय खाद्य प्रौद्योगिकीय अनुसंधान संस्थान (सी एफ टी आर आई)
- क्षेत्रीय अनुसंधान प्रयोगशालाएं(आर आर एल)
- राज्य कृषि विश्वविद्यालय
- गैर सरकारी संगठन, निजी उद्यमी
- सार्वजनिक क्षेत्र और अन्य अनुसंधान संगठन
- कोई भी संस्थान जो अनुसंधान आयोजित करने में सक्षम हो

ख. प्रौद्योगिकियों का अधिग्रहण, प्रशिक्षण और निदर्शन

प्रसंस्करण और उत्पाद विविधीकरण में सफल सभी प्रौद्योगिकियाँ

पात्र संस्थान:

- वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान परिषद्
- रक्षा खाद्य अनुसंधान प्रयोगशाला
- केंद्रीय खाद्य प्रौद्योगिकीय अनुसंधान संस्थान
- क्षेत्रीय अनुसंधान प्रयोगशालाएं
- राज्य कृषि विश्वविद्यालय
- गैर सरकारी संगठन/पंजीकृत सहकारी समितियाँ/निजी उद्यमी
- सार्वजनिक क्षेत्र और अन्य अनुसंधान संगठन
- सक्षम कोई भी संस्थान/संगठन

ग. प्रौद्योगिकियों का अभिग्रहण

प्रसंस्करण और उत्पाद विविधीकरण में सफल सभी प्रौद्योगिकियाँ

पात्र संस्थान: पंजीकृत सहकारिता समितियाँ/निजी व्यक्ति/उद्यमी/गैर सरकारी संगठन/कोई भी संस्थान जो प्रौद्योगिकियों के अभिग्रहण में सक्षम हो।

कार्यक्रम 3: बाज़ार अनुसंधान और संवर्धन

(i) ध्यानाकर्षण क्षेत्र

1. किसी खास क्षेत्र/राज्य में नारियल विकास की वर्तमान स्थिति का पुनरावलोकन
2. नारियल संबंधी विविध पहलुओं के मुख्य/गौण आंकड़े विकसित करना
3. प्रतिबंधों को पहचानना और इसके निवारणात्मक उपाय सुझाना
4. नारियल के सुनियोजित विकास के लिए ह्रस्वकालीन और दीर्घकालीन कार्यनीतियों का विकास
5. परामर्श सेवाएं, विशेषज्ञ सेवाएं प्रदान करना और उसके अनुसरण में प्रयोगशालाएं स्थापित करना आदि
6. भारत में और विदेश में नारियल उत्पादों को बढ़ावा देने तथा उनके उपयोगीकरण संबंधी सभी अन्य पहलुएं
7. विदेश में उपलब्ध संभावी प्रौद्योगिकियाँ
8. उपभोक्ताओं की पसंद का मूल्यांकन, मूल्यवर्धित उत्पादों का मूल्यांकन और बाज़ार रुख का विश्लेषण
9. नारियल उत्पादों के स्वास्थ्य पहलुओं पर जागरूकता अभियान
10. नारियल उत्पादों के लिए पार्लर स्थापित करने के लिए सहायता देना, मीडिया समर्थन, मुद्रित सामग्री, देश के भीतर और बाहर प्रदर्शनियों/व्यापार मेलाओं में सहभागिता

(ii) अध्ययन/सर्वेक्षण की पहलुएं

क. राज्यों/संघशासित क्षेत्रों/इलाकों/क्षेत्रों में नारियल के विकास हेतु तकनीकी एवं आर्थिक व्यवहार्यता अध्ययन

ख. बाज़ार अध्ययन/विशेष समस्याएं/क्षेत्र विशेष के लिए उपयोगी वस्तु आधारित अध्ययन/अन्य पहलुएं

ग. परियोजना की पहचान, निरूपण, कार्यान्वयन, अनुवीक्षण और मूल्यांकन आदि के लिए विशेषज्ञ सेवाएं

घ. परियोजना अनुमोदन समिति द्वारा यथा अनुमोदित बहु विषयक और विशिष्ट अध्ययन

(iii) पात्र संस्थानः

1. सभी सरकारी एजेंसियाँ, गैर सरकारी संगठन, पंजीकृत सहकारी समितियाँ और निजी व्यक्ति
2. सक्षम कोई भी संस्थान/संगठन

कार्यक्रम 4: तकनीकी समर्थन, बाह्य मूल्यांकन और आपातिक अपेक्षाएं

जब आपातिक अपेक्षाएं उत्पन्न होती हैं, परियोजना आधार पर नारियल खेती, उद्योग और बाज़ार संवर्धन हेतु तकनीकी और वित्तीय समर्थन प्रदान किया जाता है और परियोजना अनुमोदन समिति द्वारा परियोजनाओं का अनुमोदन किया जाता है।

सहायता का प्रतिमान

(1) कीट एवं रोग ग्रस्त नारियल बागों के प्रबंधन हेतु प्रौद्योगिकियों का विकास

(क) प्रौद्योगिकियों का विकास

कीट एवं रोग ग्रस्त बागों के प्रबंधन के लिए प्रौद्योगिकियों के विकास हेतु निम्नलिखित से प्राप्त परियोजनाएं

(क) केन्द्रीय/राज्य सरकारी संगठनों, सार्वजनिक क्षेत्र के संगठनों और सहकारिता समितियों के लिए परियोजना लागत का 100 प्रतिशत वित्तीय सहायता प्रदान की जाती है जो कि 50.00 लाख रुपए तक सीमित है

(ख) गैर सरकारी संगठनों और अन्य संगठनों के लिए परियोजना लागत का 50 प्रतिशत वित्तीय सहायता प्रदान की जाती है जो कि 25.00 लाख रुपए तक सीमित है।

(ख) प्रौद्योगिकियों का निदर्शन

प्रौद्योगिकियों के निदर्शन हेतु निम्नलिखित से प्राप्त परियोजनाएं

(क) केन्द्रीय/राज्य सरकारी संगठनों, सार्वजनिक क्षेत्र की इकाइयों और सहकारिता समितियों के लिए परियोजना लागत का 100 प्रतिशत वित्तीय सहायता प्रदान की जाती है जो कि 25.00 लाख रुपए तक सीमित है

(ख) निजी व्यक्तियों/किसान समूहों/गैर सरकारी संगठनों/निजी कंपनियों के लिए परियोजना लागत का 50 प्रतिशत वित्तीय सहायता प्रदान की जाती है जो कि 10.00 लाख रुपए तक सीमित है।

(ग) प्रौद्योगिकियों का अभिग्रहण

किसान समूहों/गैर सरकारी संगठनों/अन्य संगठनों से इन प्रौद्योगिकियों के अभिग्रहण हेतु प्राप्त परियोजनाओं के लिए परियोजना लागत के 25 प्रतिशत की दर पर वित्तीय सहायता प्रदान की जाती है।

(2) प्रसंस्करण और उत्पाद विविधीकरण हेतु प्रौद्योगिकियों का विकास

(क) प्रौद्योगिकियों का विकास

प्रसंस्करण और उत्पाद विविधीकरण हेतु प्रौद्योगिकियों के विकास के लिए निम्नलिखित से प्राप्त परियोजनाएं

(क) केन्द्रीय/राज्य सरकारी संगठनों, सार्वजनिक क्षेत्र के संगठनों और सहकारिता समितियों के लिए परियोजना लागत का 100 प्रतिशत वित्तीय सहायता प्रदान की जाती है जो कि 75.00 लाख रुपए तक सीमित है

(ख) गैर सरकारी संगठनों, निजी उद्यमियों और अन्य अनुसंधान संगठनों के लिए परियोजना लागत का 75 प्रतिशत वित्तीय सहायता प्रदान की जाती है जो कि 35.00 लाख रुपए तक सीमित है।

(ख) प्रौद्योगिकियों का अधिग्रहण, प्रशिक्षण और निदर्शन

प्रौद्योगिकियों का अधिग्रहण, प्रशिक्षण और निदर्शन के लिए निम्नलिखित से प्राप्त परियोजनाएं

(क) सभी सरकारी और सहकारी समितियों को परियोजना लागत का 100 प्रतिशत सहायता प्रदान की जाती है।

(ख) गैर सरकारी संगठनों, निजी उद्यमियों और अन्य संगठनों को परियोजना लागत का 50 प्रतिशत

(ग) प्रौद्योगिकियों का अभिग्रहण

प्रौद्योगिकियों के अभिग्रहण हेतु निम्नलिखित से प्राप्त परियोजनाएं

(क) गैर सरकारी संगठनों, निजी उद्यमियों और अन्य संगठनों को परियोजना लागत का 25 प्रतिशत वित्तीय सहायता जो कि 50.00 लाख रुपए तक सीमित है।

(ख) अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति के महिला किसानों को परियोजना लागत का 33.3 प्रतिशत वित्तीय

सहायता जो कि 50.00 लाख रुपए तक सीमित है।

(ग) अंडमान एवं निकोबार और लक्षद्वीप संघ शासित क्षेत्रों में उच्च मूल्य कृषि के लिए परियोजना लागत का 50 प्रतिशत वित्तीय सहायता जो कि 50.00 लाख रुपए तक सीमित है।

(3) बाज़ार अनुसंधान और संवर्धन

(क) बाज़ार अनुसंधान

बाज़ार अनुसंधान हेतु निम्नलिखित से प्राप्त परियोजनाएं

(क) सरकारी एजेंसियों और सहकारिता समितियों को परियोजना लागत का 100 प्रतिशत वित्तीय सहायता जो कि 25.00 लाख रुपए तक सीमित है

(ख) निजी व्यक्तियों, गैर सरकारी संगठनों और अन्य संगठनों को परियोजना लागत का 50 प्रतिशत वित्तीय सहायता जो कि 12.50 लाख रुपए तक सीमित है।

(ख) बाज़ार संवर्धन

बाज़ार संवर्धन के लिए निम्नलिखित से प्राप्त परियोजनाएं

(क) सरकारी एजेंसियों और सहकारिता समितियों को परियोजना लागत का 100 प्रतिशत वित्तीय सहायता जो कि 25.00 लाख रुपए तक सीमित है।

(ख) नारियल उत्पादक समितियों के फेडरेशनों (एफपीओ) को परियोजना लागत का 50 प्रतिशत जो कि 6.00 लाख रुपए तक सीमित है।

(ग) गैर सरकारी संगठनों और निजी संस्थाओं को परियोजना लागत का 50 प्रतिशत वित्तीय सहायता जो कि 15.00 लाख रुपए तक सीमित है।

4) तकनीकी समर्थन, बाहरी मूल्यांकन और आपातिक अपेक्षाएं

परियोजना अनुमोदन समिति के निर्णयानुसार आवश्यकता आधार पर समर्थन प्रदान किया जाता है।

परियोजनाओं की प्रस्तुति

क. परियोजना अनुमोदन समिति के विचारार्थ पात्र संगठन/संस्थान द्वारा उत्पाद विविधीकरण और मूल्य वर्धन, कीटों एवं रोगों के नियंत्रण और बाज़ार अनुसंधान के लिए प्रौद्योगिकियों के विकास हेतु अनुसंधान परियोजनाएं समर्पित की जा सकती हैं।

ख. परियोजना अनुमोदन समिति के विचारार्थ पात्र संगठन/संस्थान द्वारा निदर्शन, अधिग्रहण और प्रशिक्षण संबंधी परियोजनाएं समर्पित की जा सकती हैं।

ग. प्रसंस्करण और उत्पाद विविधीकरण हेतु प्रौद्योगिकी अभिग्रहण के लिए परियोजनाएं विस्तृत परियोजना रिपोर्ट के रूप में निर्धारित आवेदन प्रारूप के साथ प्रस्तुत की जानी होगी। अभिग्रहण हेतु परियोजना के लिए समर्थन बैक-एंडेड सब्सिडी के रूप में दिया जाएगा। इसलिए संस्थापक को परियोजना लागत का कम से कम 40 प्रतिशत तक किसी राष्ट्रीयकृत/अनुसूचित बैंक से सावधिक ऋण के रूप में लेनी होगी और बैंक की सावधिक ऋण मंजूरी और मूल्यांकन रिपोर्ट के साथ बोर्ड को परियोजना प्रस्तुत करनी होगी।

घ. पात्र संस्थान/संगठन/कृषक उत्पादक संगठन/अन्य योग्य व्यक्ति द्वारा विविध बाज़ार अनुसंधान, संवर्धनात्मक गतिविधियाँ चलाने के लिए परियोजना अनुमोदन समिति के विचारार्थ बाज़ार अनुसंधान और बाज़ार संवर्धन पर परियोजनाएं प्रस्तुत की जा सकती हैं।

प्रसंस्करण और उत्पाद विविधीकरण हेतु प्रौद्योगिकियों के अभिग्रहण के अंतर्गत सब्सिडी के लिए शर्तें

1) योजना के अंतर्गत बैक एंडेड पूँजी निवेश सब्सिडी उन परियोजनाओं को प्रदान की जाएगी जो तकनीकी और आर्थिक रूप से व्यवहार्य हों।

2) परियोजना अनुमोदन समिति द्वारा अनुमोदित प्रतिमान तथा उद्यमी, बैंक और बोर्ड के बीच निष्पादित समझौता ज्ञापन के आधार पर योजना के अंतर्गत सब्सिडी के लिए मंजूरी दी जाएगी और विमोचित की जाएगी।

3) समझौता ज्ञापन के अनुसार दस्तावेज़ प्रस्तुत करने पर 50 प्रतिशत, 40 प्रतिशत और 10 प्रतिशत के तीन किश्तों में संस्थापक के सब्सिडी रिज़र्व निधि खाते में सब्सिडी जारी की जाएगी।

4) सब्सिडी रिज़र्व निधि खाते में जमा की गई बैक एंडेड सब्सिडी के लिए पाँच वर्ष की लॉक-इन अवधि होगी जो कि समझौता ज्ञापन की शर्तों के अनुसार 3 साल तक कम की जा सकती है।

5) लॉक-इन अवधि पूरी हो जाने के बाद और संपूर्ण सावधिक ऋण की परिसमाप्ति पर(सब्सिडी रिज़र्व निधि खाते में जमा की गई सब्सिडी की समतुल्य राशि को छोड़कर) और समझौता ज्ञापन के अनुसार दस्तावेज़ प्रस्तुत करने पर सब्सिडी को संस्थापक के सावधिक ऋण खाते में समायोजित किया जाएगा।

6) वे उद्यमी, जिन्हें नारियल विकास बोर्ड की सब्सिडी प्राप्त हुई है, किसी अन्य केन्द्र सरकारी सब्सिडी प्राप्त करने के हकदार नहीं होंगे। किंतु, राज्य सरकार और बोर्ड के नियमों के अनुसार वे राज्य सरकार की सब्सिडी प्राप्त कर सकते हैं।

प्रसंस्करण और उत्पाद विविधीकरण हेतु प्रौद्योगिकियों के अभिग्रहण पर परियोजना

प्रसंस्करण और उत्पाद विविधीकरण हेतु प्रौद्योगिकी के अभिग्रहण के अंतर्गत निम्नलिखित परियोजनाएं प्रस्तुत कर सकती हैं:

1) नीरा और मूल्य वर्धित उत्पादों का प्रसंस्करण और परिरक्षण

2) डाब पानी का प्रसंस्करण और परिरक्षण

3) डेसिकेटड नारियल पाउडर, विर्जिन नारियल तेल, सिरका, नेटा डि कोको, नारियल चिप्स, नारियल दूध, दूध क्रीम, स्प्रे ड्राइड नारियल दूध पाउडर, नारियल खोपड़ी पाउडर, नारियल खोपड़ी कोयला, नारियल खोपड़ी आधारित सक्रियित कार्बन आदि के विनिर्माण के लिए

प्रौद्योगिकी मिशन का प्रभाव

अनुसंधान, अभिग्रहण और बाज़ार संवर्धन हेतु कई परियोजनाओं को नारियल प्रौद्योगिकी मिशन के अंतर्गत सहायता प्राप्त हुई है। इनमें से प्रौद्योगिकी अभिग्रहण के अंतर्गत 480 परियोजनाओं को नारियल और नारियल आधारित मूल्य वर्धित उपादों के विनिर्माण के लिए विविध इकाइयाँ स्थापित करने हेतु सहायता दी गई है। ये इकाइयाँ नारियल के विविध मूल्य वर्धित उत्पादों के उत्पादन के लिए भारत में कुल उत्पादित नारियल के 12 प्रतिशत का उपयोग करती हैं। नारियल के भाव निर्णयन में नारियल तेल और खोपरे की जो अहम भूमिका थी इस पर लगाम डालने में मूल्य वर्धित उत्पादों के उत्पादन के लिए नारियल की खपत बहुत बड़ी हद तक सहायक रही है। नारियल किसान समूह को अच्छाखासा, किफायती और स्थायी भाव सुनिश्चित करने में उत्पाद विविधीकरण और नारियल का मूल्य वर्धन नारियल किसानों और सरकार के लिए सहायक रहा है।

उद्यमियों के लिए उपलब्ध प्रौद्योगिकियाँ

1. स्वच्छ तरीके से नीरा उतारना, इसका परिरक्षण तथा नीरा एवं मूल्वर्धित उत्पादों का प्रसंस्करण
2. डाब पानी का प्रसंस्करण, परिरक्षण और पैकेजिंग
3. नम प्रक्रिया के जरिए विर्जिन नारियल तेल का उत्पादन
4. नारियल तेल और अन्य खाद्य तेलों का मिश्रण
5. नारियल दूध, क्रीम और स्प्रे ड्राइड दूध पाउडर
6. सिरका, नारियल चिप्स और नेटा डि कोको के उत्पादन हेतु प्रौद्योगिकी
7. डाब का लघु प्रसंस्करण
8. नारियल अपशिष्टों से आहारीय रेशा

अधिक जानकारी के लिए कृपया संपर्क करें: नारियल विकास बोर्ड, टीएमओसी सेल, केरा भवन, एसआरवी रोड, कोची-682011, दूरभाष: 0484-2376265, 2377267, 2377266, ईमेल:cdbtech@gmail.com

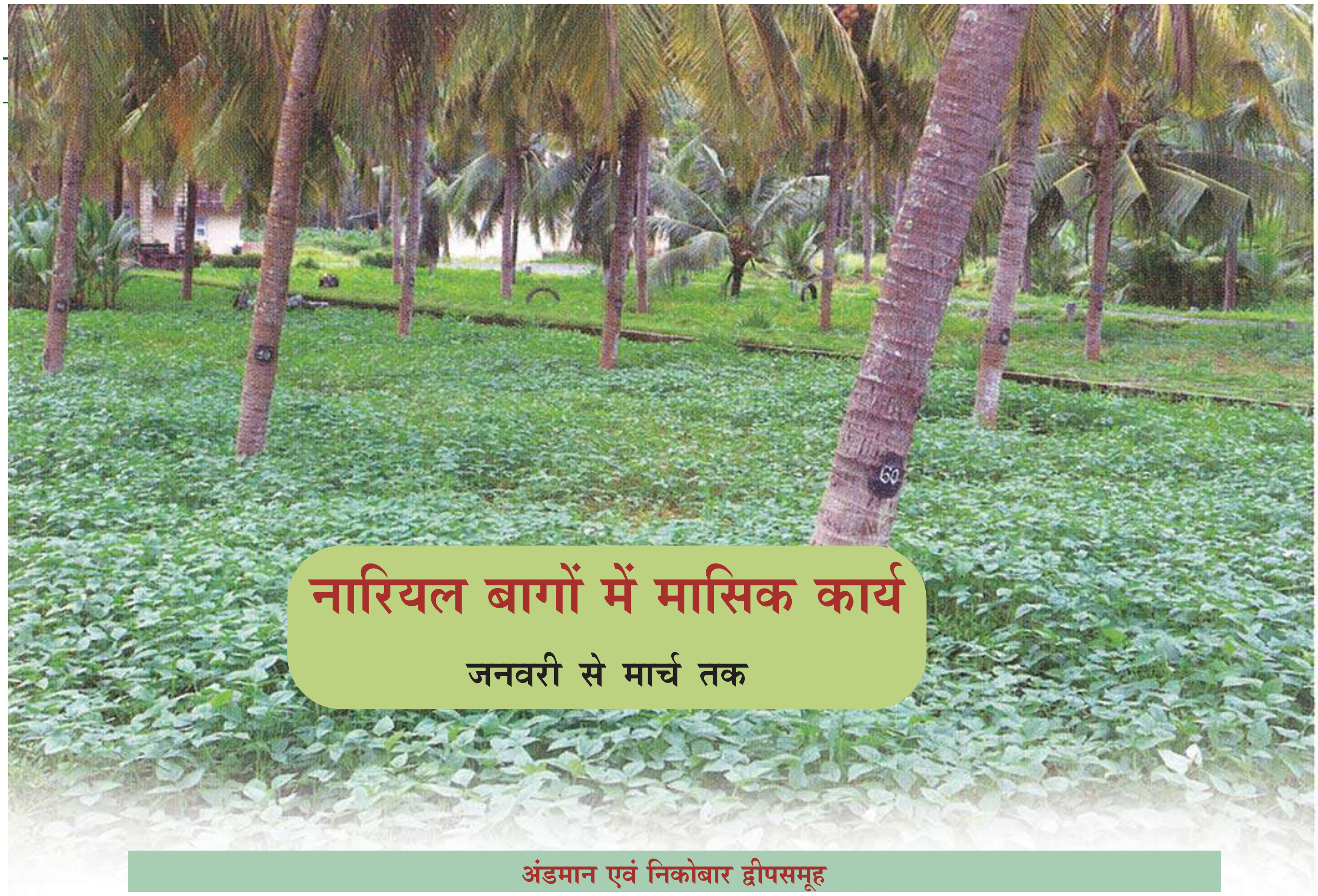

नारियल बागों में मासिक कार्य

जनवरी से मार्च तक

अंडमान एवं निकोबार द्वीपसमूह

जनवरी

नारियल थालों की सिंचाई करके खरपतवार निकाल दें। गोबर/खाद गड्ढ़ों में क्लोरेन्ट्रानिलिप्रोल ए.आई. 0.4 प्रतिशत(5 ग्राम) या फिप्रोनिल(3 ग्राम) निहित छेद वाले दो सैशे या भा.कृ.अनु.प.-केन्द्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान द्वारा विकसित वानस्पतिक खली(2 ग्राम) रखना और भाँट नामक पौधा मिलाना अंडों और सूँडियों का नाश करने के लिए सहायक होता है। प्रजनन स्थानों को हरी मस्कार्डिन कवक(*मेटाराइज़ियम एनिसोप्लि*) से उपचारित करें। ताड़ों की सिंचाई करें। सिंचाई की आवृत्ति और पानी की मात्रा मृदा का प्रकार और सिंचाई की विधि आदि पर निर्भर है।

फरवरी

अलाभकर और जीर्ण पेड़ों को काट दें और बागों से कचरा निकाल दें। बाग की निराई करके साफ रखें। नर्सरी को सिंचित करें। ताड़ों की सिंचाई ज़ारी रखें। नियमित रूप से फल प्राप्त होने वाले और वार्षिक पैदावार सौ फल से कम न होने वाले चयनित मातृताड़ों से बीजफल इकट्ठा करें। बोने से पहले लगभग एक महीने तक इनका भंडारण करें।

मार्च

नर्सरी की सिंचाई जारी रखें। मातृ वृक्षों से बीजफल इकट्ठा करना शुरू करें। बुआई के पहले करीब एक महीने तक बीजफल रेत में सुरक्षित रखें। खरपतवार निकालकर और अनावश्यक पेड़ों को काटकर निकालके नई रोपाई के लिए ज़मीन की तैयारी करें।

कृष्ण शीर्ष इल्ली का प्रकोप पाया है तो पत्तों के निचले तल पर 0.05 प्रतिशत क्विनालफॉस से छिड़काव करें। जब तक कीट की संख्या कम नहीं हो जाती तब तक कीट की अवस्था के अनुरूप 15 दिन के अंतराल में उपयुक्त परजीवियों को छोड़ दें। यदि रासायनिक दवा का छिड़काव किया गया है तो मित्रकीटों को तीन हफ्ते के बाद ही छोड़ देना चाहिए, नहीं तो वे मर जाएंगे। इसका निवारणोपाय अपनाने के पहले सबसे बाहर के गंभीर रूप से प्रकोपित सूखे पत्तों को काटकर जलाना चाहिए।

जनवरी

ताड़ों के शिखर को साफ करें। पत्ता भक्षक इल्ली से पीड़ित पत्तों को काटकर जला दें। गैनोडेर्मा मुर्झा रोग का पता

आँध्र प्रदेश

लगाएं और पौधे के थालों को हेक्साकोनाज़ोल 5 प्रतिशत या 1 ग्राम ऑरियोफंगिन + 1ग्राम कोपर सल्फेट 5 लीटर पानी में घोलकर तैयार किए गए ऑरियोफंगिन घोल से शराबोर कर दें। वही उपचार 15 दिन बाद भी करें। रोगग्रस्त ताड़ को उसके चारों तरफ गहरा गड्ढ़ा खोदकर अलग कर दें। रोगग्रस्त ताड़ों के सबसे निकट स्थित स्वस्थ ताड़ों का भी उपरोक्त घोल से इसी प्रकार से उपचार करें ताकि रोग फैलने

कृष्ण शीर्ष इल्ली

से रोक सकें। यदि बरुथी का प्रकोप पाया जाए तो नीम तेल-लहसुन-साबुन का घोल 2 प्रतिशत या अज़ाडिरेक्टिन प्रति लीटर पानी में 4 मि.ली. की दर पर छिड़काव करें या 7.5 मि.लीटर की दर पर तुल्य मात्रा में पानी के साथ जड़ के ज़रिए दें। बारिश के समय हल्के तौर से जुताई करें। ताड़ों को सींचना शुरू कर दें।

फरवरी

बागों को सिंचित करें। यदि कृष्ण शीर्ष इल्ली का प्रकोप पाया जाए तो गंभीर रूप से रोगग्रस्त 2-3 बाह्य पत्तों को काटकर जला दें। शेष पत्तों के निचले भाग पर 0.05 प्रतिशत क्विनालफोस से छिड़काव करें। यदि कीटों का प्रकोप अधिक हो तो 15 दिन के अंतराल में छिड़काव फिर से करें। रासायनिक पदार्थों के छिड़काव के तीन हफ्ते बाद कीटों की अवस्था के अनुसार ताड़ों पर विशेष परजीवियों को छोड़ दें। डिंभक अवस्था के लिए *गोनियोज़स नेफान्टिडिस*, प्यूपा पूर्व अवस्था के लिए *इलास्मस नेफान्टिडिस* और प्यूपा अवस्था के लिए *ज़ैन्थोपिम्प्ला पंक्टाटा* (*इक्न्यूमोनिड*) को छोड़ दें। परजीवियों को प्राप्त करने के लिए निकटतम परजीवी प्रजनन प्रयोगशाला से संपर्क करें। यदि बरुथी का प्रकोप पाया जाता है तो इसका उपचार करें।

मार्च

पेड़ों के शिखरों पर भृंग अंकुश द्वारा गैंडा भृंग की तलाश करें और भृंगों को मार डालें। पेड़ के भीतरी तीन पत्तों के कक्षों में 25 ग्रा. सेविडॉल 8 जी 250 ग्रा. महीन रेत मिलाकर भरें। गोबर/खाद गड्ढ़ों में क्लोरेन्ट्रानिलिप्रोल ए.आई. 0.4 प्रतिशत(5 ग्राम) या फिप्रोनिल(3 ग्राम) निहित छेद वाले दो सैशे या भा.कृ.अनु.प.-केन्द्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान द्वारा विकसित वानस्पतिक खली(2 ग्राम) रखना और भाँट नामक पौधा मिलाना अंडों और सूँडियों का नाश करने के लिए सहायक होता है। प्रजनन स्थानों को हरी मस्कार्डिन कवक(*मेटाराइज़ियम एनिसोप्लि*) से उपचारित करें। सिंचाई जारी रखें। चुनिंदा बागों से चुने हुए मातृ वृक्षों से बीजफल इकट्ठा करें।

यदि कृष्ण शीर्ष इल्ली का प्रकोप पाया जाए तो मित्रकीटों को छोड़ दें। अगर पेड़ों पर शल्क कीटों का प्रकोप पाया जाता है तो 0.05 प्रतिशत क्विनालफोस का छिड़काव करें।

असम

जनवरी

सिंचाई जारी रखें। ताड़ के चारों तरफ निराई गुड़ाई कर दें। चयनित मातृ ताड़ों से बीजफल इकट्ठा करते रहें और इसे छायेदार शुष्क जगह पर भंडारण करें। नारियल बागों में तालाब की गाद डालें। पौधों के प्रतिरोपण के लिए 8मी. x 8मी. की दूरी में 1 मी x 1 मी x 1मी आकार के चौकोर गड्ढ़े खोदें।

फरवरी

बागों की सिंचाई करें। चयनित मातृताड़ों से फल इकट्ठा करना जारी रखें और नारियल पानी का सूख जाना रोकने के लिए उपयुक्त भंडारण तरीका अपनाएं। पौदों के प्रतिरोपण के लिए 8मी. x 8मी. की दूरी में 1मी x 1मी x 1मी आकार के चौकोर गड्ढ़े खोदें। गड्ढ़ों के 40 सें.मी. तक भाग खाली छोड़ते हुए ऊपरी मृदा, 500 ग्राम रोक फोसफेट, 50 कि.ग्रा. सूखा गोबर/कम्पोस्ट खाद आदि के मिश्रण से 60 सें.मी. ऊँचाई तक भरें। दीमकों के आक्रमण से बचने के लिए 100 ग्राम 10 प्रतिशत क्लोरपाइरिफोस का प्रयोग करें। कली सड़न, तना स्रवण या गैंडाभृंग और लाल ताड़ घुन जैसे कीटों

के प्रकोप की जाँच करें। ताड़ों के शिखर को साफ करें और यदि पहले नहीं किया गया हो तो रोगरोधी उपाय के रूप में 1 प्रतिशत बोर्डो मिश्रण का छिड़काव करें। यदि तना स्रवण पाया जाए तो तने के रोगग्रस्त ऊतकों को निकाल दें और घाव पर 5 प्रतिशत हेक्साकोनाज़ोल लगाएं। घाव पर *ट्राइकोडेर्मा हर्जियानम* टैल्क दवा का प्रयोग घाव का फैलाव रोकने के लिए प्रभावी पाया गया है। जब यह सूख जाएगा तब गरम कोलतार लगाएं। उर्वरकों की दूसरी मात्रा के साथ 5 कि.ग्रा. नीम खली प्रति वर्ष प्रति ताड़ दें। बारिश के मौसम में उचित जल निकासी की और गर्मियों के दौरान सिंचाई की व्यवस्था करें।

गैनोडेर्मा रोग ग्रस्त पेड़

मार्च

गैनोडेर्मा रोग से ग्रस्त पेड़ों के नीचे से 2 मीटर की दूरी पर एक मीटर गहरी और 30 से.मी. चौड़ी खाई खोदकर उसे दूसरे पेड़ों से अलग करें। बागों से अधिक आयुवाले अनुत्पादक पेड़ों को काटकर निकालें। यदि गड्ढे जनवरी या फरवरी में नहीं खोदे गए हैं तो इस महीने खोदें और पौद रोपने के लिए गड्ढे के 60 से.मी. तक ऊपरी मृदा + रेत + गोबर वाले गड्ढा मिश्रण से भरें। एकाध बारिश के बाद पेड़ों के चारों ओर की मृदा अच्छी तरह जोत लें। बीजफल रोपने हेतु नर्सरी क्यारियाँ बनाना शुरू करें।

बिहार/मध्य प्रदेश/छत्तीसगढ़

जनवरी

ताड़ों के शिखरों को साफ करें। सिंचाई जारी रखें। यदि पानी की कमी हो तो ड्रिप सिंचाई प्रणाली अपनाएं। ताड़ के थालों से खरपतवार निकाल दें। नई रोपित पौदों के लिए छाया प्रदान करने की व्यवस्था करें। सूखे पत्तों से ताड़ों के थालों का पलेवा करें। नारियल बागों में टंकी की गाद/जंगली मिट्टी/कम्पोस्ट आदि डालें। शिखर पर ब्लाइटोक्स 5 ग्राम प्रति लीटर पानी की दर पर या डाइथेन एम 45 प्रति लीटर पानी में 2 ग्राम की दर पर घोल बनाकर शिखर तथा गुच्छों पर छिड़काव करें ताकि ठंड के कारण होने वाले रोग-संक्रमण से पेड़ों को बचाया जा सके।

फरवरी

सिंचाई जारी रखें। ठंड से पड़ने वाले रोगसंक्रमण से बचने के लिए शिखरों और गुच्छों पर ब्लाइटोक्स 5 ग्रा. प्रति लीटर पानी की दर पर या डाइथेन एम 45 प्रति लीटर पानी में 2 ग्राम की दर पर घोल कर छिड़काव करें। निम्नवर्ती क्षेत्रों में थाले में प्रति वयस्क ताड़ 500 ग्राम यूरिया, 1000 ग्राम सिंगल सूपरफोस्फेट और 1000 ग्राम म्यूरिएट ऑफ पोटैश डालकर ऊपरी मिट्टी से ढक दें। पौधों का सतही रोपण ऐसे क्षेत्रों में किया जा सकता है जहाँ पर भौम जल स्तर ऊँचा हो। नए रोपित पौधों को छाया उपलब्ध कराने के लिए पौधे से 2 मीटर की दूरी पर केले के पौधे लगाएं।

मार्च

ताड़ों की सिंचाई करें। रोगकीटों और रोगों के प्रकोप को रोकने के लिए पौधा संरक्षण रासायनिक पदार्थों का प्रयोग करें। सिंचाई चैनलों की मरम्मत करें। भूमि तैयार करें और गड्ढों के बीच 8 मीटर की दूरी छोड़कर 1मी. x 1मी. x1मी. आकार के गड्ढे खोदें। निम्नवर्ती क्षेत्रों के पौधों का पुनर्रोपण/प्रतिरोपण करें। यदि जल स्तर ऊंचा है तो सतही रोपण किया जा सकता है। दीमक के प्रकोप की विशेषकर छोटे पेड़ों पर, तलाश करें। दीमक के प्रबंधन के लिए मृदा में पर्याप्त नमी बनाए रखना पूर्वापेक्षित है। नर्सरी को 0.05 प्रतिशत क्लोरपैरिफॉस से 20 से 25 दिनों के बीच भिगो दें। गैंड़ा भृंग/ लाल ताड़ घुन की रोकथाम के लिए पेड़ के भीतरी तीन पत्तों के कक्षों में 25 ग्रा. सेविडॉल 8 जी 250 ग्रा. महीन रेत मिलाकर भरें।

कर्नाटक

जनवरी

ताड़ों को नियमित रूप से सिंचित करें। ड्रिप प्रणाली के ज़रिए प्रति दिन प्रति ताड़ 60-70 लीटर पानी दिया जाए। सिंचित अवस्था में उपयुक्त अंतर फसल उगाएं। यदि पर्ण चित्ती रोग पाया जाता है तो पत्तों पर एक प्रतिशत बोर्डो मिश्रण से छिड़काव करें। यदि ताड़ पत्ता भक्षी इल्लियों से पीड़ित हैं तो गंभीर रूप से रोगग्रस्त पत्तों को काटकर जला दें। रोगग्रस्त पत्तों के निचले भाग पर 0.05 प्रतिशत क्विनालफोस से छिड़काव करें। बाग में उपयुक्त अवस्था के परजीवियों को छोड़ें। रोगपीड़ित क्षेत्रों में रासायनिक दवा का छिड़काव किया गया हो तो 15 दिन बाद ही परजीवियों को छोड़ दें। यदि बरुथी का प्रकोप पाया गया है तो नीम तेल - लहसुन - साबुन मिश्रण 2 प्रतिशत (1 लीटर पानी में 20 मि.ली. नीम तेल + 20 ग्राम लहसुन पेस्ट + 5 ग्राम साबुन घोलकर) या प्रति लीटर पानी में 4 मि.ली. की दर पर 0.004 प्रतिशत एज़ाडिरेक्टिन युक्त नीम तेल दवा दूसरे से पाँचवें अपक्व गुच्छों की तरफ खास तौर पर बुतामों के परिदलपुंज भाग पर और रोगग्रस्त फलों पर छिड़क दें या एज़ाडिरेक्टिन 5 प्रतिशत युक्त नीम तेल दवा 7.5 मि.ली. की दर पर उतनी ही मात्रा में पानी मिलाकर जड़ों द्वारा दें। बारानी स्थिति में भूमि की जुताई करें और खरपतवारों को निकाल दें।

गैंड़ा भृंग

फरवरी

बागों की सिंचाई करें। ड्रिप सिंचाई के ज़रिए प्रति दिन प्रति ताड़ 60-65 लीटर पानी दें। गैंडा भृंग के प्रकोप की जाँच करें। ताड़ के शिखरों को साफ करें और सबसे ऊपर के 3 पर्णकक्षों को सेविडॉल 8 जी (25ग्राम) + महीन रेत (200 ग्राम/ताड़) से या प्रति पर्ण कक्ष 10.5 ग्राम नैफ्थलीन गोलियाँ (प्रति शिखर 3-4 गोलियाँ) महीन रेत से ढककर 45 दिनों के अंतराल में भरें। गोबर/खाद गड्ढ़ों में क्लोरेन्ट्रानिलिप्रोल ए.आई. 0.4 प्रतिशत(5 ग्राम) या फिप्रोनिल(3 ग्राम) निहित छेद वाले दो सैशे या भा.कृ.अनु.प.-केन्द्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान द्वारा विकसित वानस्पतिक खली(2 ग्राम) रखना और भाँट नामक पौधा मिलाना अंडों और सूँडियों का नाश करने के लिए सहायक होता है। प्रजनन स्थानों को हरी मस्कार्डिन कवक(*मेटाराइज़ियम एनिसोप्लि*) से उपचारित करें। पर्ण चित्ती रोग से बचने के लिए 1 प्रतिशत बोर्डो मिश्रण से छिड़काव करें। पत्ता भक्षी इल्लियों के प्रकोप से बचने के लिए एकीकृत नियंत्रण उपाय अपनाया जाए। रोगसंक्रमण पाए जाने के तुरंत बाद और बाद में 3 बार पन्द्रह दिनों के अंतराल में मित्रकीटों को छोड़ देना चाहिए। यदि रोगप्रकोप अधिक हो तो गंभीर रूप से क्षतिग्रस्त निचले पत्तों को काटकर जला दें और शेष पत्तों के निचले भाग पर क्विनालफोस 0.05 प्रतिशत से छिड़काव करें। पीड़कनाशियों के छिड़काव या जड़ों द्वारा पिलाने के तुरंत बाद फसल नहीं काटनी चाहिए। उपचारित ताड़ों से फसल काटने के लिए 45 दिनों की सुरक्षित अवधि बनायी रखनी चाहिए। यदि बरुथी का प्रकोप पाया जाता है तो 0.1 प्रतिशत अज़ाडिरेक्टिन/ नीमाज़ॉल 4 मि.ली. प्रति लीटर पानी की दर पर तैयार किए गए घोल से छिड़काव करें। दूसरे से पाँचवें परिपक्व गुच्छों की तरफ छींटों को पड़ने दें। लाल ताड़ घुन के प्रकोप को नियंत्रित करने के लिए बाग की साफ-सफाई ज़रूरी है। पूर्ण रूप से रोगग्रस्त और जीर्ण पेड़ों को काटकर जला दें। यदि कीट का प्रकोप पाया जाता है तो प्रति ताड़ इमिडाक्लोप्रिड 0.002 प्रतिशत(प्रति लीटर पानी में 1 मि.ली.) या इंडोक्सोकार्ब 0.04 प्रतिशत(प्रति लीटर पानी में 2.5 मि.ली.) का प्रयोग करें। कीटनाशी का घोल कीप के ज़रिए इंजेक्ट करें। इंजेक्ट करने के बाद रोगग्रस्त तने के सभी छेद बंद करें। प्रति हेक्टर एक फेरोमोन फंदे से घुनों को पकड़ा जा सकता है।

मार्च

बागों की सिंचाई करें। ड्रिप सिंचाई से प्रति दिन प्रति ताड़ 70-80 लीटर पानी दें। सिंचित अवस्था में उपयुक्त अंतर फसलों की रोपाई करें। गैंडा भृंग के प्रकोप की जाँच करें। ताड़ के शिखरों को साफ करें और ऊपर के तीन पर्ण कक्षों को 250 ग्राम नीम खली और महीन रेत (250 ग्रा./ताड़) के मिश्रण से भर दें। 45 दिनों के अंतराल में पर्ण कक्ष दो नैफ्थलीन गोलियाँ और उसके ऊपर महीन रेत से भर दें।

गोबर/खाद गड्ढ़ों में क्लोरेन्ट्रानिलिप्रोल ए.आई. 0.4 प्रतिशत(5 ग्राम) या फिप्रोनिल(3 ग्राम) निहित छेद वाले दो सैशे या भा.कृ.अनु.प.-केन्द्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान द्वारा विकसित वानस्पतिक खली(2 ग्राम) रखना और भाँट नामक पौधा मिलाना अंडों और सूँडियों का नाश करने के लिए सहायक होता है। प्रजनन स्थानों को हरी मस्कार्डिन कवक(*मेटाराइज़ियम एनिसोप्लि*) से उपचारित करें। पर्णचित्तियों से बचने के लिए 1 प्रतिशत बोर्डो मिश्रण का छिड़काव करें। पत्ता भक्षी इल्लियों के प्रकोप को रोकने के लिए एकीकृत नियंत्रणोपाय अपनाएं। रोगकीटों का प्रकोप पाए जाने पर उपयुक्त अवस्था के मित्रकीटों को तुरंत छोड़ दें और बाद में दो हफ्ते के अंतराल से तीन बार यह दोहराएं। लंबे पेड़ों और फलोद्यानों के लिए जैविक और रासायनिक प्रणालियों का मिला-जुला प्रयोग अनुशंसित है। यदि बरुथी का प्रकोप पाया जाता है तो प्रति लीटर पानी में 4 मि.ली. की दर पर 0.1 प्रतिशत अज़ाडिरैक्टिन/नीमाज़ॉल युक्त नीम तेल मिश्रण का छिड़काव करें। इसकी छींटें दूसरे से पाँचवें परिपक्व गुच्छों में पड़नी चाहिए। मृदा की पौष्टिक अवस्था सुधारने के लिए ताड़ों के थालों में ढैंचा जैसी हरी खाद फसलें उगाएं और 45 दिनों में इसे मिट्टी में गाड़ दें। प्रति वर्ष प्रति ताड़ 25 कि.ग्रा. की दर पर जैव खाद डाल दें। 5 कि. ग्राम नीम की खली प्रति पेड़ प्रति वर्ष डाल दें।

केरल/लक्षद्वीप

जनवरी

छोटी पौदों और वयस्क ताड़ों को सिंचित करें। ताड़ों के शिखरों को साफ करें। बाग के सभी अधिक आयु वाले अनुत्पादक ताड़ों को काट कर निकाल दें। नियंत्रणोपाय के रूप में या तो बोर्डो मिश्रण या बाज़ार में उपलब्ध कोई दूसरा तांबा युक्त फफूँदनाशी का छिड़काव जारी रखें। यदि पत्ता भक्षक इल्लियों का प्रकोप पाया जाता तो रोगग्रस्त पत्तों के निचले भाग पर 0.05 प्रतिशत क्विनालफोस से छिड़काव करें। बीजफल इकट्ठा करने के लिए मातृताड़ों का चयन करें। सिंचाई शुरू करें। यदि बरुथी का प्रकोप पाया जाता है तो ताड़ के शिखर को साफ करें और नीम तेल–लहसुन-साबुन का घोल 2 प्रतिशत या अज़ाडिरैक्टिन 4 मि.ली. प्रति लीटर पानी की दर से तैयार किए गए मिश्रण का छिड़काव करें या 7.5 मि.ली. अज़ाडिरेक्टिन तुल्य मात्रा में पानी मिलाकर जड़ों द्वारा दें।

फरवरी

सिंचाई जारी रखें। वयस्क ताड़ों के थालों में 200-250 लीटर पानी से चार दिन में एक बार सिंचित करें। ड्रिप सिंचाई के ज़रिए 60-65 लीटर पानी दिया जाए। यदि सिंचाई की सुविधा उपलब्ध नहीं है तो छोटे पौधों के लिए छाया प्रदान करना, पलेवा करना और पिचर सिंचाई जैसे नमी संरक्षण उपाय अपनाए जाएं। सभी पुराने शूकीछद, अनुपर्ण आदि जो आसानी से हाथ से खींचकर निकाल सकते हैं, निकाल कर शिखर को साफ करें। यदि पत्ता भक्षी इल्ली का प्रकोप अधिक है तो एकीकृत नियंत्रण उपाय अपनाएं। यदि बरुथी का प्रकोप पाया जाता है तो 0.1 प्रतिशत अज़ाडिरेक्टिन/ नीमाज़ॉल 4 मि.ली. प्रति लीटर पानी की दर पर तैयार किए गए मिश्रण से छिड़काव करें। दूसरे से पाँचवें परिपक्व गुच्छों की तरफ मिश्रण की छींटें

पत्ता भक्षी इल्ली

पड़ने दें। बीजफलों को एकत्र करना शुरू करें। सिंचित बागों में उर्वरकों की अनुशंसित मात्रा का एक चौथाई भाग डाल दें।

मार्च

सिंचाई जारी रखें। चुनिंदा मातृवृक्षों से बीजफल इकट्ठा करना जारी रखें और उन्हें ठंडे सूखे स्थान पर सुरक्षित रखें। अगर बरुथी (mite) का प्रकोप पाया जाता है तो नीम तेल मिश्रण 0.1 प्रतिशत एज़ाडिरैक्टिन (नीमाज़ॉल) 4 मि.ली. प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें। इसकी छींटें दूसरे से पांचवें गुच्छों में पड़नी चाहिए।

कृष्ण शीर्ष इल्ली का प्रकोप पाया है तो पत्तों के निचले तल पर 0.05 प्रतिशत क्विनालफोस से छिड़काव करें। जब तक कीटों की संख्या कम नहीं हो जाती तब तक कीट की अवस्था

के अनुरूप 15 दिन के अंतराल में उपयुक्त परजीवियों को छोड़ दें। यदि रासायनिक दवा का छिड़काव किया गया है तो मित्रकीटों को तीन हफ्ते के बाद ही छोड़ देना चाहिए नहीं तो वे मर जाएंगे। इसका निवारणोपाय अपनाने के पहले सबसे बाहर के गंभीर रूप से प्रकोप वाले और सूखे पत्तों को काटकर जलाना चाहिए।

जनवरी

महाराष्ट्र/गोवा/गुजरात

मृत और सड़ी हुई चीज़ों को हटाकर ताड़ों के शिखर साफ करें। यदि फफूँदी रोग पाया जाता है तो पेड़ों पर एक प्रतिशत बोर्डो मिश्रण का छिड़काव करें। सभी रोगग्रस्त पत्ते काटकर निकाल दें। यदि पत्ता भक्षी इल्ली का प्रकोप अधिक हो तो, पत्तों के निचले भाग पर 0.05 प्रतिशत क्विनालफोस का छिड़काव करें। छिड़काव के 15 दिन बाद ही परजीवियों को छोड़ दें।

फरवरी

एनाबेरोगा रोग से ग्रस्त पेड़ों को काटकर नष्ट कर दें। रोगग्रस्त ताड़ों के चारों ओर खाई खोदकर ताड़ों को अलग कर दें। 5 कि.ग्राम. नीम खली प्रति ताड़ दें। थालों को 1 प्रतिशत बोर्डो मिश्रण वाले 40 लीटर घोल से शराबोर कर दें। वयस्क ताड़ों पर तना स्रवण रोग की जाँच करें। रोगग्रस्त ताड़ों का उपचार करें। तने से रोगग्रस्त ऊतकों को निकालने के बाद 5 प्रतिशत हेक्साकोनाज़ोल लगाएं। जब यह सूख जाएगा गरम कोलतार लगाएं। रोगग्रस्त ताड़ों को उर्वरकों की दूसरी मात्रा के साथ प्रति वर्ष प्रति ताड़ 5 कि.ग्रा. नीम खली डालें। बागों की सिंचाई जारी रखें। नए रोपण के लिए 7.5 मीटर के अंतरण में गड्ढे खोदें। यदि प्रस्तुत भूमि चढ़ाई वाली हो तो कोंटूर बांध या पुश्तों का तरीका अपनाएं।

एनाबेरोग रोग ग्रस्त पेड़

मार्च

बाग की निराई-गुड़ाई करें। खरपतवार एवं झाड़ियाँ आदि निकालकर जला दें। रोग कीटों के प्रकोप की जाँच करें और उनकी रोकथाम के लिए उचित उपाय अपनाएं। सिंचाई जारी रखें। बीजफलों को इकट्ठा करना शुरू करें।

ओड़िशा

जनवरी

मौसमीय फसलें लगाएं। नारियल और अंतर फसलों की सिंचाई करें। हरी खाद मिलाएं। नारियल थालों को कयर गूदा/छिलके आदि से पलेवा करें। कीटों/रोगों के प्रकोप के अनुसार पौधा संरक्षण रासायनिकों का प्रयोग किया जाए। यदि एरियोफिड माइट का प्रकोप पाया जाता है तो एजाडिरेक्टिन 5 प्रतिशत 7.5 मि.ली.की दर पर तुल्य मात्रा में पानी के साथ जड़ों द्वारा दें। शिखर की सफाई करें। नारियल और अंतर फसलों की अनुरक्षण गतिविधियाँ जारी रखें।

फरवरी

झाड़ियों और खरपतवार को निकाल दें। खेत तैयार करें और कंद मूल वाली फसलें जैसे अदरक, हल्दी आदि लगाएं। नारियल पेड़ों को उर्वरकों की दूसरी मात्रा दें। बागों को सिंचित करें। कयर गूदा/छिलका आदि से नारियल थालों पर पलेवा करें। यदि बरुथी का प्रकोप पाया जाता है तो 0.1 प्रतिशत अज़ाडिरेक्टिन/ नीमाज़ॉल 4 मि.ली. प्रति लीटर पानी की दर पर तैयार किए गए मिश्रण का छिड़काव करें। दूसरे से पाँचवें परिपक्व गुच्छों की तरफ मिश्रण की छींटें पड़ने दें। शिखरों को साफ करें और अन्य अनुरक्षण उपाय करते रहें। यदि पत्ता भक्षी इल्ली का प्रकोप पाया जाता है तो रोगग्रस्त पत्तों के निचले हिस्से पर 0.05 प्रतिशत क्विनालफोस से छिड़काव करें। ऐसी जगहों पर जहाँ ठंड ज्यादा पड़ती है कली सड़न जैसे रोगों से बचने का उपाय अपनाया जाए। ऐसे मामलों में शिखरों पर ब्लाइटॉक्स 5 ग्राम प्रति लीटर पानी की दर पर या 2 ग्राम डाइथेन एम 45 प्रति लीटर पानी की दर पर छिड़काव करें।

एरियोफिड माइट

मार्च

ताड़ों की सिंचाई करें। बागों से खरपतवार निकाल दें। नमी संरक्षण के लिए सूखे नारियल पत्तों और कयर गूदे से पलेवा करें। चयनित मातृ ताड़ों से बीजफल इकट्ठा करके ठंडे और सूखे स्थान पर सुरक्षित रखें। यदि बरुथी का प्रकोप पाया जाए तो प्रति लीटर पानी में 4 मि.ली. की दर पर तैयार किए गए 0.1 प्रतिशत अज़ाडिरेक्टिन/नीमाज़ॉल युक्त नीम तेल मिश्रण से छिड़काव करें। इस मिश्रण की छींटें दूसरे से पाँचवें परिपक्व गुच्छों में पड़नी चाहिए।

नेफेन्टिस सेरिनोपा (कृष्ण शीर्ष इल्ली) से प्रकोपित पेड़ों पर 0.05 प्रतिशत क्विनालफोस का छिड़काव करें। अगर प्रकोप गंभीर हो तो छिड़काव 15 दिन के बाद दोहरायें। छिड़काव के पहले प्रकोपित पत्तों को काट कर जला दें ताकि आगे का प्रकोप रोका जा सकें। छिड़काव के 15 दिन बाद प्रकोपित पेड़ों पर परजीवियों को बारी बारी से छोड़ दें। जिन पेड़ों पर परजीवियों को छोड़े गए हैं उन पर कीटनाशियों का छिड़काव न करें क्योंकि इससे ये भी मारे जाएंगे। सिंचित बागों में उर्वरकों का एक चौथाई भाग डालें।

तमिलनाडु / पुतुच्चेरी

जनवरी

ताड़ के शिखर को साफ करें। यदि जनवरी के प्रारंभ में बारिश नहीं हुई तो नियमित ग्रीष्मकालीन सिंचाई शुरू करें। तना स्रवण रोगग्रस्त ताड़ों के रोगग्रस्त ऊतकों को निकालकर कोलतार या बोर्डो लेप लगाकर उपचारित करें। तंजावूर मुर्झा से ग्रस्त ताड़ों के थालों से 2 मीटर की दूरी पर 1 मीटर गहरी और 50 सें.मी चौड़ी खाई खोदकर ताड़ों को अलग रखें। प्रति वर्ष प्रति ताड़ 5 कि.ग्राम नीम खली डालें। थालों को प्रति ताड़ एक प्रतिशत बोर्डो मिश्रण के 40 लीटर से शराबोर करें। एक साल के लिए हर तिमाही में 100 मि.ली. हेक्साकोनाज़ोल 5 प्रतिशत जड़ों द्वारा दें। यदि बरुथी का प्रकोप पाया गया है तो नीम तेल - लहसुन - साबुन मिश्रण 2 प्रतिशत (1 लीटर पानी में 20 मि.ली. नीम तेल + 20 ग्राम लहसुन पेस्ट + 5 ग्राम साबुन घोलकर) या प्रति लीटर पानी में 4 मि.ली. की दर पर 0.004 प्रतिशत अज़ाडिरेक्टिन युक्त नीम तेल दवा दूसरे से पाँचवें अपक्व गुच्छों की तरफ खासतौर पर बुतामों के परिदलपुंज भाग पर और रोगग्रस्त फलों पर छिड़क दें या अज़ाडिरेक्टिन 5 प्रतिशत युक्त नीम तेल दवा 7.5 मि.ली. की दर पर उतनी ही मात्रा में पानी मिलाकर जड़ों द्वारा पिला दें।

फरवरी

गर्मियों में मृदा के प्रकार के अनुरूप 4 से 7 दिनों में एक बार सिंचाई जारी रखें। सिंचित स्थिति में उर्वरकों की अनुशंसित मात्रा का एक चौथाई भाग यानी 250 ग्राम यूरिया, 500 ग्राम सिंगल सूपरफोस्फेट और 500 ग्राम म्यूरिएट ऑफ पोटैश डालें। ताड़ों के शिखरों पर गैंडाभृंग का पता लगाएं और भृंग अंकुश से भृंगों को मारें। ताड़ के सबसे ऊपर के 4 पर्णकक्षों में सेविडॉल 8 जी (25 ग्राम) और महीन रेत (200 ग्राम) का मिश्रण भरें। पर्णकक्षों में 12 ग्राम नैफ्थलिन गोलियाँ (लगभग 3 गोलियाँ) और उसके ऊपर महीन रेत 45 दिनों के अंतराल में भरना भी बेहतर है। यदि बरुथी का प्रकोप पाया जाता है तो 0.1 प्रतिशत अज़ाडिरेक्टिन/ नीमाज़ॉल 4 मि.ली. प्रति लीटर पानी की दर पर तैयार किए गए मिश्रण से छिड़काव करें। दूसरे से पाँचवें परिपक्व गुच्छों की तरफ इस मिश्रण की छींटें पड़ने दें।

मार्च

यदि बरुथी का प्रकोप पाया जाए तो प्रति लीटर पानी में 4 मि.ली. की दर पर तैयार किया गया 0.1 प्रतिशत अज़ाडिरेक्टिन/नीमाज़ॉल युक्त नीमतेल मिश्रण से छिड़काव करें। इस मिश्रण की छींटें दूसरे से पाँचवें परिपक्व गुच्छों पर

उर्वरकों का प्रयोग

पड़नी चाहिए। बुतामों और रोगग्रस्त फलों के परिदल-पुंजों पर खासतौर पर छिड़काव करना चाहिए। जब छिड़काव करना मुश्किल हो जाता है तो जड़ों द्वारा दवा दें। इसके पहले सभी परिपक्व फलों को तोड़ लें और जड़ों द्वारा पिलाने और रासायनिक प्रयोग के 45 दिनों के बाद फलों की अगली तुड़ाई करनी चाहिए। 7.5 मि.ली. अज़ाडिरेक्टिन 50% का 7.5 मि.ली. पानी में घोलकर जड़ों द्वारा देना चाहिए। सिंचाई जारी रखें। गोबर/खाद गड्ढ़ों में क्लोरेन्ट्रानिलिप्रोल ए.आई. 0.4 प्रतिशत(5 ग्राम) या फिप्रोनिल(3 ग्राम) निहित छेद वाले दो सैशे या भा.कृ.अनु.प.-केन्द्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान द्वारा विकसित वानस्पतिक खली(2 ग्राम) रखना और भँाट नामक पौधा मिलाना अंडों और सूँडियों का नाश करने के लिए सहायक होता है। प्रजनन स्थानों को हरी मस्कार्डिन कवक(*मेटाराइज़ियम एनिसोप्लि*) से उपचारित करें। चुनिंदा मातृ वृक्षों से बीजफलों को इकट्ठा करते रहें और ठंडे सूखे स्थान पर सुरक्षित रखें।

त्रिपुरा

जनवरी

3-4 दिनों के अंतराल में ताड़ों को सिंचित करें। प्रत्येक ताड़ के थालों में पत्तों से पलेवा करें ताकि मृदा की नमी नष्ट होने से बचाया जा सके। थालों में पलेवा करने से पहले, दीमकों के प्रकोप से बचने के लिए 0.05 प्रतिशत क्लोरपाइरिफोस से शराबोर कर दें। नए पौधों को तेज़ धूप से बचाने के लिए दक्षिण पश्चिम दिशा में भागिक रूप से छाया प्रदान कर दें। कली सड़न या पत्ता सड़न रोग से ताड़ों को बचाने के लिए एक प्रतिशत बोर्डो मिश्रण या कोई भी ताँबे के फफूँदनाशक का छिड़काव करें।

फरवरी

सिंचाई जारी रखें। ताड़ों को खासतौर पर छोटे ताड़ों को दीमक के आक्रमण से बचाएं। 0.05 प्रतिशत क्लोरपाइरिफोस से 20-25 दिनों के अंतराल में दो बार नर्सरी को शराबोर करना भी अनुशंसित है। महीने के दौरान पुराने और सूखे पत्तों से पलेवा करना चाहिए। यदि जनवरी में रोगों और कीटों से बचने के लिए आवश्यक रोगनिरोधी उपाय नहीं अपनाया है तो वह अभी करें।

मार्च

सिंचाई जारी रखें और सिंचाई का अंतराल प्राप्त वर्षा की मात्रा के आधार पर निश्चित करें। नियमित सिंचाई से फलदार पेड़ों के उत्पादन में सुधार आ जाएगा।

पश्चिम बंगाल

जनवरी

नारियल के फलों की तुड़ाई जारी रखें। बाग तथा नर्सरी की छोटी पौदों को सिंचित करना शुरू कर दें और छाया प्रदान कर दें। बीजफलों को एकत्रित करने के लिए मातृताड़ों का चयन करें।

फरवरी

बागों और नर्सरी की सिंचाई करें और नई रोपित छोटी पौदों के लिए छाया प्रदान करें। बोने के लिए बीजफलों को एकत्रित करें।

मार्च

सिंचाई जारी रखें। मृदा की नमी संरक्षण क्षमता के अनुसार हफ्ते में दो बार थालों में 200 लीटर पानी दें। यदि ड्रिप सिंचाई अपनाई हो तो प्रति दिन प्रति ताड़ 70 से 80 लीटर पानी दें। नए रोपित पौधों को अच्छी तरह से छाया प्रदान करें। नमी संरक्षण के लिए नारियल छिलका, हरे पत्ते, सूखे नारियल पत्ते आदि की 3 से 4 परतों से या 6 इंच की मोटाई में थालों में कयर गूदे से पलेवा करें।

परिपक्व फलों की तुड़ाई करें। नियमित रूप से फलदायी और कम से कम वार्षिक पैदावार 100 फल से न कम वाले चुनिंदा मातृ ताड़ों से बीजफल इकट्ठा करें। इकट्ठे

नारियल थाले में कयर गूदे से पलेवा

किए गए फलों का छाया में भंडारण करें। गैंडा भृंग के आक्रमण (नए तर्कु पत्तों में त्रिकोणीय आकार की कटाई) की जाँच करें। भृंग अंकुश से भृंगों को निकाल दें। ताड़ों के शिखरों को साफ करें और ताड़ के सबसे ऊपर के पर्णकक्षों को 45 दिनों के अंतराल में सेविडोल 8 जी (25 ग्राम) + महीन रेत (200 ग्राम/ताड़) के मिश्रण से भर दें। गोबर/खाद गड्ढ़ों में क्लोरेन्ट्रानिलिप्रोल ए.आई. 0.4 प्रतिशत(5 ग्राम) या फिप्रोनिल(3 ग्राम) निहित छेद वाले दो सैशे या भा.कृ.अनु.प.-केन्द्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान द्वारा विकसित वानस्पतिक खली(2 ग्राम) रखना और भाँट नामक पौधा मिलाना अंडों और सूँडियों का नाश करने के लिए सहायक होता है। प्रजनन स्थानों को हरी मस्कार्डिन कवक(*मेटाराइज़ियम एनिसोप्लि*) से उपचारित करें। यदि कली सड़न रोग पाया जाए तो सभी रोगग्रस्त ऊतकों को हटा दें। घाव को बोर्डो मिश्रण या ब्लाइटॉक्स पेस्ट से उपचारित करें। शिखर पर प्रति लीटर पानी में 5 ग्राम की दर पर ब्लाइटॉक्स का या प्रति लीटर पानी में 2 ग्राम की दर पर डाइथेन एम 45 का छिड़काव करें। एरियोफाइड बरुथी के प्रकोप को रोकने के लिए प्रति लीटर पानी में 4 मि.ली. की दर पर 0.1 प्रतिशत अज़ाडिरेक्टिन / नीमाज़ॉल का छिड़काव करें। छिड़काव ऊपर के पाँच गुच्छों पर करना चाहिए। 7.5 मि.ली. पानी में 7.5 मि.ली. नीमाज़ॉल (5 %)का घोल बनाकर बारी-बारी से जड़ों द्वारा दें। पेडों के बीच की जगह को जोतकर खरपतवार निकाल दें। अंतर फसल के रूप में ग्रीष्मकालीन सब्जियाँ और गेंदे जैसे फूलों की कृषि करें।

नारियल नुस्खा

कोकनट चाकलेट पुडिंग

आवश्यक सामग्रियाँ:

मक्खन नमक रहित - 55 ग्राम
भूरे रंग का शक्कर - 55 ग्राम
मैदा - 45 ग्राम
कोको पाउडर - 10 ग्राम
बेकिंग पाउडर - पौना छोटा चम्मच
नमक - चुटकी भर
अंडा - 3
नारियल क्रीम - 2 बड़े चम्मच(नारियल गरी में पानी मिलाकर बारीक पीसकर)
एसप्रेसो कॉफी पाउडर - आधा छोटा चम्मच(एक छोटा चम्मच उबले पानी में)

सॉस बनाने के लिए

डार्क चाकलेट - 75 ग्राम
डबल क्रीम - 50 ग्राम
दूध - 50 ग्राम
भूरे रंग का शक्कर - 1 बड़ा चम्मच

बनाने की विधि: लगभग 12-14 सें.मी. व्यास के पुडिंग प्याले में मक्खन लगाकर रखें। उसके अंदर उसी आकार का एक बटर पेपर भी मक्खन लगाकर रख दें(ऐसा इसलिए किया जाता है कि पुडिंग साँचे में अच्छे से चिपक कर रहे)। एक कटोरे में मक्खन और शक्कर अच्छी तरह फेंटकर मिलाएं। उस में छाना हुआ मैदा, कोको पाउडर, बेकिंग पाउडर, नमक आदि मिलाने के बाद अंडा, नारियल क्रीम, कॉफी पाउडर और पानी भी डाल कर अच्छे से फेंटकर मिलाएं। इस मिश्रण को मक्खन लगाकर रखे पुडिंग साँचे में डालकर एक फॉइल पेपर से ढक दें। एक सपाट प्याले में पानी लेकर उसमें पुडिंग मिश्रण भरा साँचा रखकर लगभग 45 मिनट तक बेक करने के बाद एक चाकू से साँचे से पुडिंग के किनारों को अलग करके एक प्याले में उलटा करके निकाल दें। चाकलेट, क्रीम, दूध, शक्कर आदि मिलाकर उबाल आने तक गरम करें। उसे एक बर्तन में निकालकर चंद मिनट बाद अच्छी तरह फेंटकर जग में डाल दें। प्याले में रखे गए पुडिंग से बटर पेपर को हटाने के बाद सॉस से सजा लें।

श्रीकाकुलम के नारियल बागान तितली चक्रवात के कहर से बुरी तरह क्षतिग्रस्त

आँध्र प्रदेश में श्रीकाकुलम जिले के तटीय इलाकों पर 11अक्तूबर 2018 को तितली चक्रवात का काफी बुरा असर पड़ा था जिससे नारियल पेड़ तथा कई अन्य खेतीगत फसलें गंभीर रूप से नुकसान ग्रस्त हुई। राज्य की रिपोर्ट के मुताबिक चक्रवात के कारण 1000 करोड़ रुपए मूल्य के बागवानी फसलों का नुकसान हुआ है।

श्री आर.जयनाथ, उप निदेशक (प्रभारी), नाविबो, श्री जोहर खान, भूतपूर्व बोर्ड सदस्य, नाविबो और चिकोफ सीपीसी के अध्यक्ष एवं निदेशक और श्री किरण कुमार, क्षेत्र अधिकारी, नाविबो की एक टीम ने चक्रवात प्रकोपित क्षेत्रों का दौरा किया।

आँध्र प्रदेश के श्रीकाकुलम जिले में 38 मंडल हैं। जिले के 14,927 हेक्टर में नारियल की खेती की जाती है और मुख्य रूप से 9 मंडलों में नारियल उगाया जाता है। नाविबो के प्राथमिक मूल्यांकन के अनुसार चक्रवात के कहर से 12000 हेक्टर क्षेत्र प्रभावित हुआ है और इनमें से काविति, कांचली, वज्रपुकोतुरु और सोमपेटा क्षेत्र बुरी तरह से क्षतिग्रस्त हुए हैं जहाँ लगभग 9366 हे. क्षेत्र आता है (यह जिले के कुल नारियल क्षेत्र का 63% है)। काविति मंडल के कुल पेड़ों में से 4 से 45 प्रतिशत तक पेड़ जड़ से उखडने से नुकसानग्रस्त हुए हैं। काविति में हुए नुकसान से ज्यादा नुकसान कांचली मंडल के पेड़ों को हुआ है। बुरी तरह से प्रकोपित कुट्टुमा गाँव में नुकसान का प्रतिशत कुल पेड़ों की संख्या के 50-73 प्रतिशत के बीच है। सोमपेटा मंडल में जड़

तितली चक्रवात के कहर से उजड़े नारियल बागानों के विविध दृश्य

चक्रवात से हुई क्षति का मूल्याँकन करने के लिए नियुक्त टीम क्षतिग्रस्त बाग का दौरा करते हुए

से उखडने से पेड़ों को हुए नुकसान कांचली के समान है। सामान्य रूप से कुल पेड़ों की संख्या के 26.42 प्रतिशत पेड़ जड़ से उखड़ गए हैं और 18.68 प्रतिशत पेड़ बुरी तरह से क्षतिग्रस्त हुए हैं। शिखर में मौजूद गुच्छे से नुकसान के कारण अधिक नारियल झड़ जाने की संभावना है। प्रायोगिक तौर पर किसान कम से कम 6 महीने तक बाग के शेष पेड़ों से अच्छी पैदावार की उम्मीद नहीं कर सकते हैं।

बागवानी विभाग की अंतिम रिपोर्ट के अनुसार चक्रवात की वजह से लगभग 4.5 लाख पेड़ों की क्षति हुई है और प्राक्कलित पौधों की आवश्यकता लगभग 4.5 लाख है।

टीम ने पाया है कि जड़ से उखड़ जाने के कारण नारियल पेड़ पूरी तरह से क्षतिग्रस्त हुए हैं। तना टूट गए हैं और शिखर मुड़कर टूटा हुआ है। छोटे और वयस्क ताड़ झुक गए हैं और पुष्पगुच्छों, पत्तों और फल गुच्छों को भी नुकसान पहुँचा है। जड़ से उखड़े और टूटे पेड़ इस प्रकार क्षतिग्रस्त हुए हैं कि इनका पुनरुज्जीवन संभव नहीं है। जिन पेड़ों के शिखर मुड़ गए हैं या पत्ते टूट गए हैं उन्हें वैज्ञानिक प्रबंधन तरीके अपनाने से पुनरुज्जीवित किया जा सकता है।

नाविबो ने सिफारिश दी है कि क्षेत्र में रोग एवं कीट के फैलाव से बचने के लिए जड़ से उखड़े तथा पूरी तरह से क्षतिग्रस्त नारियल पेड़ों को बाग से हटाना अनिवार्य है। शिखर का क्षतिग्रस्त भाग और बाग में छोड़ा गया तना गैंड़ा भृंग तथा लाल ताड़ घुन के लिए प्रजनन स्थान बन सकता है। नारियल बाग में पहले ही गिरे पेड़ों/अंतर फसलों के कारण ताड़ारोहण और शिखर की सफाई काफी दुष्कर बन गया है, अतः किसानों को नारियल बाग की सफाई करने के लिए आवश्यक उपस्कर प्रदान करने की तत्काल आवश्यकता है। इस क्षेत्र के किसान उत्पादक संगठन इस संबंध में पहल कर सकते हैं।

प्रकोपित क्षेत्र के सभी नारियल बागों में कोप्पर ओक्सीक्लोराइड/बोर्डो मिश्रण का रोगरोधी छिड़काव करना चाहिए ताकि अतिरिक्त संक्रमण तथा कली सड़न, पत्ता सड़न आदि फफूंद जन्य रोगों के फैलाव से बच सके। गैंड़ा भृंग तथा लाल ताड़ घुन के प्रकोप को रोकने के लिए सभी एकीकृत कीट प्रबंधन तरीकों को अपनाया जाना होगा।

इस क्षेत्र में लगातार चक्रवात होते रहने के परिणामस्वरूप अधिकांश बागों में पेड़ के शिखर का वितान एवं पेड़ों का विन्यास अनियमित रहा है। मौजूदा नारियल बागों में गुणवत्तापूर्ण पौधों के साथ अधोरोपण को बढ़ावा देना चाहिए और नाविबो विशेष मामले के रूप में क्षेत्र विस्तार कार्यक्रम के तहत इन क्षेत्रों में अधोरोपण के लिए सहायता देने पर विचार कर सकते हैं। किसानों को सख्ती से यह सलाह दी जाए कि नारियल पौधों का रोपण मात्र गड्ढ़ों में ही करें। इस क्षेत्र की मिट्टी रेतीली है, इसलिए नारियल का रोपण कम गहराई में करने से चक्रवात का प्रकोप होने पर यह आसानी से जड़ से उखड़ सकता है।

अगले रोपण मौसम के दौरान अधोरोपण/नव रोपण के तहत लगभग 4.5 लाख पौधों की मांग प्राक्कलित की गई है। बागवानी विभाग के अधीन मौजूद कुछ नर्सरियों को भी क्षेत्रीय नारियल नर्सरी कार्यक्रम के अंतर्गत सशक्त बनाया जा सकता है। अगले रोपण मौसम के दौरान प्रबीउ फार्म, वेगिवाड़ा में लगभग एक लाख पौधे उपलब्ध होंगे।

वैज्ञानिक प्रबंधन प्रणालियाँ अपनाने से प्रकोपित क्षेत्रों के मौजूदा नारियल बागों का पुनरुज्जीवन नाविबो योजना 'नारियल बागों का पुनर्रोपण एवं पुनरुज्जीवन' के तहत संभव है और इसके अंतर्गत दो वर्ष की अवधि के लिए तीन संघटकों के कार्यान्वयन हेतु प्रति हेक्टर वित्तीय सहायता के रूप में कुल 53,500 रुपए की सहायता दी जाती है। प्रकोपित क्षेत्रों में बागों के विकास की सभी पहलुओं को इस योजना के तहत समायोजित किया जा सकता है। प्रस्तुत योजना राज्य में वर्ष 2017-18 के दौरान शुरू की थी। यदि

बागवानी विभाग, आँध्र प्रदेश सरकार तितली चक्रवात प्रकोपित क्षेत्रों को शामिल करने हेतु पुनर्रोपण एवं पुनरुज्जीवन योजना के तहत अतिरिक्त क्षेत्र के लिए प्रस्ताव प्रस्तुत करें तो उस पर विचार किया जा सकता है।

इन क्षेत्रों में नारियल पेड़ बीमा योजना के कार्यान्वयन पर अधिक ज़ोर देने की आवश्यकता है क्योंकि राज्य का तटीय क्षेत्र चक्रवात प्रवण है। किसानों को नारियल बागों की सीमा/चौहद्दी पर बहुवर्षी पेड़ लगाने के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए जो चक्रवात के प्रकोप के समय हवारोधी का कार्य करेंगे।

श्री आर.जयनाथ, *उप निदेशक प्रभारी, नारियल विकास बोर्ड, राज्य केंद्र, आँध्र प्रदेश द्वारा तैयार की गई रिपोर्ट*

विश्व नारियल दिवस मनाया गया

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद- अखिल भारतीय समन्वित ताड़ अनुसंधान परियोजना - नारियल केंद्रों में

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद- अखिल भारतीय समन्वित ताड़ अनुसंधान परियोजना ने अरसिकेरे (कर्नाटक), अंबाजीपेटा (आँध्र प्रदेश), अलियारनगर और वेप्पनकुलम (तमिलनाडु), काहिकुची (असम), सीसीएआरआई, ओल्ड गोवा, रत्नगिरी (महाराष्ट्र), जगदलपुर (छत्तीसगढ़), सबौर (बिहार), पोर्ट ब्लेयर (अं.व नि. द्वीप समूह), नवसारी (गुजरात), भुबनेश्वर (ओड़िशा) और मंदौरी (पश्चिम बंगाल) में विभिन्न कार्यक्रम जैसे वैज्ञानिकों एवं उद्यमियों, किसानों के बीच बातचीत सत्र, प्रदर्शनी, पौधों का वितरण, क्षेत्र दौरे आदि के साथ "बेहतर स्वास्थ्य, समृद्धि और खुशहाली के लिए नारियल" विषय पर विश्व नारियल दिवस मनाया। राज्य कृषि/बागवानी विश्वविद्यालयों तथा भा.कृ.अनु.प. संस्थाओं में कार्यरत वैज्ञानिकों को संबंधित राज्यों में नारियल किसानों को प्रौद्योगिकी अंतरण में शामिल किया गया।

अंबाजीपेटा (आँध्र प्रदेश)

राज्य केंद्र, विजयवाड़ा, आँध्र प्रदेश ने डा.वाईएसआर बागवानी विश्वविद्यालय, अखिल भारतीय समन्वित ताड़ अनुसंधान परियोजना, बागवानी अनुसंधान केंद्र, आँध्र प्रदेश सरकार और चिकोफ नारियल उत्पादक कंपनी, इचापुरम, श्रीकाकुलम जिले के सहयोग से इचापुरम, श्रीकाकुलम जिले में राज्य कार्यक्रम के रूप में 2 सितंबर 2018 को विश्व नारियल दिवस मनाया। बागवानी विभाग और कृषिवाला किसान उत्पादक कंपनी द्वारा कृषि बाज़ार समिति में भी विश्व नारियल दिवस 2018 मनाया गया।

अरसिकेरे (कर्नाटक)

बागवानी अनुसंधान एवं विस्तार केंद्र, अरसिकेरे ने अखिल भारतीय समन्वित ताड़ अनुसंधान परियोजना और नाविबो के सहयोग से 3 सितंबर 2018 को विश्व नारियल दिवस मनाया। डा.एन.बासवराज, अनुसंधान निदेशक, यूएचएस, बागलकोट ने कार्यक्रम का उद्घाटन किया और डा.विष्णुवर्धन, एसोसियेट अनुसंधान निदेशक ने अध्यक्षता की।

अलियारनगर (तमिलनाडु)

तमिलनाडु कृषि विश्वविद्यालय, नारियल अनुसंधान केंद्र, अलियारनगर, वनवरायर कृषि संस्था, कोयंबत्तूर नारियल उत्पादक कंपनी लिमिटेड और विनायका नारियल उत्पादक कंपनी ने संयुक्त रूप में 2 सितंबर 2018 को वनवरायर

कृषि संस्था, मनाकटवु, पोल्लाच्ची, कोयंबत्तूर में विश्व नारियल दिवस मनाया।

वेप्पनकुलम (तमिलनाडु)

नारियल खेती पर एक दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन करके आवनम गाँव, पेरावुरानी ब्लॉक, तंजावूर जिले में 3 सितंबर 2018 को विश्व नारियल दिवस मनाया गया। डा.के.एस.विजय सेल्वराज, एसिस्टेंट प्रोफेसर (बागवानी), श्री वी मतियरसन, सहायक कृषि निदेशक, डा.ए.कार्तिकेयन, प्रोफेसर एवं अध्यक्ष और प्रगतिशील किसान श्री माणिक्यम

तेवर तथा श्री बालसुब्रमण्यम ने इस अवसर पर बात की। डा.के.एस.विजय सेल्वराज, एसिस्टेंट प्रोफेसर (बागवानी), डा.ए.सेल्वरानी, एसिस्टेंट प्रोफेसर (कृषि विज्ञान) और डा.एस.तंगेश्वरी, एसिस्टेंट प्रोफेसर (वनस्पति रोग विज्ञान) ने उच्च पैदावारयुक्त नारियल किस्म, अपनी नर्सरी बढ़ाने हेतु मातृ वृक्ष का चयन, एकीकृत फसल प्रबंधन तथा नारियल में एकीकृत कीट एवं रोग प्रबंधन पर बात की। किसानों ने नारियल खेती, मूल्य वर्धन एवं विपणन संबंधी विभिन्न समस्याओं पर वैज्ञानिकों से बातचीत की।

भा.कृ.अनु.प.-केंद्रीय तटीय कृषि अनुसंधान संस्थान, ओल्ड गोवा

भा.कृ.अनु.प.- केंद्रीय तटीय कृषि अनुसंधान संस्थान, ओल्ड गोवा ने भा.कृ.अनु.प.- अखिल भारतीय समन्वित ताड़ अनुसंधान परियोजना - गोवा और भा.कृ.अनु.प.-कृषि विज्ञान केंद्र नोर्थ गोवा तथा नारियल किसानों व उद्यमियों के सहयोग से विश्व नारियल दिवस मनाया। 30 से 31 अगस्त 2018 तक विर्जिन नारियल तेल पर प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान नारियल किस्म, ताड़ारोही मशीन तथा नारियल उत्पादों का प्रदर्शन कृषि विज्ञान केंद्र नोर्थ गोवा में संपन्न हुआ। 1 सितंबर 2018 को 15 किसानों को पोंडा के पास मरडोल

गाँव पंचायत में ऑफ कैम्पस प्रशिक्षण दिया गया। डा.ई.बी.चाकुरकर, निदेशक(कृ.), भा.कृ.अनु.प.- केंद्रीय तटीय कृषि अनुसंधान संस्थान, ओल्ड गोवा ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। कोटिगांव, कनाकोना तालुक, साउथ गोवा में 2 सितंबर 2018 को एक दूसरा ऑफ कैम्पस प्रशिक्षण दिया गया। डा.वी.अरुणाचलम, प्रधान वैज्ञानिक (बागवानी) और प्रभारी भा.कृ.अनु.प.- अखिल भारतीय समन्वित ताड़ अनुसंधान परियोजना - गोवा केंद्र ने गतिविधियों का समन्वय किया और चार दिवसीय कार्यक्रम के दौरान किसानों तथा उद्यमियों को नारियल उद्योग के बारे में विवरण दिया।

भाट्ये, रत्नगिरी (महाराष्ट्र)

क्षेत्रीय नारियल अनुसंधान केंद्र, (एआईसीआरपीपी), भाट्ये और एटीएमए, रत्नगिरी ने संयुक्त रूप में विश्व नारियल दिवस कार्यक्रम मनाया। डा.श्रीरंग कद्रेकर, भूतपूर्व कुलपति, डा.बीएसकेकेवी, दापोली इस अवसर पर मुख्यातिथि रहे और नारियल क्षेत्र में अनुसंधान की आवश्यकता पर प्रकाश डाला जो किसान समूह के लिए फायदेमंद है। श्री सुनिल चौहान, माननीय जिलाधीश, रत्नगिरी, श्री राजबाहु लिमाय, भूतपूर्व उपाध्यक्ष, नारियल विकास बोर्ड, श्री अनिल जोशी, अध्यक्ष, कोकनट ग्रोवेर्स एसोसियेशन, रत्नगिरी, श्री गुरुदत्ता काले, उप निदेशक, एटीएमए, रत्नगिरी, श्री आरिफ शाहा, कृषि विकास अधिकारी, रत्नगिरी इस अवसर पर उपस्थित थे।

काहिकुची (असम)

विश्व नारियल दिवस के सुअवसर पर 2 सितंबर 2018 को अखिल भारतीय समन्वित ताड़ अनुसंधान परियोजना, बागवानी अनुसंधान केंद्र, काहिकुची, गुवाहटी द्वारा कामरूप जिले के अधीन सरपारा गाँव, मिरज़ा के किसान के खेत में एक दिवसीय कार्यक्रम आयोजित किया। डा.जे.सी.नाथ, अखिल भारतीय समन्वित ताड़ अनुसंधान परियोजना के प्रधान अन्वेषक ने असम के कृषि परिदृश्य में नारियल की स्थिति, अहमियत एवं संभावनाओं पर प्रकाश डाला। डा.ए.ए.अहमद, केंद्र के प्रधान वैज्ञानिक ने देश में नारियल

के औद्योगिक उपयोगों और क्षेत्र में डाब व नीरा के स्वास्थ्य लाभों पर ज़ोर दिया। प्रशिक्षण सत्र में डा.पी. बोरा (व.वैज्ञानिक) और डा.पी.पाठक (प्र.वैज्ञानिक), एचआरएस, काहिकुची ने किसान समूह के लिए नारियल खेती को अधिक लाभकारी बनाने के लिए वैज्ञानिक उत्पादन प्रणाली, फसलोत्तर प्रबंधन, नारियल पौधा संरक्षण एवं उत्पाद विविधीकरण पर विवरण दिया। कार्यक्रम में कामरूप जिले के विभिन्न जगहों से 115 किसानों ने सक्रिय रूप से भाग लिया।

जगदलपुर (छत्तीसगढ़)

अखिल भारतीय समन्वित ताड़ अनुसंधान परियोजना और नारियल विकास बोर्ड ने संयुक्त रूप में 2 सितंबर 2018 को स्वामी विवेकानंद सभागार, कॉलेज ऑफ एग्रिकल्चर,

रायपुर में "बेहतर स्वास्थ्य, समृद्धि और खुशहाली के लिए नारियल" विषय पर विश्व नारियल दिवस मनाया।

मंदौरी (पश्चिम बंगाल)

अखिल भारतीय समन्वित ताड़ अनुसंधान परियोजना, मंदौरी केंद्र बीसीकेवी, कल्याणी ने बागवानी अनुसंधान केंद्र, मंदौरी में 2 सितंबर 2018 को विश्व नारियल दिवस मनाया।

प्रो.डा.डी. पात्रा, कुलपति, बासीकेवी ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। प्रो.ए.बी.सारंगी, विभागाध्यक्ष, मसाले और रोपण फसल, प्रो.जे.तरफदार, एसआईसी, अ.भा.स.अनु.प. कंद फसल, प्रो.आर.साधुखान, एसआईसी, अ.भा.स.अनु.प. पुष्पकृषि, डा.एस मित्रा, फार्म निदेशक, वैज्ञानिक एवं कर्मचारियों ने कार्यक्रम में भाग लिया।

नवसारी (गुजरात)

अखिल भारतीय समन्वित ताड़ अनुसंधान परियोजना, एएसपीईई बागवानी एवं वानिकी कॉलेज, 'नवसारी कृषि विश्वविद्यालय, नवसारी ने 2 सितंबर 2018 को 'नारियल उत्पादन प्रौद्योगिकी' पर एक दिवसीय किसान प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया। डा.पी.पी.भलेराउ ने कार्यक्रम का उद्घाटन किया। श्री जी.बी.देशाई, एएसपीईई बागवानी एवं वानिकी कॉलेज, नवसारी कृषि विश्वविद्यालय, नवसारी और श्री शशिकांतबाई पटेल (किसान) कार्यक्रम में उपस्थित रहे।

सबौर (बिहार)

अखिल भारतीय समन्वित ताड़ अनुसंधान परियोजना (नारियल), बीएसी सबौर ने भोला पास्वान शास्त्री कृषि कॉलेज, पूर्णिया के सहयोग से 11 सितंबर 2018 को विश्व नारियल दिवस समारोह-सह-प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया। तीन जिलों जैसे पूर्णिया, कटिहार तथा अररिया से लगभग 77 किसानों ने कार्यक्रम में भाग लिया। डा.सीमा

सिंह, अध्यक्ष एवं वरिष्ठ वैज्ञानिक, केवीके, जलगढ़ और डा.नन्दियाट, केवीके,कटिहार ने कार्यक्रम में भाग लिया। डा.पारस नाथ, प्राचार्य, बीपीएसएसी, पूर्णिया, डा.रूबी रानी, पीआई, अखिल भारतीय समन्वित ताड़ अनुसंधान परियोजना (नारियल), डा.सूरज प्रकाश, एसिस्टेंट प्रोफेसर (बागवानी), बीपीएसएसी, पूर्णिया और डा.पारस नाथ, प्राचार्य, बीपीएसएसी, पूर्णिया ने इस अवसर पर बात की।

पोर्ट ब्लेयर (अंडमान व निकोबार द्वीप समूह)

भा.कृ.अनु.प.- केंद्रीय द्वीपीय कृषि अनुसंधान संस्थान, पोर्ट ब्लेयर ने भा.कृ.अनु.प.-अखिल भारतीय समन्वित ताड़ अनुसंधान परियोजना, भा.कृ.अनु.प.-केंद्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान, कासरगोड़; नारियल विकास बोर्ड, कोची; राष्ट्रीय बागवानी बोर्ड, गुरुग्राम; राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक (नबार्ड) और अंडमान व निकोबार संघ शासित क्षेत्र प्रशासन के सहयोग से मूल्य वर्धन के ज़रिए समृद्धि विषय पर नारियल पर उद्यमिता विकास कार्यक्रम आयोजित किया।

भुबनेश्वर (ओड़िशा)

अखिल भारतीय समन्वित ताड़ अनुसंधान परियोजना, भुबनेश्वर केंद्र ने केवीके, पुरी, सखीगोपाल में 2 सितंबर 2018 को “विश्व नारियल दिवस - 2018” मनाया। मुख्यातिथि प्रो.आर.के.पात्रा, डीन(अनुसंधान), ओड़िशा कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय ने कार्यक्रम का उद्घाटन किया और “विश्व नारियल दिवस” मनाने के उद्देश्य पर भाषण दिया। प्रो.टी.के.मिश्र, एसोसियेट अनुसंधान निदेशक (बीज) और प्रो.के.सी.बारीक, वरिष्ठ वैज्ञानिक, डीन (अनुसंधान स्कंध) ने नारियल की अहमियत पर भाषण दी।

डा. एच.पी.महेश्वरप्पा, *अखिल भारतीय समन्वित ताड़ अनुसंधान परियोजना, भा.कृ.अनु.प.- केंद्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान, कासरगोड़-671 124 द्वारा तैयार की गई रिपोर्ट*

आहार- 2018 इंटरनेशनल फुड एण्ड होस्पिटेलिटी फेयर

नारियल विकास बोर्ड ने चेन्नै ट्रेड सेंटर में 23 से 25 अगस्त 2018 तक संपन्न आहार- 2018 इंटरनेशनल फुड एण्ड होस्पिटेलिटी फेयर के 12वें संस्करण में भाग लिया। बोर्ड ने इस अंतर्राष्ट्रीय कार्यक्रम के भागीदारों/ दर्शकों को नारियल तथा नारियल आधारित मूल्य वर्धित उत्पादों की समृद्धि एवं गुंजाइश को दर्शाया। श्री कुमार जयनाथ भा.प्र.से., प्रधान सचिव, समन्वय, खाद्य एवं उपभोक्ता संरक्षण विभाग, तमिलनाडु सरकार ने कार्यक्रम का उद्घाटन किया।

बोर्ड के साथ सर्वश्री विनायका नारियल उत्पादक कंपनी और वटकरा नारियल उत्पादक कंपनी और नारियल प्रसंस्करण इकाइयाँ जैसे सर्वश्री शक्ति कोको प्रोडक्ट्स, सर्वश्री वामा ओइल प्राइवेट लिमिटेड और श्रीराम कोकनट प्रोडक्ट्स ने मेले के दौरान विभिन्न मूल्य वर्धित नारियल उत्पादों का प्रदर्शन लगाया। सहभागी सीपीएसों और टीएमओसी सहायता प्राप्त इकाइयों को उनके नारियल आधारित मूल्य वर्धित उत्पादों जैसे नारियल चीनी, डिब्बाबंद नीरा, विर्जिन नारियल तेल आदि के लिए कई अच्छे व्यापार पूछताछ मिली।

आहार 2018 में बोर्ड के स्टाल में आगंतुक

वानवरायर कृषि संस्था में विश्व नारियल दिवस मनाया

वानवरायर कृषि संस्था, पोल्लाच्ची में 2 सितंबर 2018 को आयोजित विश्व नारियल दिवस समारोह में नारियल विकास बोर्ड, क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नै ने भाग लिया।

श्री सी.पी.राधाकृष्णन, अध्यक्ष, कयर बोर्ड, कोची ने अपने अध्यक्षीय भाषण में सूचित किया कि अब कयर निर्यात 2535 करोड़ रुपए तक बढ़ गया है और उम्मीद है कि निकट भविष्य में यह 20,000 करोड़ रुपए तक बढ़ेगा। उन्होंने किसानों से 2020 में अपनी आय दुगुना करने के लिए कड़ी मेहनत करने का अनुरोध किया।

डा.सी.अनंतरामकृष्णन, निदेशक, आईआईएफपीटी, तंजावूर ने अपने भाषण में आईआईएफपीटी के द्वारा प्रदत्त सुविधाओं पर बात की और किसानों से अनुरोध किया कि अपनी आय बढ़ाने के लिए उपलब्ध सुविधाओं का उपयोग करें। डा.एम.जवाहरलाल, डीन, बागवानी कॉलेज एवं अनुसंधान संस्थान, तमिलनाडु कृषि विश्वविद्यालय, श्री आर.ए.शक्तिवेल, अध्यक्ष, तमिलनाडु सीपीएसों का कन्सोर्शियम, श्रीमती बाला सुधाहरि, उप निदेशक, नाविबो, क्षे.का., चेन्नै, डा.एस.बालकृष्णन, प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, मसाले और सगंध प्रभाग, तमिलनाडु कृषि विश्वविद्यालय, डा.के.वेंकिटेशन, विभागाध्यक्ष, सीआरएस, तमिलनाडु कृषि विश्वविद्यालय, श्री एस.एस.वासीकरन, विकास प्रबंधक, नबार्ड, कोयंबत्तूर और डा.कुमारवटिवेल, भा.कृ.अनु.प., केवीके, कारामटै ने इस अवसर पर बात की। श्रीमती बाला सुधाहरि, उप निदेशक, नाविबो, क्षे.का. ने इस वर्ष विश्व नारियल दिवस का मुख्य विषय "बेहतर स्वास्थ्य, समृद्धि और खुशहाली के लिए नारियल" पर ज़ोर दिया और तेल आधारित अर्थव्यवस्था से अन्य मूल्य वर्धित उत्पाद आधारित अर्थव्यवस्था में नरियल के बदलाव की आवश्यकता पर बात की। डा.एन.बालुसामी, डीन, वानवरायर कृषि कॉलेज ने स्वागत भाषण दिया और श्री पी.के.पद्मनाभन, अध्यक्ष, विनायका सीपीसी ने धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम में लगभग 500 किसानों ने भाग लिया।

कार्यक्रम के बाद संपन्न तकनीकी सत्र में डा.पी.सुब्रमण्यन, श्रीमती टी बाला सुधाहरि, डा.एस.बालकृष्णन, प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, मसाले एवं सगंध रोपण और डा.वेंकिटेशन, विभागाध्यक्ष, सीआरएस, तमिलनाडु कृषि विश्वविद्यालय, आलियार ने नारियल से संबंधित विविध विषयों पर चर्चा की।

पटना में क्रेता विक्रेता सम्मेलन
व्यापारीगण एफपीओ के साथ सहयोग करने में इच्छुक

भारत के उपभोक्ता राज्यों में क्रेताओं के साथ किसान उत्पादक संगठनों का संपर्क स्थापित करने की संभावनाओं की जाँच करने के उद्देश्य से 30 अक्तूबर 2018 को पटना में पूर्वी क्षेत्र के लिए भा.कृ.अनु.प. अनुसंधान कोम्प्लेक्स में एक क्रेता विक्रेता सम्मेलन आयोजित किया था। बिहार में छठ त्यौहार के कारण नवंबर महीने में ताज़ा एवं सूखा नारियल की बहुत अधिक मांग है और इस अवधि के दौरान क्रेता विक्रेता सम्मेलन का आयोजन बाज़ार संबंध बनाने का अवसर प्रदान करेगा।

डा.राजु नारायणा स्वामी, अध्यक्ष, नारियल विकास बोर्ड ने सम्मेलन का उद्घाटन किया। श्री संजीव कुमार सिंह, बोर्ड सदस्य, नाविबो इस अवसर पर उपस्थित रहे। तमिलनाडु, कर्नाटक और आँध्र प्रदेश के नारियल उत्पादक कंपनियों तथा फेडरेशनों से ताज़ा नारियल और सूखा

डा.राजु नारायणा स्वामी भा.प्र.से., अध्यक्ष, नारियल विकास बोर्ड क्रेता विक्रेता सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए

नारियल का व्यापार करनेवाले किसान प्रतिनिधियों ने सम्मेलन में भाग लिया। पटना और उसके आस-पास से तथा लखनऊ से लगभग 20 व्यापारियों ने सम्मेलन में भाग लिया। बिहार इंडस्ट्रियल एसोसियेशन, ग्राम भारती फाउंडेशन एवं बाज़ार समिति, पटना के प्रतिनिधियों ने भी भाग लिया।

क्रेता और विक्रेता द्वारा अपना परिचय दिया गया। तदुपरांत मूल्य निर्धारण, परिमाण, माल परिवहन आदि पर क्रेता और विक्रेता के साथ आपस में बातचीत हुई। प्रमुख नारियल उत्पादों की छोटी प्रदर्शनी की व्यवस्था की गई थी। एफपीओ ने ताज़ा नारियल और गोल खोपरा या सूखा नारियल के विभिन्न ग्रेड़ प्रदर्शित किए। व्यापारियों ने उचित दाम पर अच्छे गुणवत्तापूर्ण उत्पादों को प्राप्त करने के लिए एफपीओ के साथ सहयोग बढ़ाने में इच्छा व्यक्त की। बिहार इंडस्ट्रियल एसोसियेशन ने सूचित किया कि वे क्रेताओं को संगठित करने एवं एफपीओं के साथ संपर्क सुगम बनाने में मुख्य भूमिका निभाएंगे। एक बार क्रेताओं के साथ सहयोग बन जाने पर नाविबो ताज़ा नारियल और सूखे नारियल के लिए एफपीओ के साथ बाज़ार संबंध सुगम बना देगा।

नारियल विकास बोर्ड की 134वीं बैठक

134वीं नाविबो बैठक का दृश्य

डा.राजु नारायणा स्वामी भा.प्र.से., अध्यक्ष, नारियल विकास बोर्ड की अध्यक्षता में नारियल विकास बोर्ड की 134वीं बैठक 25 अक्तूबर 2018 को भुबनेश्वर में संपन्न हुई।

श्री एम.आर.शंकरनारायण रेड्डी, उपाध्यक्ष और बोर्ड के सदस्य डा.पी.चौडप्पा, निदेशक, सीपीसीआरआई, श्री के.के.रागेश, सांसद (राज्य सभा), श्री पी.सी.मोहनन मास्टर, केरल, श्री पी.आर.मुरलीधरन, केरल, श्री एस.मोहनराज, तमिलनाडु, डा.बिश्वनाथ राठ, ओड़िशा, श्री संजीव कुमार सिंह, बिहार, श्रीमती दक्षा रामा, गुजरात एव स्थायी अतिथि श्री बी.प्रधान भा.प्र.से., अपर सचिव, भारत सरकार एवं वित्तीय सलाहकार, कृषि, सहकारिता एवं किसान कल्याण विभाग, श्री दिनेश कुमार भा.प्र.से., संयुक्त सचिव (एमआईडीएच), कृषि, सहकारिता एवं किसान कल्याण विभाग, श्री सरदिंदु दास, मुख्य नारियल विकास अधिकारी और श्री आर मधु, सचिव, नारियल विकास बोर्ड ने बैठक में भाग लिया।

इंटर्नेशनल कोकनट कम्यूनिटी में एपीसीसी का दर्जा बढ़ गया

किरिबाती में संपन्न 53वीं एपीसीसी सत्र/अनुसचिवीय बैठक ने अनुच्छेद में संशोधन के ज़रिए वैश्विक संगठन के रूप में एशियन और पसफिक कोकनट कम्यूनिटी का दर्जा बढ़ाने की सर्वसम्मति दी, इस प्रकार सदस्यता योग्यता के लिए भौगोलिक सीमाओं की जो परिभाषा दी जाती है, वह हटा दी गई है। यह सभी नारियल उत्पादक देशों को कम्यूनिटी की पूर्ण सदस्यता प्राप्त करने में सक्षम बनाता है।

अंतर्राष्ट्रीय स्थिति हासिल करने के लिए एशियन और पसफिक कोकनट कम्यूनिटी का दर्जा बढ़ाने का निर्णय भारत और इंडोनेशिया में क्रमशः वर्ष 2015 और 2016 की अनुसचिवीय बैठक सहित कई वर्षों से परिचर्चा एवं विचार-विमर्श का विषय रहा था।

संयुक्त राष्ट्र के महासचिव को अनुच्छेद के अनुसार अधिसूचित किया गया था। संयुक्त राष्ट्र संधि कार्यालय ने 20 मार्च 2018 की डिपासिटरी अधिसूचना के साथ जवाब दिया, ऐसे इंटर्नेशनल कोकनट कम्यूनिटी (आईसीसी) स्थापित करने के लिए आवश्यक सभी कार्यालयीन आवश्यकताओं को पूरा कर दिया है। फिलहाल 16 नारियल उत्पादक देश आईसीसी के पूर्ण सदस्य हैं। भारत, इंडोनेशिया, मलेशिया, फिलीपीन्स, श्रीलंका, थाइलैंड और वियतनाम एशियन क्षेत्र के सदस्य हैं। फेडरेटड

स्टेट ऑफ माइक्रोनेशिया, फिजी, किरिबाती, मार्शल द्वीपसमूह, पपुआ न्यू गिनी, समोआ, सोलोमन द्वीपसमूह, टोंगा और वानूआतू पसफिक क्षेत्र के सदस्य हैं। सहयोगी सदस्य जमैका और कीनिया पूर्ण सदस्यता प्राप्त करने के लिए आवेदन प्रस्तुत करेंगे। तिमोर लेस्ते 2018 में स्वीकृत नया सदस्य है जो संयुक्त राष्ट्र के महासचिव द्वारा अधिसूचना की औपचारिक प्रक्रिया की प्रतीक्षा में है। यह जोड़ कुल पूर्ण सदस्यों की संख्या 19 देशों तक लाएगा।

मलेशिया में 54वाँ एपीसीसी सत्र/अनुसचिवीय बैठक

54वाँ एपीसीसी सत्र/अनुसचिवीय बैठक का दृश्य

एपीसीसी का 54वाँ सत्र/अनुसचिवीय बैठक 24 से 28 सितंबर 2018 तक मलेशिया के कुआलालंपुर में संपन्न हुआ। कृषि और कृषि आधारित उद्योग मंत्रालय, मलेशिया सरकार ने बैठक की मेज़बानी की।

माननीय दातो सलाहुद्दीन अयूब, कृषि एवं कृषि आधारित उद्योग मंत्री, मलेशिया, एपीसीसी के सदस्य देशों के पूर्णाधिकारी प्रतिनिधिगण, माननीय अतारके नतारा, वाणिज्य, उद्योग और सहकारिता मंत्री, किरीबाती सरकार, माननीय वियाम पिल्लै, सहायक कृषि मंत्री, फिजी सरकार, माननीय बेन्नी अलन एम.पी., कृषि एवं पशुपालन मंत्री, पापुआ न्यू गिनिया सरकार, माननीय फाआसोओटाउलोआ पाटी ताउलापापा, कृषि एवं मात्स्यिकी सहयोगी मंत्री, समोआ सरकार ने सत्र में भाग लिया। एपीसीसी सदस्य देशों के वरिष्ठ सरकारी पदधारियों और अंतर्राष्ट्रीय कृषि एवं जैवविज्ञान केन्द्र के निरीक्षकों और मेलानेशियन स्फियरहेड ग्रूप सेक्रटेरिएट ने भी बैठक में भाग लिया। माननीय सलाहुद्दीन अयूब, कृषि एवं कृषि आधारित उद्योग मंत्री, मलेशिया सरकार ने मंत्रीगण, प्रतिनिधिमंडल और सदस्य देशों के पूर्णाधिकारी प्रतिनिधियों की समुपस्थिति में सत्र का उद्घाटन किया।

उद्घाटन सत्र के दौरान माननीय कृषि एवं कृषि आधारित उद्योग मंत्री, मलेशिया सरकार और मलेशिया में नारियल क्षेत्र एवं उद्योग के पुरस्कार विजेताओं को एपीसीसी का प्रशंसा फलक प्रदान किया गया। सत्र में एपीसीसी का दर्जा बढ़ाने और अंतर्राष्ट्रीय कोकनट कम्यूनिटी के रूप में पुनर्नामित करने पर और नारियल के स्वास्थ्य पहलुओं संबंधी एपीसीसी वैज्ञानिक सलाहकार समिति के नवीनतम सुझावों पर चर्चा हुई।

सदस्य देशों द्वारा देशीय आलेख की प्रस्तुति में नारियल क्षेत्र के विकास को बढ़ावा देने में राष्ट्रीय सरकारों और विधानों ने जो कार्यक्रम और नीतियाँ चलाए जा रहे हैं उनके अद्यतन संक्षिप्त विवरण प्रदान किया। प्रतिनिधियों ने अपने अपने देश के नारियल उत्पादन, प्रसंस्करण और निर्यात संबंधी आँकड़े और नारियल पुनर्रोपण, नवरोपण और पुनर्सुधार कार्यक्रमों संबंधी अद्यतन जानकारियाँ प्रस्तुत कीं। प्रतिनिधियों ने बागों की उत्पादकता बढ़ाने और किसानों की आय में वृद्धि लाने के लिए देश में कार्यान्वित की जा रही अनुसंधान और विकास गतिविधियों, नीतियों और कार्यक्रमों पर भी प्रकाश डाला। नारियल क्षेत्र द्वारा सामना किए जा रहे प्रतिबंधों और इस क्षेत्र को आगे बढ़ाने के लिए सुझावित मार्गरेखा पर भी प्रतिनिधियों ने संक्षिप्त परिचय दिया। देशीय आलेख से विविध देशों द्वारा चलायी जा रही विकासात्मक गतिविधियों को समझने में और इन मोडलों को दूसरे देशों में भी विशिष्ट रूप से कार्यान्वित करने के लिए दोहराने में मदद मिली। आशयों और प्रोद्योगिकियों का आदान प्रदान करने के लिए भी यह सहायक रहा और सदस्य देशों के बीच संभव सहयोग हेतु मार्ग प्रशस्त हुआ।

भारत, इंडोनेशिया, फिलीपीन्स और श्रीलंका जैसे प्रमुख नारियल उत्पादक देशों ने दूसरे सदस्य देशों के लिए वह अंतर्दृष्टि प्रदान की जिससे कि वे नारियल क्षेत्र में टिकाऊ विकासात्मक गतिविधियाँ सुनिश्चित करने की राह पर अग्रसर हो सके।

सत्र ने 48वें एपीसीसी कोकोटेक की सिफारिशों का समर्थन किया और अनुमोदित किया कि आगामी 49वाँ अंतर्राष्ट्रीय कोकोटेक सम्मेलन 'टिकाऊ नारियल विकास हेतु स्मार्ट खेती और परिस्थिति अनुकूल प्रौद्योगिकियों को बढ़ावा देना' विषय पर संपन्न होगा।

प्रतिनिधियों को सुंगाई यू, केलुआरगा जया रिसोर्सेस, तानजुंग कारंग के नारियल बागानों और कापर नारियल उद्योग की नारियल प्रसंस्करण सुविधाओं के क्षेत्र दौरे के लिए भी ले जाया गया।

राजभाषा में जागरूकता कार्यक्रम संपन्न

बोर्ड में राजभाषा के प्रयोग को बढ़ावा देने के उद्देश्य से मुख्यालय में 19 दिसंबर 2018 को आयकर संबंधी प्रावधानों पर राजभाषा में एक जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। श्री आर.मधु, सचिव, नाविबो ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। मुख्य आयकर आयुक्त के कार्यालय के आयकर अधिकारी श्री हरीष कुमार और आयकर निरीक्षक श्री ललित कुमार विषय विशेषज्ञ के रूप में वक्तव्य दिया। श्री ललित कुमार, आयकर निरीक्षक ने आयकर संबंधी प्रावधानों पर प्रस्तुति देते हुए वेतनभोगी वर्ग के लिए उपयोगी आयकर प्रावधानों पर विस्तृत जानकारी प्रस्तुत की। इसके साथ एक विचार-विनिमय सत्र भी रखा गया जिसमें श्री हरीष कुमार, आयकर अधिकारी ने पदधारियों के सवालों का जवाब दिया। श्रीमती बीना एस., सहायक निदेशक(रा.भा.) ने सभा का स्वागत किया और श्रीमती संगीता टी.एस., वरिष्ठ अनुवादक ने धन्यवाद अदा किया।

मंच पर (दाएं से) श्री आर.मधु, सचिव, नाविबो, श्री हरीष कुमार, आयकर अधिकारी, मुख्य आयकर आयुक्त का कार्यालय और श्री ललित कुमार, आयकर निरीक्षक, मुख्य आयकर आयुक्त का कार्यालय

'द हिंदु इन स्कूल' नाविबो के ज़रिए अधिकाधिक स्कूलों में

द हिंदु समाचार पत्र की प्रतियों का वितरण

विद्यार्थियों में वाचन की आदत डालने के लक्ष्य से नारियल विकास बोर्ड द हिंदु के सहयोग से इस शिक्षा-वर्ष के दौरान एरणाकुलम जिले के बत्तीस सरकारी स्कूलों में द हिंदु समाचार पत्र की प्रतियाँ मुफ्त में वितरित कर रहा है। बोर्ड यह कार्यक्रम संगठित सामूहिक उत्तरदायित्व की पहल के भाग के रूप में कार्यान्वित कर रहा है।

"पुस्तकें ऐसा खज़ाना हैं जो हमें सोना, चाँदी या कीमती जवाहरातों से नहीं, बल्कि ज्ञान, नेक काम, उन्नत आशय जैसे बेशकीमती चीज़ों से अमीर बनाता है," डा.राजु नारायणा स्वामी भा.प्र.से., अध्यक्ष, नारियल विकास बोर्ड ने गवर्नमेंट हाई स्कूल, इटाप्पल्ली, कोची में 28 नवंबर

डा. राजु नारायणा स्वामी भा.प्र.से., अध्यक्ष, नाविबो सभा को संबोधित करते हुए

2018 को द हिंदु इन स्कूल के अंतर्गत निशुल्क प्रतियों के वितरण के औपचारिक लोकार्पण के बाद सभा को संबोधित करते हुए कहा।

श्रीमती षिजा पाराप्पुरत्तु, प्रधान अध्यापिका, श्रीमती श्रीलक्ष्मी एस., फैकल्टी, अंग्रेज़ी विभाग और श्री सुरेश जोर्ज, वरिष्ठ उप महा प्रबंधक, द हिंदु ने इस अवसर पर भाषण दिया। श्रीमती मिनी मैथ्यू, प्रचार अधिकारी, नाविबो, श्री सुरेश पिल्लै, सहायक महा प्रबंधक, द हिंदु और विद्यार्थियों ने कार्यक्रम में भाग लिया।

कन्याकुमारी नारियल उत्पादक कंपनी को नीरा लाइसेंस प्राप्त हुआ

कन्याकुमारी नारियल उत्पादक कंपनी, नागरकोविल, कन्याकुमारी जिला, तमिलनाडु को नारियल नीरा उतारने, प्रसंस्करित करने और विपणन के लिए नीरा लाइसेंस प्राप्त हुआ। लाइसेंस 19 दिसंबर से 31 मार्च 2019 तक वैध है। नीरा उतारने के लिए कंपनी द्वारा दो नीरा मास्टर प्रशिक्षकों सहित 12 प्रशिक्षित नीरा तकनीशियनों को लगाया जा सकता है।

एग्रोविशन

नारियल विकास बोर्ड, राज्य केन्द्र, ठाणे ने एग्रोविशन फाउंडेशन, नई दिल्ली द्वारा 23 से 26 नवंबर 2018 तक रेशिमबाग, नागपुर, महाराष्ट्र में आयोजित एग्रोविशन प्रदर्शनी-2018 के 10वें संस्करण में भाग लिया।

श्री राधा मोहन सिंह, माननीय केन्द्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री, भारत सरकार ने श्री योगी आदित्यनाथ, माननीय मुख्य मंत्री, उत्तर प्रदेश, श्री देवेन्द्र फडणवीस, माननीय मुख्य मंत्री, महाराष्ट्र सरकार, श्री नितिन गडकरी, माननीय केन्द्रीय परिवहन मंत्री, भारत सरकार, श्री सुधीर मुनगंटीवार, माननीय वित्त मंत्री, महाराष्ट्र सरकार, श्री चंद्रकांत पाटील, माननीय राजस्व, राहत और पुनर्वसन, सार्वजनिक कार्य मंत्री, महाराष्ट्र सरकार, श्री चंद्रशेखर बावनकुले, ऊर्जा मंत्री, महाराष्ट्र सरकार और केन्द्र सरकार एवं राज्य सरकार के महद् व्यक्तियों एवं अन्य पदधारियों की समुपस्थिति में कार्यक्रम का उद्घाटन किया। मशीनों, उपस्करों, आदान सामग्रियों के वितरणकर्ताओं और खाद्य उद्योग के अर्ध प्रसंस्कृत उत्पादों के विनिर्माताओं में से सर्वोत्तम कंपननियों के 170 से अधिक प्रदर्शकों ने अपने उत्पाद प्रदर्शित किए।

एग्रोविशन में बोर्ड का स्टाल

नारियल विकास बोर्ड ने विदर्भ क्षेत्र के नारियल उत्पाद उद्यमियों और खुदरे व्यापारियों को बढ़ावा देने के उद्देश्य से एग्रोविशन में भाग लिया। बोर्ड ने पैकटबंद डाब पानी, नारियल तेल, नारियल दूध पाउडर, विर्जिन नारियल तेल जैसे नारियल के मूल्यवर्धित उत्पादों और सूचनात्मक चार्ट, पोस्टर आदि प्रदर्शित किए। इस अवसर पर विविध भाषाओं में प्रकाशित बोर्ड की पत्रिकाएं, पुस्तिकाएं और ब्रोशर भी आगंतुकों को वितरित किए। महद् व्यक्तियों, विविध राष्ट्रीय कंपनियों और गैर सरकारी संगठनों के पदधारियों, सभी आयु वर्ग के व्यवसाय समूहों ने नाविबो स्टाल का दौरा किया।

फेलो पुरस्कार

डा.एच.पी.महेश्वरप्पा, परियोजना समन्वयक(ताड़), भा.कृ.अनु.प.-केन्द्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान, कासरगोड को ताड़ फसल/खेती विधि अनुसंधान, रोपण फसलों में पोषण प्रबंधन और रोपण फसलों में जैविक खेती जैसे विशिष्ट पहलुओं के साथ कृषि के क्षेत्र में उनकी उत्कृष्ट उपलब्धियों के लिए फेलो ऑफ इंडियन सोसाइटी ऑफ अग्रोणमी, नई दिल्ली पुरस्कार से सम्मानित किया गया। डा. रमेश चंद, सदस्य, नीति आयोग, भारत सरकार, नई दिल्ली ने 24 अक्तूबर 2018 को एमपीयूएटी, उदयपुर(राजस्थान) में संपन्न XXI द्विवार्षिक राष्ट्रीय सिंपोसियम के अवसर पर आयोजित समारोह में पुरस्कार प्रदान किया।

डा.एच.पी.महेश्वरप्पा डा.रमेश चंद से फेलो पुरस्कार ग्रहण करते हुए

नारियल के संवर्धन और विकास पर संगोष्ठी आयोजित

नाविबो क्षेत्रीय कार्यालय चेन्नै ने नारियल के संवर्धन और विकास पर 13 नवंबर 2018 को नागरकोविल, कन्याकुमारी जिला, तमिलनाडु में एक राज्य स्तरीय संगोष्ठी आयोजित की। तिरु. पोन राधाकृष्णन, माननीय केन्द्रीय वित्त एवं नौवहन राज्य मंत्री, भारत सरकार ने कार्यक्रम का उद्घाटन किया। माननीय मंत्री जी ने अपने उद्घाटन भाषण में व्यक्त किया कि हालाँकि नारियल कन्याकुमारी जिले की प्रमुख फसल है, किंतु यहाँ एक भी नारियल आधारित मूल्य वर्धित उद्योग स्थापित नहीं हुआ है जो कि जिले में नारियल के संवर्धन और विकास की बृहत् संभावनाओं के लाभ उठाने हेतु अत्यंत अनिवार्य है।

तिरु. पोन राधाकृष्णन, माननीय केन्द्रीय वित्त एवं नौवहन राज्य मंत्री, भारत सरकार संगोष्ठी का उद्घाटन करते हुए

की विपणन कार्यनीतियों पर बात की। ईतामोष्षी के किसान श्री सुंदरराजन और श्री रतिनाकरन ने अपने अपने अनुभव बाँटे। श्रीमती टी.बालसुधाहरी, उप निदेशक(विकास), नाविबो, क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नै ने स्वागत भाषण दिया और श्री जयपाण्डी, उप निदेशक(विपणन), क्षेत्रीय कार्यालय चेन्नै ने धन्यवाद अदा किया।

तदुपरांत संपन्न तकनीकी सत्र में डा.ए.कार्तिकेयन, प्रोफसर और अध्यक्ष, नारियल अनुसंधान केन्द्र, तमिलनाडु कृषि विश्वविद्यालय, वेप्पांकुलम, श्री के.सुशीलकुमार, शाखा प्रबंधक, टीआईआईसी, नागरकोविल, श्री कामराज, शक्ति कोको, डा.के.राजमाणिक्कम, प्रोफसर, नारियल अनुसंधान

गणमान्य व्यक्तियों का दृश्य

श्री मोहनराज, सदस्य, नारियल विकास बोर्ड ने अपने विशेष भाषण में बताया कि नाविबो के प्रबीउ फार्म, धली में नारियल पौधों की कई किस्में विकसित हुई हैं और उन्होंने किसानों को आह्वान किया कि वे नाविबो के फार्म से गुणवत्तापूर्ण नारियल पौध खरीदें।

डा.अनंतरामकृष्णन, निदेशक, आईआईएफपीटी ने कन्याकुमारी जिले के किसानों को आह्वान किया कि वे नारियल के मूल्य वर्धन पर ध्यान केन्द्रित करें। श्री प्रशांत एम.वडनेर भाप्रसे, जिलाधीश, कन्याकुमारी जिला ने जिले में नारियल के मूल्य वर्धन की आवश्यकता पर बात की और कहा कि किसानों को राज्य सरकार, नाबार्ड और नारियल विकास बोर्ड द्वारा प्रदत्त सुविधाओं का भरपूर लाभ उठाना चाहिए। डा.के.रामराय, अनुसंधान निदेशक, तमिलनाडु कृषि विश्वविद्यालय, कोयंबत्तूर ने अपने विशेष भाषण में नारियल किसानों से अनुरोध किया कि वे तमिलनाडु कृषि विश्वविद्यालय की सिफारिशों के अनुसार रोपण की दूरी, उर्वरक प्रयोग आदि के साथ वैज्ञानिक तरीके से अपने नारियल बाग की देखभाल करें। श्री निज़ामुद्दीन, अपर निदेशक, कृषि विपणन और कृषि व्यवसाय विभाग, तमिलनाडु सरकार ने नारियल

नारियल के मूल्य वर्धित उत्पादों की प्रदर्शनी

केन्द्र, तमिलनाडु कृषि विश्वविद्यालय, आलियार, श्री नंदकुमार, वैज्ञानिक, आईआईएफपीटी, तंजाऊर, श्री एल.नारायणमूर्ति, जैविक प्रमाणन विभाग, तमिलनाडु सरकार, श्रीमती ज़रीना बब्बी, एमएसएमई, तूत्तुकुटी, श्री रामकुमार, लीड बैंक प्रबंधक, नागरकोविल और डा.मुरलीधरन, सहायक प्रोफसर, कृषि कॉलेज, तमिलनाडु कृषि विश्वविद्यालय, किल्लिकुलम ने नारियल संबंधी विविध विषयों पर बात की। कार्यक्रम के सिलसिले में नारियल आधारित मूल्य वर्धित उत्पादों की एक प्रदर्शनी भी लगाई गई।

300 से अधिक नारियल किसानों और पदधारियों ने संगोष्ठी में भाग लिया।

कृषि मेला और कृषि एक्स्पो

कृषि एक्स्पो में नाविबो स्टाल का उद्घाटन

स्टाल का दृश्य

किसानों को नवीनतम प्रौद्योगिकियों से सशक्त बनाने और वर्ष 2022 तक किसानों की आय दुगुनी करना सुसाध्य बनाने के लिए केन्द्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान ने भा.कृ.अनु.प.-केन्द्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान, अनुसंधान केन्द्र, किडु, कर्नाटक में 10-11 नवंबर, 2018 को किसान मेला और कृषि एक्स्पो आयोजित किया। कार्यक्रम के सिलसिले में किसान बैठक-सह-कृषि-एक्स्पो के साथ किसानों, उद्यमियों और अन्य लाभभोगियों को शामिल करते हुए विविध इंटरफेस कार्यक्रम भी चलाए गए।

श्री वी.सदानंद गौडा, माननीय केन्द्रीय सांख्यिकी एवं कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्री ने समारोह का उद्घाटन

किया। अपने उद्घाटन भाषण में, माननीय मंत्रीजी ने केन्द्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान द्वारा रोपण फसलों के एकीकृत विकास हेतु कार्यान्वित की जा रही गतिविधियों की सराहना की। डा.वीरेंद्र हेगडे, धर्मस्थला के धर्माधिकारी कार्यक्रम के मुख्यातिथि रहे।

श्री एस.अंगारा, विधायक, सुल्लिया, श्री संजीव मटंदूर, विधायक, पुत्तूर, डा.राजु नारायणा स्वामी भाप्रसे, अध्यक्ष, नाविबो, डा.आरिज़ अहम्मद, प्रबंध निदेशक, राष्ट्रीय बागवानी बोर्ड और अन्य गणमान्य व्यक्ति इस अवसर पर उपस्थित थे।

डा.पी.चौडप्पा, निदेशक, केन्द्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान ने नारियल किस्मों के विकास, अनुरक्षण और संवर्धन में सीपीसीआरआई के किडु अनुसंधान केन्द्र की भूमिका का संक्षिप्त परिचय दिया। किडु में दक्षिण एशिया के लिए स्थापित अंतर्राष्ट्रीय नारियल जीन बैंक नारियल आनुवंशिकी नेटवर्क (कोजेंट)के अंतर्गत स्थापित पाँच जीन बैंकों में एक है। 39 देश कोजेंट के सदस्य हैं, जो पृथ्वी भर नारियल आनुवंशिकी स्रोतों के संरक्षण और उपयोग हेतु सहयोग को बढ़ावा देते हैं। डा.के.शंसुद्दीन, प्रधान वैज्ञानिक, केन्द्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान ने धन्यवाद अदा किया।

इस अवसर पर केन्द्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान के पाँच प्रकाशनों का लोकार्पण हुआ। कार्यक्रम के सिलसिले में रोपण फसलों में मिट्टी और जल संरक्षण प्रौद्योगिकियाँ, रोपण फसलों की उत्पादन प्रौद्योगिकियाँ, रोपण फसलों की उन्नत किस्मों और रोपण सामग्रियों के विकास पर सत्र चलाए गए।

किसान, थोक व्यापारी और कृषि, बागवानी, डेरी उद्योग एवं पशुपालन, फार्म मशीनरी तथा उपस्कर और संबद्ध क्षेत्र से जुड़े सभी लाभभोगी जो अपनी व्यापार गतिविधियों का विस्तारण और विविधीकरण करना चाहते हैं उनके लिए कृषि प्रदर्शनी ने एक बेहतरीन मंच प्रदान किया।

मशीनरी और उपस्कर, फसल संरक्षण, उर्वरक और कीटनाशी, शहरी खेती/हाइड्रोपोनिक्स, बीज/पौध, किसान कल्याण हेतु सरकारी योजनाएं एवं कार्यक्रम, कुक्कुट पालन, अक्वापोणिक्स, फार्म उपस्कर, जाल और पिंजरा एवं दूसरी सामग्रियों की प्रदर्शनी लगाई गई।

शाइनिंग महाराष्ट्र-2018

नारियल विकास बोर्ड ने 26 से 28 सितंबर 2018 तक गाँधी ग्राउंड, सोलापुर, महाराष्ट्र में सन्सा फाउंडेशन, नई दिल्ली द्वारा आयोजित शाइनिंग महाराष्ट्र-2018 में भाग लिया।

शाइनिंग महाराष्ट्र-2018 में भाग लेने का मुख्य उद्देश्य यह रहा कि पश्चिमी महाराष्ट्र में नारियल उत्पादों के वितरणकर्ताओं, उद्यमियों और खुदरे व्यापारियों की खोज की जा सके। नारियल विकास बोर्ड ने पैकेटबंद डाब पानी, नारियल तेल, नारियल दूध पाउडर, विर्जिन नारियल तेल और नारियल संबंधी सूचनात्मक चार्ट और पोस्टर प्रदर्शित किए। नाविबो स्टाल में अंग्रेज़ी और हिंदी में प्रकाशित बोर्ड के प्रकाशन और तकनीकी पुस्तिकाएं वितरित की गई। महद् व्यक्तियों, विविध राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय कंपनियों के पदधारियों और व्यापार समूह ने नाविबो स्टाल का दौरा किया।

उत्तरपूर्वी क्षेत्र में नाविबो योजनाओं के कार्यान्वयन पर समीक्षा बैठक संपन्न

उत्तरपूर्वी क्षेत्रों में नारियल विकास बोर्ड की योजनाओं के कार्यान्वयन की स्थिति की समीक्षा करने के लिए 31 अक्तूबर 2018 को गुवाहटी, असम में डा.राजु नारायणा स्वामी भाप्रसे, अध्यक्ष, नारियल विकास बोर्ड की अध्यक्षता में एक बैठक संपन्न हुई। बैठक में असम, अरुणाचल प्रदेश, मणिपुर, मेघालय, मिज़ोरम, नागालैंड और त्रिपुरा के वरिष्ठ अधिकारियों ने भाग लिया। श्री एल.ओबेद, निदेशक, नाविबो, क्षेत्रीय कार्यालय, गुवाहटी, असम ने सहभागियों का स्वागत

किया। डा.राजु नारायणा स्वामी भा.प्र.से., अध्यक्ष, नाविबो ने अपने आमुख भाषण में सूचित किया कि चालू वित्तीय वर्ष के दौरान विविध योजनाओं के अंतर्गत उत्तरपूर्वी क्षेत्र के लिए 19.30 करोड़ रुपए आबंटित किए गए है और अधिकारियों से अनुरोध किया कि अनुमोदित कार्य योजना के अनुसार एवं नाविबो योजनाओं के लिए दिशानिर्देशों के दायरे में रहकर नई पहल के लिए उचित प्रस्ताव प्रस्तुत करते हुए आबंटित निधि का पूरा का पूरा उपयोग करें। बैठक में गाँव को गोद लेने का कार्यक्रम, मोडल फार्म की स्थापना, घर घर में नारियल खेती कार्यक्रम, क्रेता-बिक्रेता बैठक और उत्तर पूर्व में राष्ट्रीय नारियल पर्व आयोजित करने पर भी विस्तृत चर्चा हुई।

नाविबो योजनाओं के कार्यान्वयन पर समीक्षा बैठक का दृश्य

श्रीमती मौचुमी बरुआ, एसीएस, संयुक्त सचिव, कृषि विभाग, असम सरकार, श्री झुन्नर रिम, निदेशक, बागवानी विभाग, अरुणाचल प्रदेश, डा.आर.इलिंथंग लोथा, निदेशक, बागवानी विभाग, नागालैंड सरकार, श्री कीसम ब्रोजन सिंह, संयुक्त निदेशक, बागवानी विभाग, मणिपुर, श्री संजिब देबबर्मा, सहायक निदेशक, बागवानी विभाग, त्रिपुरा

नाविबो ने 38वें इंडिया इंटरनेशनल ट्रेड फेयर 2018 में भाग लिया

इंडिया इंटरनेशनल ट्रेड फेयर में नाविबो स्टाल

बोर्ड के स्टाल में अध्यक्ष, नाविबो

नारियल विकास बोर्ड ने 14 से 27 नवंबर 2018 तक प्रगति मैदान, नई दिल्ली में संपन्न 38वें इंडिया इंटरनेशनल ट्रेड फेयर(आईआईटीएफ) में भाग लिया। आईआईटीएफ जो कि बी2बी और बी2सी संघटकों के साथ देश का सबसे बड़ा एकीकृत व्यापार मेला है, बोर्ड ने इसे उत्तर भारत के बाज़ारों में नारियल के विविध मूल्य वर्धित उत्पादों का परिचय कराने के मंच के रूप में उपयोग किया। बोर्ड के स्टाल में सर्वश्री केएलएफ निर्मल इंड, सर्वश्री प्योर ट्रोपिक, सर्वश्री वटकरा नारियल उत्पादक कंपनी, सर्वश्री मधुकरा अग्रो प्रोडक्ट्स, सर्वश्री योगिक फुड, सर्वश्री मार्केटफेड, सर्वश्री प्रांशु कोको प्रोडक्ट्स, सर्वश्री एग्रीकोल, सर्वश्री एनजीओ प्रोडक्ट्स और सर्वश्री केराटेक जैसे विविध नारियल आधारित उद्यमियों द्वारा उत्पादित पैकेटबंद डाब पानी, नारियल दूध पाउडर और नारियल दूध, नारियल चिप्स, डेसिकेटड नारियल, विर्जिन नारियल तेल जैसे नारियल के उत्कृष्ट उत्पाद प्रदर्शित किए गए। बोर्ड के थीम पवलियन में विविध नारियल आधारित मूल्यवर्धित उत्पादों, सूचनात्मक पोस्टरों और बोर्ड के प्रकाशनों की प्रदर्शनी लगाई गई। डा.राजु नारायणा स्वामी भा.प्र.से., अध्यक्ष, नाविबो ने बोर्ड के स्टाल का दौरा किया और उद्यमियों एवं आगंतुकों के साथ बातचीत की। लगभग तीन लाख लोगों ने प्रदर्शनी का दौरा किया।

सरकार, श्री अब्दुल जलील, सहायक निदेशक, बागवानी विभाग, असम सरकार, श्री इंद्र मोहन तालुकदार, एसडीएओ, बागवानी विभाग, असम सरकार, श्री मरडो निनु, एसएचओ, बागवानी विभाग, अरुणाचल प्रदेश सरकार, श्रीमती एफ.ज़ोरिनसंगी, एचडीओ, बागवानी विभाग, मिज़ोरम सरकार और श्रीमती सूसन्ना के.एम.संग्मा, डीएचओ, बागवानी विभाग, मेघालय सरकार ने बैठक में भाग लिया।

नाविबो में सतर्कता जागरूकता सप्ताह मनाया गया

नाविबो के अधिकारी और कर्मचारी सत्यनिष्ठा शपथ लेते हुए

नारियल विकास बोर्ड ने केन्द्रीय सतर्कता आयोग के निदेशों का अनुपालन करते हुए 'भ्रष्टाचार मिटाओ-नया भारत बनाओ' विषय पर 29 अक्तूबर से 2 नवंबर 2018 तक सतर्कता जागरूकता सप्ताह मनाया। 29 अक्तूबर को सत्यनिष्ठा शपथ लेते हुए सतर्कता जागरूकता सप्ताह की शुरुआत की गई।

श्री सरदिंदु दास, मुख्य नारियल विकास अधिकारी, नारियल विकास बोर्ड ने कोची में बोर्ड के कर्मचारियों और पदधारियों की उपस्थिति में सत्यनिष्ठा शपथ दिलायी। बोर्ड के प्रबीउ फार्म सहित सभी इकाई कार्यालयों में भी सत्यनिष्ठा शपथ ली गई।

बोर्ड के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के लिए 2 नवंबर 2018 को एक संवेदीकरण कार्यक्रम आयोजित किया गया। श्री आर.ज्ञानदेवन, सतर्कता अधिकारी, नाविबो ने इस अवसर पर बात की। 2 नवंबर 2018 को बोर्ड के मुख्यालय में संपन्न सतर्कता जागरूकता सप्ताह के समापन समारोह में श्री टी.आर.षाजी, सतर्कता अधिकारी, फेर्टिलाइज़ेर्स एंड केमिकल्स त्रावणकोर(फैक्ट) मुख्यातिथि रहे। उन्होंने अपने भाषण में "भ्रष्टाचार मिटाओ और नया भारत बनाआ" विषय पर विस्तृत व्याख्यान दिया। उन्होंने कार्यालयीन गतिविधियों के सभी पहलुओं पर भ्रष्टाचार मिटाने और सत्यनिष्ठा, पारदर्शिता और सुशासन के उच्च मानदंड बनाए रखने के लिए कर्मचारियों को आह्वान किया।

श्री सरदिंदु दास, मुख्य नारियल विकास अधिकारी, नाविबो ने सत्र की अध्यक्षता की। अपने अध्यक्षीय भाषण में उन्होंने सभी कर्मचारियों को सत्यनिष्ठा बनाए रखने और कार्यालयीन गतिविधियों में नीति संहिता सुनिश्चित करने की सलाह दी। श्री आर.मधु, सचिव ने अपर्याप्त संसाधनों के वितरण और ज़रूरतमंदों एवं हकदारों के बीच समुचित वितरण सुनिश्चित करने की अहमियत पर बात की। श्री इ.अरवाड़ी, उप निदेशक ने सभा का धन्यवाद अदा किया।

नारियल खेती और इसके मूल्य वर्धन पर राज्य स्तरीय कार्यशाला

नाविबो राज्य केन्द्र, कोलकाता ने 4 नवंबर 2018 को बिश्व बंगला कन्वेंशन सेंटर, न्यू टाउन कोलकाता में नारियल खेती और इसके मूल्य वर्धन पर राज्य स्तरीय कार्यशाला आयोजित की। राज्य स्तरीय संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र में डा.राजु नारायणा स्वामी भाप्रसे, अध्यक्ष, नारियल विकास बोर्ड, श्री संपद रंजन पात्र, कृषि निदेशक एवं पदेन

डा.राजु नारायणा स्वामी भा.प्र.से., अध्यक्ष, नारियल विकास बोर्ड राज्य स्तरीय कार्यशाला का उद्‌घाटन करते हुए

सभा का दृश्य

सचिव, कृषि विभाग, पश्चिम बंगाल सरकार और डा.दीपक कुमार घोष, प्रोफसर एवं प्रभारी वैज्ञानिक, अखिल भारतीय समन्वित ताड़ अनुसंधान परियोजना, बिधान चंद्र कृषि विश्वविद्यालय, कल्याणी विशिष्ट अतिथि रहे।

डा.राजु नारायणा स्वामी भा.प्र.से., अध्यक्ष ने अपने विषय प्रवेश भाषण में कहा कि भारत में नारियल के अधीन क्षेत्र विस्तार करने के लिए 100 लाख नारियल पौधों की ज़रूरत है, किंतु प्रति वर्ष यहाँ 35 लाख नारियल पौधों का ही उत्पादन हो रहा है। भारत में 65 लाख गुणवत्तापूर्ण नारियल पौधों की कमी है। देश में गुणवत्तापूर्ण नारियल पौधों के उत्पादन में बोर्ड के प्रबीउ फार्मों की अहम भूमिका होती है। इस प्रसंग में नदिया जिले के फुलिया में स्थापित प्रबीउ फार्म पश्चिम बंगाल की किसान समूह के लिए अत्यंत लाभदायक होगा। उन्होंने आगे किसान समूह द्वारा खेती प्रौद्योगिकियों के अपनाने की अहमियत और पश्चिम बंगाल राज्य के लाभार्थ फुलिया में प्रबीउ फार्म स्थापित करने की अवश्यकता पर बात की और यह व्यक्त किया कि राज्य में नारियल आधारित उद्योग स्थापित करने के बृहत् अवसर उपलब्ध हैं। उन्होंने नारियल खेती एवं उद्योग के समग्र विकास हेतु पश्चिम बंगाल सरकार के समर्थन का अनुरोध किया और व्यक्त किया कि राज्य के लघु एवं सीमांत किसानों की उन्नति के लिए बोर्ड भरपूर समर्थन प्रदान करेगा।

श्री संपद रंजन पात्र, कृषि निदेशक ने किसान समूह को आह्वान किया कि वे अपने बागों में गुणवत्तापूर्ण रोपण सामग्रियों का रोपण करें और एकीकृत खेती प्रणाली अपनाएं ताकि नारियल बागों से अधिकतम आमदनी प्राप्त की जा सके। उन्होंने नारियल विकास बोर्ड से अनुरोध किया कि शीघ्र ही फुलिया में बोर्ड का प्रबीउ फार्म स्थापित करें ताकि पश्चिम बंगाल सरकार द्वारा प्रदान की गई भूमि का समुचित उपयोग किया जा सके। डा.दीपक घोष, प्रोफसर एवं प्रभारी वैज्ञानिक, अखिल भारतीय समन्वित ताड़ अनुसंधान परियोजना, बिधान चंद्र कृषि विश्वविद्यालय ने किसानों से नारियल के अधीन क्षेत्र बढ़ाने और नारियल के उत्पादों और उपोत्पादों का प्रभावी उपयोग करने का अनुरोध किया ताकि उनकी आमदनी बढ़ायी जा सके।

उद्‌घाटन सत्र के बाद एक तकनीकी सत्र संपन्न हुआ। डा.नारायण चंद्र साहु, वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष, एसएसकेवीके, नरेंद्रपुर ने तकीनीकी सत्र की अध्यक्षता की। डा.पार्थ प्रतिम पॉल, डा.शुभदीप नाथ, सहायक निदेशक(बागवानी), खाद्य प्रसंस्करण उद्योग एवं बागवानी विभाग, पश्चिम बंगाल सरकार, डा.दीपक कुमार घोष, प्रोफसर एवं प्रभारी वैज्ञानिक, अखिल भारतीय समन्वित ताड़ अनुसंधान परियोजना, बिधान चंद्र कृषि विश्वविद्यालय और श्री खोकन देबनाथ, उप निदेशक ने नारियल संबंधी विविध विषयों पर बात की। संगोष्ठी में राज्य के विविध जिलों से 1600 किसानों ने भाग लिया।

नारियल विकास बोर्ड और द हिंदु इन स्कूल ने कृषि प्रश्नोत्तरी आयोजित की

नारियल विकास बोर्ड ने द हिंदु इन स्कूल के सहयोग से एसबीओए स्कूल ऑडिटोरियम, अन्ना नगर, चेन्नै में 9 नवंबर 2018 को चेन्नै, पुतुच्चेरी, काँचीपुरम और तिरुवल्लूर जिलों के छात्रों के लिए कृषि प्रश्नोत्तरी आयोजित की। आठवीं से बारहवीं कक्षा के 450 छात्रों की 225 टीमों ने प्रतियोगिता में हिस्सा लिया।

डा. राजु नारायणा स्वामी भा.प्र.से., अध्यक्ष, नारियल विकास बोर्ड ने कार्यक्रम का उद्घाटन किया। अपने उद्घाटन भाषण में उन्होंने प्रश्नोत्तरी के सहभागियों को बधाई दी और कहा कि यह जवान और फुर्तीले दिमागों के ज़रिए कृषि की संस्कृति को बढ़ावा देने का सादगीपूर्ण शुरुआत है। उन्होंने विजेताओं और फाइनल के प्रतियोगियों को ट्रोफियाँ, नकद

उद्घाटन भाषण

विजेता मास्टर एम.गणेशकरन और तेजस निषाद पुरस्कार स्वीकार करते हुए

दर्शकगण

सहभागी

द स्टडी, पुतुच्चेरी के मास्टर एम. गणेशकरन और तेजस निषाद प्रतियोगिता के विजेता हुए। पेटिट सेमिनेरी के कु. भारती बी. और मास्टर इलंकुमरन आर. ने द्वितीय पुरस्कार हासिल किया। तृतीय पुरस्कार चेन्नै पब्लिक स्कूल के मास्टर श्रेयस संगमेश्वरन और कु.सूर्या अरि को प्राप्त हुआ।

प्रतियोगिता के फाइनल में पहुँचे सर्वश्रेष्ठ छह विद्यालय पेटिट सेमिनेरी हायर सेकंडरी स्कूल(पुतुच्चेरी), डीएवी मट्रिकुलेशन हायर सेकंडरी स्कूल(मोगप्पाइर), पीएसबीबी सीनियर सेकंडरी स्कूल(सिरुसेरी), द स्टडी एल इकोल इंटरनेशनल(पुतुच्चेरी), पीएसबीबी सीनियर सेकंडरी स्कूल(केके नगर) और चेन्नै पब्लिक स्कूल थे।

पुरस्कार और प्रमाणपत्र वितरित किए। सभी सहभागियों को प्रशंसा-पत्र प्रदान किए।

समारोह के सम्माननीय अतिथि डा.जी.एन.हरिहरन, निदेशक, जैवप्रौद्योगिकी, एम.एस.स्वामिनाथन रिसर्च फाउंडेशन ने डाब पानी के स्वास्थ्य लाभों के मद्देनज़र और किसानों की सहायता करने के उद्देश्य से छात्रों को इसकी खपत करने के लिए प्रेरित किया। नारियल उत्पादों के प्रति जागरूकता पैदा करने के उद्देश्य से नाविबो ने विर्जिन नारियल तेल, नारियल तेल, नीरा, नीरा चाकलेट और नारियल चिप्स जैसे नारियल के मूल्य वर्धित उत्पाद सहभागियों को वितरित किए। बोर्ड ने वहाँ पर नारियल आधारित उत्पादों की एक प्रदर्शनी भी लगाई।

क्षेत्र स्तरीय किसान जागरूकता कार्यक्रम संपन्न

नारियल विकास बोर्ड, किसान प्रशिक्षण केंद्र सह क्षेत्रीय कार्यालय, पटना के द्वारा क्षेत्र स्तरीय कार्यशाला का आयोजन राजकीय माध्यमिक विद्यालय, करजाईन, राघोपुर क्षेत्र, जिला सुपोल के परिसर में 12.10.2018 को किया गया। क्षेत्र स्तरीय कार्यशाला का उद्घाटन श्री सुनिल कुमार चौधरी, वैज्ञानिक, कृषि विज्ञान केंद्र, राघोपुर, सुपोल, डा.अमिया

डा. अमिय देबनाथ, उप निदेशक सभा को संबोधित करते हुए

देवनाथ, उप निदेशक (विकास), नारियल विकास बोर्ड, क्षेत्रीय कार्यालय, पटना, श्री संतोष झा, अध्यक्ष, ग्राम भारती फाउंडेशन, मोतीपुर, सुपोल के द्वारा संयुक्त रूप से दीप प्रज्ज्वलित करके किया गया। कार्यक्रम में श्री बिन्देश्वर मरिक, पैक्स अध्यक्ष, सुपोल एवं अन्य कर्मचारीगण उपस्थित रहे।

श्री सुनिल कुमार चौधरी, वैज्ञानिक, कृषि विज्ञान केंद्र, राघोपुर, सुपोल ने नारियल के महत्व एवं नारियल के विपणन के बारे में जानकारी दी तथा इस क्षेत्र में नारियल उत्पादों के क्रय विक्रय केंद्र खोलने की सलाह दी ताकि किसानों एवं व्यापारियों को उचित लाभ मिल जाए। साथ ही नारियल की सघन खेती के बारे में भी बात की।

डा.अमिया देवनाथ, उप निदेशक (विकास), नारियल विकास बोर्ड, क्षेत्रीय कार्यालय, पटना ने नारियल की खेती तथा एकीकृत खेती से आय सृजित करने के विषय पर किसानों के साथ परिचर्चा की। उन्होंने कहा कि अंतर खेती के साथ नारियल खेती को बढ़ावा देकर किसान अपनी आय को बढ़ा सकता है। नारियल उत्पादक समिति, नारियल उत्पादक फेडरेशन और नारियल उत्पादक कंपनी के गठन तथा राज्य में कार्यान्वित विभिन्न योजनाओं के बारे में व्याख्या दी। साथ ही नारियल का उत्पादन बढ़ाने हेतु जैविक खाद एवं रासायनिक खाद के उपयोग के बारे में बताया।

श्री रवींद्र कुमार, तकनीकी अधिकारी, नारियल विकास बोर्ड, क्षेत्रीय कार्यालय, पटना ने वैज्ञानिक तरीके से नारियल की खेती पर पावर पोइंट प्रस्तुतीकरण किया और नारियल क्षेत्र में रोग एवं कीट प्रबंधन पर किसानों को अवगत कराया। उन्होंने नारियल से संबंधित किसानों की विभिन्न समस्याओं का समाधान भी किया।

श्री पंकज कुमार, तकनीकी अधिकारी, नारियल विकास बोर्ड, क्षेत्रीय कार्यालय, पटना ने नारियल विकास

श्री. सुनील कुमार चौधरी, वैज्ञानिक, कृषि विज्ञान केन्द्र, राघोपुर भाषण देते हुए

बोर्ड द्वारा कार्यान्वित विभिन्न योजनाओं जैसे क्षेत्र विस्तार कार्यक्रम, एफओसीटी एवं नारियल हस्तशिल्प और अन्य योजनाओं के बारे में विस्तार से भाषण दिया। इसके अलावा नारियल के विभिन्न उत्पादों व उपोत्पादों जैसे नारियल तेल, नारियल दूध पाउडर, नारियल जैम, नारियल पानी, बिस्कुट, चॉकलेट, विर्जिन नारियल तेल एवं कैप्स्यूल के बारे में भी बात की। उन्होंने नारियल खेती, विपणन एवं उद्योग से जुड़ी विभिन्न पहलुओं पर किसानों को अवगत कराया।

क्षेत्र स्तरीय कार्यशाला का समापन श्री संतोष झा, अध्यक्ष, ग्राम भारती फाउंडेशन, ग्राम मोतीपुर, सुपोल के धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ। कार्यक्रम में लगभग 120 किसानों ने भाग लिया।

सेवानिवृत्ति

श्री सी.श्रीकुमार, चालक ग्रेड 1, नाविबो अधिवर्षिता प्राप्ति पर 30 नवंबर 2018 को नारियल विकास बोर्ड की सेवाओं से सेवानिवृत्त हुए। उन्होंने 1985 में बोर्ड में आपनी सेवा प्रारंभ की थी और 33 से अधिक वर्ष बोर्ड की सेवा की।

बिहार में क्षेत्र स्तरीय किसान जागरूकता कार्यक्रम संपन्न

नारियल विकास बोर्ड, किसान प्रशिक्षण केंद्र सह क्षेत्रीय कार्यालय, पटना ने बिहार के सिवान जिले के सरसर गाँव में 26 अक्तूबर 2018 को क्षेत्र स्तरीय कार्यशाला आयोजित की। श्री शंभूसरण सिंह, पैक्स अध्यक्ष, सरसर, सिवान क्षेत्र ने कार्याशाला का उद्घाटन किया। श्री पंकज किशोर, भूतपूर्व मुखिया, सरसर, श्री रवींद्र कुमार एवं श्री पंकज कुमार, तकनीकी अधिकारी, नारियल विकास बोर्ड, क्षेत्रीय कार्यालय, पटना तथा अन्य गणमान्य व्यक्ति कार्यशाला में उपस्थित रहे।

श्री. शम्भूसरण, पैक्स अध्यक्ष, सरसर, प्रखंड, सिवान एवं श्री रविन्द्र कुमार, तरनीकी अधिकारी, नाविबो, क्षेत्रीय कार्यालय, पटना द्वारा संबोधन

श्री पंकज कुमार, तकनीकी अधिकारी, नारियल विकास बोर्ड, क्षेत्रीय कार्यालय, पटना ने बोर्ड की योजनाओं के बारे में विस्तृत विवरण दिया। श्री पंकज किशोर, भूतपूर्व मुखिया, सरसर ने अपने क्षेत्रों में नारियल की खेती करने तथा बोर्ड की योजनाओं से लाभान्वित होने के लिए किसानों को आह्वान किया।

श्री शंभूसरण सिंह, पैक्स अध्यक्ष, सरसर ने बताया कि अपने खेतों में नारियल की खेती ज्यादा से ज्यादा करें और इसके साथ अंतर फसलों की भी खेती करें। श्री रवींद्र कुमार, तकनीकी अधिकारी, नाविबो, क्षेत्रीय कार्यालय, पटना ने नारियल की वैज्ञानिक खेती तथा नारियल पेड़ को प्रकोपित कीट एवं रोग के बारे में किसानों को अवगत कराया। साथ ही किसानों की समस्याओं का समाधान भी किया।

श्री उमेश चंद्र सिंह, प्रगतिशील किसान, पुरैना, सरसर गाँव, सिवान के धन्यवाद ज्ञापन के साथ कार्यक्रम समाप्त हुआ। कार्यक्रम में लगभग 75 किसानों ने भाग लिया।

मधेपुरा में क्षेत्र स्तरीय किसान जागरूकता कार्यक्रम संपन्न

नारियल विकास बोर्ड, किसान प्रशिक्षण केंद्र सह क्षेत्रीय कार्यालय, पटना ने नाविबो, प्रबीउ फार्म, सिंहेश्वर, मधेपुरा के परिसर में 11 अक्तूबर 2018 को क्षेत्र स्तरीय कार्यशाला आयोजित की। कार्याशाला का उद्घाटन श्रीमती चंद्रकला देवी, प्रमुख, सिंहेश्वर, मधेपुरा, डा.अमिया देबनाथ, उप निदेशक (विकास), नारियल विकास बोर्ड, क्षेत्रीय कार्यालय, पटना, श्री रघुनन्दन दास, उपाध्यक्ष, जिला परिषद्, मधेपुरा के द्वारा संयुक्त रूप में किया गया। कार्यशाला में नाविबो, प्रबीउ फार्म, सिंहेश्वर, मधेपुरा के क्षेत्र अधिकारी एवं अन्य कर्मचारीगण उपस्थित रहे।

श्रीमती चंद्रकला देवी, प्रमुख, सिंहेश्वर, मधेपुरा ने नारियल की अहमियत एवं उपयोगिता के बारे में प्रगतिशील किसानों से बात की और नारियल की खेती की अधिकाधिक संभावनाओं को सूचित करते हुए नारियल खेती करने के लिए किसानों को आह्वान किया।

श्री रघुनंदन दास, उपाध्यक्ष, जिला परिषद्, मधेपुरा ने इस क्षेत्र में नारियल उत्पादों के क्रय-विक्रय केंद्र खोलने की सलाह दी ताकि किसानों एवं व्यापारियों को उचित लाभ मिल जाए।

डा.अमिया देवनाथ, उप निदेशक (विकास), नारियल विकास बोर्ड, क्षेत्रीय कार्यालय, पटना ने नारियल की खेती तथा एकीकृत खेती से आय सृजन विषय पर भाषण दिया। उन्होंने अंतर खेती के साथ साथ नारियल खेती को बढ़ावा देकर किसानों की आमदनी बढ़ाने का सुझाव दिया और नारियल खेती से संबंधित रोग एवं कीट प्रबंधन पर विस्तृत

कार्यशाला की झल्क

विवरण दिया। साथ ही नारियल के उत्पादन बढ़ाने हेतु जैविक एवं रासायनिक खाद के उपयोग के बारे में बताया।

श्री रवींद्र कुमार, तकनीकी अधिकारी, नारियल विकास बोर्ड, क्षेत्रीय कार्यालय, पटना ने नारियल की वैज्ञानिक खेती पर विस्तृत विवरण दिया एवं नारियल उत्पादक समितियों, नारियल उत्पादक फेडरेशन और नारियल उत्पादक कंपनियों के गठन और राज्य में कार्यान्वित विभिन्न योजनाओं के बारे में प्रस्तुति की। नारियल खेती, विपणन और उद्योग से जुड़ी विभिन्न पहलुओं पर किसानों को अवगत कराया गया।

श्री पंकज कुमार, तकनीकी अधिकारी, नारियल विकास बोर्ड, क्षेत्रीय कार्यालय, पटना ने नारियल विकास बोर्ड द्वारा कार्यान्वित विभिन्न योजनाओं जैसे क्षेत्र विस्तार कार्यक्रम, जैव खाद इकाई, एफओसीटी एवं नारियल हस्तशिल्प तथा अन्य योजनाओं के बारे में विस्तार से बताया। इसके अलावा नारियल के विभिन्न उत्पाद व उपोत्पादों जैसे नारियल तेल, नारियल दूध पाउडर, नारियल जैम, नारियल पानी, बिस्कुट, चॉकलेट, विर्जिन नारियल तेल एवं कैप्स्यूल इत्यादि के बारे में भी बताया।

श्री बालकिशोर यादव, पूर्व मुखिया, आदर्श ग्राम, बालमगडिया, मधेपुरा के धन्यवाद ज्ञापन के साथ कार्यक्रम समाप्त हुआ। कार्यक्रम में लगभग 100 किसानों ने भाग लिया।

वर्ष 2019 के मौसम के लिए खोपरे के न्यूनतम समर्थन भाव में 2000 रुपए से अधिक की बढ़ोत्तरी

प्रधान मंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी की अध्यक्षता में आर्थिक मामले की मंत्रिमंडल समिति ने वर्ष 2019 के मौसम के लिए औसत अच्छी गुणवत्ता(एफएक्यू) के पेषण खोपरे का न्यूनतम समर्थन भाव बढ़ाने के लिए अनुमोदन प्रदान किया जो कि वर्ष 2018 के प्रति क्विंटल 7511 रुपए से बढ़ाकर वर्ष 2019 के दौरान प्रति क्विंटल 9521 रुपए करा दिया है। गोल खोपरे का न्यूनतम समर्थन भाव वर्ष 2018 के प्रति क्विंटल 7750 रुपए से बढ़ाकर वर्ष 2019 के लिए प्रति क्विंटल 9920 रुपए करा दिया है।

खोपरे के न्यूनतम समर्थन भाव से किसानों को उचित न्यूनतम भाव सुनिश्चित होने की उम्मीद है। इससे नारियल खेती में निवेश बढ़ेगी और तद्वारा देश में नारियल के उत्पादन और उत्पादकता में वृद्धि होगी।

कृषि लागत एवं मूल्य आयोग की सिफारिशों के आधार पर यह अनुमोदन प्रदान किया गया है। कृषि लागत एवं मूल्य आयोग एक विशेषज्ञ निकाय है, जो न्यूनतम समर्थन भाव की सिफारिश करते समय उत्पादन लागत, देशीय और विदेशी बाज़ारों में खाद्य तेलों के भाव के रुख, खोपरा और नारियल तेल की कुल माँग और आपूर्ति, नारियल तेल के रूप में खोपरे के प्रसंस्करण की लागत और उपभोक्ताओं पर न्यूनतम समर्थन भाव की सिफारिश से होने वाले प्रभाव आदि को ध्यान में रखता है।

नेशनल एग्रिकल्चरल कोओपरेटिव मार्केटिंग फेडरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड(नेफेड) और नेशनल कोओपरेटिव कंस्यूमर फेडरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड(एनसीसीएफ) नारियल उत्पादक राज्यों में न्यूनतम समर्थन भाव पर मूल्य समर्थन गतिविधियाँ चलाने के लिए केन्द्रीय नोडल एजेंसी के रूप में आगे भी कार्य करते रहेंगे।

बाज़ार समीक्षा

सितंबर 2018

देशीय भाव

नारियल तेल

नारियल तेल का भाव सितंबर 2018 के दौरान कोची और आलप्पुष़ा बाज़ारों में प्रति क्विंटल 17800 रुपए और कोषि़क्कोट बाज़ार में प्रति क्विंटल 18700 रुपए पर खुला। महीने के दौरान तीनों बाज़ारों में नारियल तेल के भाव में संपूर्ण घटाव का रुख रहा।

कोची और आलप्पुष़ा बाज़ारों में नारियल तेल का भाव प्रति क्विंटल 1900 रुपए के शुद्ध हानि के साथ 15900 रुपए और और कोषि़क्कोट बाज़ार में प्रति क्विंटल 2400 रुपए की शुद्ध हानि के साथ 16300 रुपए पर बंद हुआ।

तमिलनाडु के कंगयम बाज़ार में नारियल तेल का भाव प्रति क्विंटल 15000 रुपए पर खुला और मिश्रित रुख दर्शाकर प्रति क्विंटल 1333 रुपए की शुद्ध हानि के साथ 13667 रुपए पर बंद हुआ।

पेषण खोपरा

महीने के दौरान पेषण खोपरे का भाव कोची बाज़ार में प्रति क्विंटल 11500 रुपए, आलप्पुषा बाज़ार में 11450 रुपए और कोषि़क्कोट बाज़ार में प्रति क्विंटल 11550 रुपए पर खुला। महीने के दौरान तीनों बाज़ारों में पेषण खोपरे के भाव में संपूर्ण घटाव का रुख रहा।

कोची और आलप्पुष़ा बाज़ारों में भाव प्रति क्विंटल 1350 रुपए और कोषि़क्कोट बाज़ार में 1450 रुपए की शुद्ध हानि के साथ क्रमशः प्रति क्विंटल 10200 रुपए, 10100 रुपए और 10100 रुपए पर बंद हुआ।

तमिलनाडु के कंगयम बाज़ार में भाव प्रति क्विंटल 10400 रुपए पर खुलकर प्रति क्विंटल 1100 रुपए की शुद्ध हानि के साथ 9300 रुपए पर बंद हुआ।

खाद्य खोपरा

कोषि़क्कोट बाज़ार में राजापुर खोपरे का भाव प्रति क्विंटल 19500 रुपए पर खुला और भाव में महीने के दौरान घट-बढ़ रहा और प्रति क्विंटल 19000 रुपए पर बंद हुआ।

गोल खोपरा

तिप्तुर बाज़ार में गोल खोपरे का भाव प्रति क्विंटल 16100 रुपए पर खुला और महीने के दौरान मिश्रित रुख रहा और प्रति क्विंटल 150 रुपए के शुद्ध लाभ के साथ 16250 रुपए पर बंद हुआ।

सूखा नारियल

कोषि़क्कोट बाज़ार में सूखा नारियल का भाव प्रति हज़ार फल 9960 रुपए पर खुला। महीने के दौरान घटाव का रुख दर्शाकर प्रति क्विंटल 9450 रुपए पर बंद हुआ।

नारियल

नेटुमंगाट बाज़ार में आंशिक रूप में छिले नारियल का भाव प्रति हज़ार फल 17000 रुपए पर खुला और महीने के दौरान उसी भाव पर रहा। तमिलनाडु के पोल्लाच्ची बाज़ार में नारियल का भाव प्रति हज़ार फल 13000 रुपए पर खुला और प्रति हज़ार फल 12000 रुपए पर बंद हुआ। बेंगलूर एपीएमसी बाज़ार में आंशिक रूप से छिले नारियल का भाव प्रति हज़ार फल 25000 रुपए पर खुला और महीने भर उसी भाव रहा। मैंगलूर एपीएमसी बाज़ार में आंशिक रूप से छिले ग्रेड-1 गुणवत्ता के नारियल का भाव प्रति हज़ार फल 24000 रुपए पर खुला और प्रति हज़ार फल 20000 रुपए पर बंद हुआ।

अंतर्राष्ट्रीय भाव

नारियल तेल

फिलीपीन्स, इंडोनेशिया और भारत में नारियल तेल के अंतर्राष्ट्रीय एवं देशीय भाव में महीने के दौरान संपूर्ण घटाव का रुख रहा। विविध अंतर्राष्ट्रीय/देशीय बाज़ारों में नारियल तेल का भाव सारणी में दर्शाया गया है।

खोपरा

महीने के दौरान श्रीलंका और इंडोनेशिया के बाज़ारों में खोपरे के भाव में घटाव का रुख दर्शित हुआ जबकि भारत में खोपरे के देशीय एवं अंतर्राष्ट्रीय भाव में मिश्रित रुख रहा। विविध देशीय बाज़ारों में खोपरे का भाव सारणी में दर्शित है।

नारियल

फिलीपीन्स, इंडोनेशिया, श्रीलंका और भारत के विविध देशीय बाज़ारों में नारियल का भाव सारणी में दर्शाया गया है।

अक्तूबर 2018

देशीय भाव

नारियल तेल

नारियल तेल का भाव अक्तूबर 2018 के दौरान कोची और आलप्पुष़ा बाज़ारों में प्रति क्विंटल 15900 रुपए और कोष़िक्कोट बाज़ार में प्रति क्विंटल 16200 रुपए पर खुला। महीने के दौरान तीनों बाज़ारों में नारियल तेल के भाव में घटाव का रुख रहा।

कोची और आलप्पुष़ा बाज़ारों में नारियल तेल का भाव प्रति क्विंटल 1200 रुपए की शुद्ध हानि के साथ 14700 रुपए और और कोष़िक्कोट बाज़ार में प्रति क्विंटल 800 रुपए की शुद्ध हानि के साथ 15400 रुपए पर बंद हुआ।

तमिलनाडु के कंगयम बाज़ार में नारियल तेल का भाव प्रति क्विंटल 13667 रुपए पर खुला और घटाव का रुख दर्शाकर प्रति क्विंटल 1334 रुपए की शुद्ध हानि के साथ 12333 रुपए पर बंद हुआ।

पेषण खोपरा

महीने के दौरान पेषण खोपरे का भाव कोची बाज़ार में प्रति क्विंटल 10200 रुपए, आलप्पुषा बाज़ार में 10100 रुपए और कोष़िक्कोट बाज़ार में प्रति क्विंटल 10050 रुपए पर खुला। महीने के दौरान तीनों बाज़ारों में पेषण खोपरे के भाव में घटाव का रुख रहा।

कोची और आलप्पुष़ा बाज़ारों में भाव प्रति क्विंटल 1000 रुपए और कोष़िक्कोट बाज़ार में 700 रुपए की शुद्ध हानि के साथ प्रति क्विंटल क्रमशः9200 रुपए, 9100 रुपए और 9350 रुपए पर बंद हुआ।

तमिलनाडु के कंगयम बाज़ार में भाव प्रति क्विंटल 9300 रुपए पर खुलकर प्रति क्विंटल 900 रुपए की शुद्ध हानि के साथ 8400 रुपए पर बंद हुआ।

खाद्य खोपरा

कोष़िक्कोट बाज़ार में राजापुर खोपरे का भाव प्रति क्विंटल 19000 रुपए पर खुला और भाव में महीने के दौरान घट-बढ़ रहा और प्रति क्विंटल 200 रुपए की शुद्ध हानि के साथ 18800 रुपए पर बंद हुआ।

गोल खोपरा

तिप्तुर बाज़ार में गोल खोपरे का भाव प्रति क्विंटल 16800 रुपए पर खुला और महीने के दौरान संपूर्ण घटाव का रुख रहा और प्रति क्विंटल 200 रुपए के शुद्ध हानि के साथ 16600 रुपए पर बंद हुआ।

सूखा नारियल

कोष़िक्कोट बाज़ार में सूखा नारियल का भाव प्रति हज़ार फल 9450 रुपए पर खुला। महीने के पहले पक्ष तक भाव में घटाव का रुख दर्शित हुआ और तत्पश्चात् बढ़ कर प्रति क्विंटल 9350 रुपए पर बंद हुआ।

नारियल

नेटुमंगाट बाज़ार में आंशिक रूप में छिले नारियल का भाव प्रति हज़ार फल 17000 रुपए पर खुला और प्रति हज़ार फल 2000 रुपए की शुद्ध हानि के साथ 15000 रुपए पर बंद हुआ। तमिलनाडु के पोल्लाच्ची बाज़ार में नारियल का भाव प्रति हज़ार फल 12000 रुपए पर खुला और प्रति हज़ार फल 11000 रुपए पर बंद हुआ। बेंगलूर एपीएमसी बाज़ार में आंशिक रूप से छिले नारियल का भाव प्रति हज़ार फल 18500 रुपए पर खुला और महीने भर उसी भाव रहा। मैंगलूर एपीएमसी बाज़ार में आंशिक रूप से छिले ग्रेड-1 गुणवत्ता के नारियल का भाव प्रति हज़ार फल 20000 रुपए पर खुला और महीने भर उसी भाव पर रहा।

अंतर्राष्ट्रीय भाव

नारियल तेल

इंडोनेशिया में नारियल तेल के अंतर्राष्ट्रीय एवं देशीय भाव में महीने के दौरान मिश्रित रुख रहा जबकि फिलीपीन्स और भारत में नारियल के देशीय भाव में संपूर्ण घटाव का रुख रहा। विविध अंतर्राष्ट्रीय/देशीय बाज़ारों में नारियल तेल का भाव सारणी में दर्शाया गया है।

खोपरा

महीने के दौरान फिलीपीन्स, श्रीलंका और भारत के बाज़ारों में खोपरे के भाव में घटाव का रुख दर्शित हुआ जबकि इंडोनेशिया में खोपरे के भाव में मिश्रित रुख रहा। विविध देशीय बाज़ारों में खोपरे का भाव सारणी में दर्शित है।

नारियल

फिलीपीन्स, इंडोनेशिया, श्रीलंका और भारत के विविध देशीय बाज़ारों में नारियल का भाव सारणी में दर्शाया गया है।

नवंबर 2018

देशीय भाव

नारियल तेल

नारियल तेल का भाव नवंबर 2018 के दौरान कोची और आलप्पुषा बाज़ारों में प्रति क्विंटल 14700 रुपए और कोषिक्कोट बाज़ार में प्रति क्विंटल 15400 रुपए पर खुला। महीने के पहले पक्ष के दौरान तीनों बाज़ारों में नारियल तेल के भाव में घटाव का रुख रहा और तत्पश्चात भाव में बढ़ाव का रुख दर्शित हुआ।

कोची और आलप्पुषा बाज़ारों में नारियल तेल का भाव प्रति क्विंटल 500 रुपए के शुद्ध लाभ के साथ 15200 रुपए और और कोषिक्कोट बाज़ार में प्रति क्विंटल 400 रुपए के शुद्ध लाभ के साथ 15800 रुपए पर बंद हुआ।

तमिलनाडु के कंगयम बाज़ार में नारियल तेल का भाव प्रति क्विंटल 12333 रुपए पर खुला और मिश्रित रुख दर्शाकर प्रति क्विंटल 867 रुपए के शुद्ध लाभ के साथ 13200 रुपए पर बंद हुआ।

पेषण खोपरा

महीने के दौरान पेषण खोपरे का भाव कोची बाज़ार में प्रति क्विंटल 9200 रुपए, आलप्पुषा बाज़ार में 9100 रुपए और कोषिक्कोट बाज़ार में प्रति क्विंटल 9350 रुपए पर खुला। महीने के पहले पक्ष के दौरान तीनों बाज़ारों में पेषण खोपरे के भाव में थोड़ा घटाव का रुख रहा और तत्पश्चात बढ़ाव का रुख रहा।

कोची और आलप्पुषा बाज़ारों में भाव प्रति क्विंटल 400 रुपए और कोषिक्कोट बाज़ार में 650 रुपए के शुद्ध लाभ के साथ क्रमशः प्रति क्विंटल 9600 रुपए, 9500 रुपए और 10000 रुपए पर बंद हुआ।

तमिलनाडु के कंगयम बाज़ार में भाव प्रति क्विंटल 8500 रुपए पर खुलकर प्रति क्विंटल 700 रुपए के शुद्ध लाभ के साथ 9200 रुपए पर बंद हुआ।

खाद्य खोपरा

कोषिक्कोट बाज़ार में राजापुर खोपरे का भाव प्रति क्विंटल 18800 रुपए पर खुला और भाव में महीने के दौरान घट-बढ़ रहा और प्रति क्विंटल 1200 रुपए की शुद्ध हानि के साथ 17600 रुपए पर बंद हुआ।

गोल खोपरा

तिप्तुर बाज़ार में गोल खोपरे का भाव प्रति क्विंटल 16600 रुपए पर खुला और महीने के दौरान संपूर्ण घटाव का रुख रहा और प्रति क्विंटल 1600 रुपए की शुद्ध हानि के साथ 15000 रुपए पर बंद हुआ।

सूखा नारियल

कोषिक्कोट बाज़ार में सूखा नारियल का भाव प्रति हज़ार फल 9350 रुपए पर खुला। महीने के दौरान भाव में थोडा घटाव का रुख दर्शित होकर प्रति क्विंटल 250 रुपए की शुद्ध हानि के साथ 9250 रुपए पर बंद हुआ।

नारियल

नेटुमंगाट बाज़ार में आंशिक रूप में छिले नारियल का भाव प्रति हज़ार फल 16000 रुपए पर खुला और प्रति हज़ार फल 1000 रुपए की शुद्ध हानि के साथ 15000 रुपए पर बंद हुआ। तमिलनाडु के पोल्लाच्ची बाज़ार में नारियल का भाव प्रति हज़ार फल 11000 रुपए पर खुला और प्रति हज़ार फल 13000 रुपए पर बंद हुआ। बेंगलूर एपीएमसी बाज़ार में आंशिक रूप से छिले नारियल का भाव प्रति हज़ार फल 18500 रुपए पर खुला और प्रति हज़ार फल 1650 रुपए पर बंद हुआ। मैंगलूर एपीएमसी बाज़ार में आंशिक रूप से छिले ग्रेड-1 गुणवत्ता के नारियल का भाव प्रति हज़ार फल 20000 रुपए पर खुला और महीने भर उसी पर रहा।

अंतर्राष्ट्रीय भाव

नारियल तेल

फिलीपीन्स और इंडोनेशिया में नारियल तेल के अंतर्राष्ट्रीय एवं देशीय भाव में महीने के पहले पक्ष के दौरान घटाव का रुख रहा और तत्पश्चात बढ़ाव का रुख दर्शित हुआ। जबकि भारत में नारियल के देशीय भाव में मिश्रित रुख रहा। विविध अंतर्राष्ट्रीय/देशीय बाज़ारों में नारियल तेल का भाव सारणी में दर्शाया गया है।

खोपरा

महीने के दौरान श्रीलंका के बाज़ार में खोपरे के भाव में घटाव का रुख दर्शित हुआ जबकि फिलीपीन्स, इंडोनेशिया और भारत में खोपरे के भाव में मिश्रित रुख रहा। विविध देशीय बाज़ारों में खोपरे का भाव सारणी में दर्शित है।

नारियल

फिलीपीन्स, इंडोनेशिया, श्रीलंका और भारत के विविध देशीय बाज़ारों में नारियल का भाव सारणी में दर्शाया गया है।

बाज़ार भाव-देशीय

सितंबर 2018

तारीख	नारियल तेल				पेषण खोपरा				खाद्य खोपरा	गोल खोपरा		सूखा नारियल	आंशिक रूप से छिले नारियल			
	(रु. / क्वि.)															
	कोची	आलप्पुषा	कोषिक्कोट	कंगयम	कोची (एफएक्यू)	आलप्पुषा (राशि खोपरा)	कोषिक्कोट	कंगयम	कोषिक्कोट	तिप्तूर	अरसिकेरे	कोषिक्कोट	नेटुमंगाट	पोल्लाच्ची	बैंगलूर	मैंगलूर (ग्रेड-1)
01.09.2018	17800	17800	18700	15000	11550	11450	11550	10400	19500	16100	रि.प्रा.नहीं	9960	17000	13000	25000	24000
09.09.2018	17000	17100	18300	14667	11150	11000	11050	9800	18800	16000	रि.प्रा.नहीं	9750	17000	12000	25000	24000
16.09.2018	15700	16000	17000	1333	10200	10300	10200	9000	18500	16500	रि.प्रा.नहीं	9650	17000	12000	25000	20000
23.09.2018	15700	15700	16400	13733	10100	10050	10100	9250	19000	16000	रि.प्रा.नहीं	9550	17000	12000	25000	20000
30.09.2018	15900	15900	16300	13667	10200	10100	10100	9300	19000	16250	रि.प्रा.नहीं	9450	17000	12000	25000	20000

अक्तूबर 2018

तारीख	नारियल तेल				पेषण खोपरा				खाद्य खोपरा	गोल खोपरा		सूखा नारियल	आंशिक रूप से छिले नारियल			
	(रु. / क्वि.)												(रु./1000 फल)			
	कोची	आलप्पुषा	कोषिक्कोट	कंगयम	कोची (एफएक्यू)	आलप्पुषा (राशि खोपरा)	कोषिक्कोट	कंगयम	कोषिक्कोट	तिप्तूर	अरसिकेरे	कोषिक्कोट	नेटुमंगाट	पोल्लाच्ची	बैंगलूर	मैंगलूर (ग्रेड-1)
01.10.2018	15900	15900	16200	13667	10200	10100	10050	9300	19000	16800	रि.प्रा.नहीं	9450	17000	12000	18500	20000
07.102018	15900	15800	16000	13667	10200	10100	10000	9300	19000	16500	रि.प्रा.नहीं	9450	17000	12000	18500	20000
14.102018	15200	15300	15400	12667	9600	9600	9400	8600	19000	16000	रि.प्रा.नहीं	9250	15000	12000	18500	20000
21.10.2018	15100	15100	15400	12667	9500	9400	9400	8600	19500	16000	रि.प्रा.नहीं	9250	15000	12000	18500	20000
28.102018	14800	14800	15400	12200	9250	9100	9350	8300	19000	16200	रि.प्रा.नहीं	9350	15000	11000	18500	20000
31.10.2018	14700	14700	15400	12333	9200	9100	9350	8400	18800	16600	रि.प्रा.नहीं	9350	15000	11000	18500	20000

नवंबर 2018

तारीख	नारियल तेल				पेषण खोपरा				खाद्य खोपरा	गोल खोपरा		सूखा नारियल	आंशिक रूप से छिले नारियल			
	(रु. / क्वि.)												(रु./1000 फल)			
	कोची	आलप्पुषा	कोषिक्कोट	कंगयम	कोची (एफएक्यू)	आलप्पुषा (राशि खोपरा)	कोषिक्कोट	कंगयम	कोषिक्कोट	तिप्तूर	अरसिकेरे	कोषिक्कोट	नेटुमंगाट	पोल्लाच्ची	बैंगलूर	मैंगलूर (ग्रेड-1)
01.11.2018	14700	14700	15400	12333	9200	9100	9350	8500	18800	16600	रि.प्रा.नहीं	9350	16000	11000	18500	20000
11.11.2018	14700	14700	15400	12867	9200	9100	9450	8450	17800	16000	रि.प्रा.नहीं	9350	16000	11000	18500	20000
18.11.2018	14350	14200	15100	12533	9000	8900	9300	8500	18000	15500	रि.प्रा.नहीं रि.प्रा.नहीं	9250	15000	11000	18500	20000
25.11.2018	15000	14700	15600	13333	9500	9250	9800	9000	18000	15000	रि.प्रा.नहीं	9250	15000	12000	18500	20000
30.11.2018	15200	15200	15800	13200	9600	9500	10000	9200	17600	15000	रि.प्रा.नहीं	9250	15000	13000	16500	20000

स्रोत

कोची : कोचिन तेल व्यापारी संघ व वाणिज्य मंडल, कोची-2

कोषिक्कोट : 'मातृभूमि'

आलप्पुषा : 'मलयाला मनोरमा'

अरसिकेरे : ए पी एम सी, अरसिकेरे

कोषिक्कोट बाज़ार में 'ऑफीस पास' खोपरे का और आलप्पुषा बाज़ार में 'राशि' खोपरे का बताया गया भाव

बाज़ार भाव-अंतर्राष्ट्रीय

सितंबर 2018

तारीख	नारियल तेल (यूएस $/ मे.ट.)				खोपरा (यूएस $/ मे.ट.)				नारियल (यूएस $/ मे.ट.)			
	अंतर्राष्ट्रीय	देशीय										
	फिलिपीन्स	फिलिपीन्स	इंडोनेशिया	भारत*	फिलिपीन्स	इंडोनेशिया	श्रीलंका	भारत*	फिलिपीन्स	इंडोनेशिया	श्रीलंका	भारत*
01.09.2018	935	880	885	2081	566	462	1214	1443	123	136	223	409
08.09.2018	910	876	882	2034	568	458	1210	1359	123	135	247	388
15.09.2018	910	860	857	1849	537	460	1210	1248	122	135	237	374
22.09.2018	891	845	840	1905	532	452	1108	1283	122	135	219	374
29.09.2018	881	835	835	1896	521	456	1088	1290	122	134	206	381

अक्तूबर 2018

तारीख	नारियल तेल (यूएस $/ मे.ट.)				खोपरा (यूएस $/ मे.ट.)				नारियल (यूएस $/ मे.ट.)			
	अंतर्राष्ट्रीय	देशीय										
	फिलिपीन्स	फिलिपीन्स	इंडोनेशिया	भारत*	फिलिपीन्स	इंडोनेशिया	श्रीलंका	भारत*	फिलिपीन्स	इंडोनेशिया	श्रीलंका	भारत*
6.10.2018	865	820	810	1857	516	422	1082	1264	123	122	212	374
13.10.2018	846	818	811	1721	499	381	1076	1169	123	116	179	367
20.10.2018	853	810	812	1721	484	408	1053	1169	125	116	188	353
27.10.2018	805	803	802	1658	480	401	1047	1128	124	119	188	340

नवंबर 2018

तारीख	नारियल तेल (यूएस $/ मे.ट.)				खोपरा (यूएस $/ मे.ट.)				नारियल (यूएस $/ मे.ट.)			
	अंतर्राष्ट्रीय	देशीय										
	फिलिपीन्स	फिलिपीन्स	इंडोनेशिया	भारत*	फिलिपीन्स	इंडोनेशिया	श्रीलंका	भारत*	फिलिपीन्स	इंडोनेशिया	श्रीलंका	भारत*
3/11/2018	770	770	778	1714	464	368	1034	1181	123	117	176	340
10/11/2018	726	720	725	1788	449	351	1029	1174	118	114	171	347
17/11/2018	709	710	711	1741	412	341	1029	1181	118	115	171	340
24/11/2018	823	800	807	1853	439	392	1000	1251	119	116	164	361

***भारत**

नारियल तेल : कंगयम बाज़ार
खोपरा : कंगयम बाज़ार
नारियल : पोल्लाच्ची बाज़ार

नारियल विकास बोर्ड के कार्यालय

मुख्यालय

डा.राजु नारायणा स्वामी भा.प्र.से.
अध्यक्ष : 0484 2375216
श्री सरदिंदु दास
मुख्य नारियल विकास अधिकारी : 2375999
श्री आर. मधु
सचिव : 2377737

नारियल विकास बोर्ड
(कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार)
पो.बो.सं. 1021, केरा भवन
कोची - 682 011, केरल, भारत
कार्यालय ईपीएबीएक्सः 2376265, 2376553, 2377266, 2377267

ग्राम्स : KERABOARD
फैक्स : 91 484 2377902
ई-मेल : kochi.cdb@gov.in, cdbkochi@gmail.com
वेबसाइट : www.coconutboard.gov.in

क्षेत्रीय कार्यालय

कर्नाटक
श्री इ. अरवाड़ी
प्रभारी निदेशक,
क्षेत्रीय कार्यालय सह प्रौद्योगिकी केन्द्र
नारियल विकास बोर्ड, हुलिमावु,
बन्नेरघट्टा रोड
बंगलुरु - 560076.
दू.भा. : 080-26593750, 26593743
फैक्स : 080-26594768
ई-मेल : coconut_dev@dataone.in
cdbroblr@gmail.com

असम
श्री लुम्हार ओबेद
निदेशक, क्षेत्रीय कार्यालय
नारियल विकास बोर्ड, उत्तर पूर्वी
राज्य कार्यालय/ प्रशिक्षण/प्रौद्योगिकी केन्द्र,
हाउसफेड काम्प्लेक्स, (छठा तल),
वायरलेस बसिष्ठा रोड, लास्ट गेट,
दिसपुर, गुवाहटी -781 006
दू.भा. : (0361) 2220632
फैक्स : 0361-2229794
ई-मेल : cdbassam@gmail.com

तमिलनाडु
श्री राजीव भूषण प्रसाद
निदेशक, क्षेत्रीय कार्यालय,
नारियल विकास बोर्ड
सं 47, एफ-1, डा. रामस्वामी शालइ,
के.के. नगर, चेन्नई-600 078
दूर भाष 044- 23662684
23663685
ई-मेल : cdbroc@gmail.com

बिहार
डा. अमिय देबनाथ
उप निदेशक,
किसान प्रशिक्षण केंद्र सह क्षेत्रीय कार्यालय
नारियल विकास बोर्ड, बीएमपी तालाब के सामने,
जगदेवपथ, फुलवारी रोड,
डाक-बिहार पशु चिकित्सा महाविद्यालय (बी.बी.सी.),
पटना-800014
दू.भा. : (0612) 2272742
फैक्स : 0612- 2272742
ई-मेल : cdbpatna@gmail.com

राज्य केन्द्र

अन्डमान व निकोबार द्वीप समूह
उप निदेशक नारियल विकास बोर्ड
मुख्य डाक कार्यालय के पास,
हाउस एम बी सं. 54, गुरुद्वारा लेइन,
पोर्ट ब्लेयर-744 101, दक्षिण अन्डमान
अन्डमान व निकोबार द्वीप समूह
दू.भा. : (03192)-233918
ई-मेल : cdban@rediffmail.com

महाराष्ट्र
उप निदेशक, राज्य केन्द्र, नारियल विकास बोर्ड
फ्लेट नं - 203, दूसरा तल, युकालिप्टस बिल्डिंग,
घोडबंदर रोड, ठाणे(वेस्ट)-400 610, महाराष्ट्र
दू.भा. : 022-65100106
ई-मेल : cdbthane@gmail.com

ओड़िशा
उप निदेशक, राज्य केन्द्र, नारियल विकास बोर्ड
पित्तापल्ली, कुमरबस्ता डाक
खुरदा जिला - 752 055, ओडिशा
दू.भा. : 06755-211505, 212505
ई-मेल : cdborissa@gmail.com

आंध्र प्रदेश
श्री आर. जयनाथ
सहायक निदेशक
राज्य केन्द्र, नारियल विकास बोर्ड, डो.नं.4-123, राजुला बाज़ार
रामवरप्पडु डाक, जिला परिषद हाइ स्कूल के पास
विजयवाड़ा-521108, कृष्णा जिला, आंध्र प्रदेश
टेलीफेक्स नं. 0866-2842323 / मोबाइलः 09866479650
ई-मेलः cdbvijap@gmail.com

पश्चिम बंगाल
श्री खोकन देबनाथ
उप निदेशक, राज्य केन्द्र,
नारियल विकास बोर्ड, बी.जे.-108-सेक्टर-11
साल्ट लेक, कोलकात्ता - 700 091
दू.भा. : (033) 23599674, फैक्स : 91 33-23599674
ई-मेल : cdbkolkata@gmail.com

बाज़ार विकास सह सूचना केन्द्र,दिल्ली
श्री वेदपाल सिंह
सहायक निदेशक, नारियल विकास बोर्ड
बाज़ार विकास सह सूचना केन्द्र,120,
हरगोविन्द एनक्लेव, दिल्ली- 110 092,
दू.भा.: 011-22377805, फैक्स : 011-22377806
ई-मेल : cdbmdic@gmail.com

क्षेत्र कार्यालय, तिरुवनंतपुरम
क्षेत्र कार्यालय, नारियल विकास बोर्ड,
एग्रिकल्चरल अर्बन होलसेल मार्केट
(वेल्ड मार्केट) आनयरा पी.ओ.
तिरुवनंतपुरम - 695 029
दूरभाष, फैक्स : 0471-2741006
ई-मेल : cdbtvm@yahoo.in

सी आई टी, आलुवा
श्री श्रीकुमार पोतुवाल
प्रसंस्करण इंजीनियर
नारियल विकास बोर्ड, प्रौद्योगिकी विकास केन्द्र, कीनपुरम,
दक्षिण वाषक्कुलम, आलुवा पिन-683105,
दूरभाष:0484 2679680,
ई-मेल : citaluva@gmail.com, cdbtdc@gmail.com

प्रदर्शन-सह-बीज उत्पादन फार्म

आंध्र प्रदेश
सहायक निदेशक, प्रदर्शन-सह-बीज उत्पादन फार्म
नारियल विकास बोर्ड, वेगिवाडा (गाँव) मकान संख्या 688,
तडिकलापुडी (द्वारा), पश्चिम गोदावरी (जिला),
आंध्र प्रदेश - 534 452, दू.भा. : (08812) 212359,
ई-मेल : dspfmvgda@gmail.com

असम
सहायक निदेशक, प्रदर्शन-सह-बीज उत्पादन फार्म
नारियल विकास बोर्ड, अभयपुरी, बोंगैगांव,
असम - 783 384, टेलि. फैक्स : (03664) 210025
ई-मेल : cdbdspabhayapuri@gmail.com

बिहार
सहायक निदेशक, प्रदर्शन-सह-बीज उत्पादन फार्म
नारियल विकास बोर्ड, सिंहेश्वर (डाक),
मधेपुरा जिला, बिहार - 852 128. दू.भा. : (06476) 283015.
ई-मेल : dspfms@gmail.com

कर्नाटक
सहायक निदेशक, प्रदर्शन-सह-बीज उत्पादन फार्म
नारियल विकास बोर्ड, पुरा गाँव, लोकसारा (डाक),
मंड्या जिला, कर्नाटक-571478 दू.भा.:(08232) 298015
ई-मेल:dspfarmmandya@gmail.com

केरल
सहायक निदेशक, प्रदर्शन-सह-बीज उत्पादन फार्म
नारियल विकास बोर्ड, नेर्यमंगलम, पिन - 686 693
दू.भा. : (0485) 2554240,
ई-मेल : cdbnrlm@gmail.com

छत्तीसगढ़
सहायक निदेशक, प्रदर्शन-सह-बीज उत्पादन फार्म
नारियल विकास बोर्ड, कोंडागाँव - 494 226, बस्तर जिला
दू.भा. : (07786) 242443, फैक्स : (07786) 242443
ई-मेल : cdbkgn1987@gmail.com

ओड़िशा
सहायक निदेशक, प्रदर्शन-सह-बीज उत्पादन फार्म
नारियल विकास बोर्ड, पित्तापल्ली,
कुमरबस्ता डाक, खुरदा जिला - 752055,
दू.भा. : (06755) 212505, (06755) 211505
ई-मेल : cdbdspfarmodisha@gmail.com

महाराष्ट्र
सहायक निदेशक , नारियल विकास बोर्ड, प्रबीउ फार्म,
पालघर, दापोली गाँव, सतपति डाक,
पालघर-401405, महाराष्ट्र, दू.भा.: 02525 256090
ई-मेल : dspfarmpalghar@gmail.com

तमिलनाडु
सहायक निदेशक, प्रबीउ फार्म,
नारियल विकास बोर्ड, धली, तिरुमूर्ति
नगर डाक, उदुमलपेट,
तमिलनाडु-642112, दू.भा.:(04252) 265430
ई-मेलः dspfarmdhali@gmail.com

त्रिपुरा
सहायक निदेशक, प्रबीउ फार्म,
नारियल विकास बोर्ड, हिच्चाचेरा,
सकबारी डाक, जोलाइबारी(मार्ग),
सबरूम, दक्षिण त्रिपुरा, त्रिपुरा-799141
दू.भा.: 038 23263059
ईमेल- dspfarmhichacharatripura@gmail.com

Regd/7-19817/89
भाग XXIX संख्या : 3

भारतीय नारियल पत्रिका

अक्तूबर - दिसंबर 2018
मूल्य : 10 रु.

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें:

नारियल विकास बोर्ड (कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय), भारत सरकार, केरा भवन
एसआरवी रोड कोची -682 011, भारत

ई मेल:kochi.cdb@gov.in, cdbkochi@gmail.com, वेब:www.coconutboard.nic.in दूरभाष: 0484-2376265, 2377266, 2377267